विदेह · साहित्यिक आलोचना-शृंखला

नित नवल

प्रभास कुमार चौधरी

पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक
विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह · २०२७

विदेह · साहित्यिक आलोचना-शृंखला

नित नवल

प्रभास कुमार चौधरी

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह • प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

नित नवल

प्रभास कुमार चौधरी

पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक
विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक
विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२७

प्रकाशन-विवरण

नित नवल प्रभास कुमार चौधरी

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

पाँच उपन्यासक समीक्षा / दू कथासंग्रहक समीक्षा

खण्ड एक · उपन्यास

१. अभिशप्त — 7
विस्तृत उपन्यास-समीक्षा

२. युगपुरुष — 17
विस्तृत उपन्यास-समीक्षा

३. हमरा लग रहब? — 33
विस्तृत उपन्यास-समीक्षा

४. नवारम्भ — 49
विस्तृत उपन्यास-समीक्षा

५. राजा पोखरिमे कतेक मछरी? — 67
विस्तृत उपन्यास-समीक्षा

खण्ड दू · कथासंग्रह

६. दिदवल — 85
विस्तृत कथासंग्रह-समीक्षा

७. कथा-प्रभास — 101
विस्तृत कथासंग्रह-समीक्षा

१. 'अभिशप्त' : शिक्षित मध्यवर्गक आत्मविरोध, दाम्पत्य-सत्ता आ सामाजिक नैतिकताक विखण्डन

प्रभास कुमार चौधरीक उपन्यासक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

सारांश

प्रभास कुमार चौधरीक 'अभिशप्त' आधुनिक मैथिली उपन्यासक ओहि यथार्थवादी धाराक उल्लेखनीय कृति अछि, जाहिमे सामाजिक विसंगति आ व्यक्तिक अन्तःसंघर्ष परस्परक व्याख्या करैत अछि। एहि उपन्यासक केन्द्रमे कोनो अलौकिक अभिशाप नहि, अपितु मनुष्यक स्वयं निर्मित मानसिक कारागार अछि। शिक्षित मध्यवर्गक आत्मसम्मान, प्रतिष्ठाबोध, दाम्पत्यक असमानता, पीढ़ीसभक बीच मूल्यगत दूरी, मित्रतामे स्वार्थ, कार्यालयी अव्यवस्था आ साहित्यिक सार्वजनिकताक खोखलापन एक-दोसरासँ जुड़ल देखाइत अछि। प्रकाश आ मीरा मध्यक सम्बन्ध विशेष महत्त्व रखैत अछि, कारण शिक्षाक उपलब्धि आ सामाजिक प्रतिष्ठा पारिवारिक लोकतन्त्रक गारंटी नहि बनैत। पत्नीकेँ लघु करबाक पुरुष-अहं अन्ततः पुरुषक स्वयं केर जीवनकेँ संकटग्रस्त करैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ कृतिक सामर्थ्य एकर प्रश्नाकुल सामाजिक पर्यवेक्षण, संवादक द्वन्द्वात्मकता आ पात्रक नैतिक आत्मभ्रमक अनावरणमे अछि। संगहि, पात्र-निर्माणक किछु स्थितिमे विचारक प्रत्यक्षता कलात्मक बहुअर्थिताकेँ सीमित करबाक आशंका उत्पन्न करैत अछि। प्रस्तुत समीक्षा पाठक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संरचनाक समीपस्थ अध्ययन करैत अछि, बाहरी आलोचनासँ संवाद स्थापित करैत अछि आ उपन्यासकेँ मैथिलीक आधुनिक गद्य-परम्पराक भीतर प्रतिष्ठित करैत अछि।

मुख्य शब्द : अभिशप्त, प्रभास कुमार चौधरी, मैथिली उपन्यास, मध्यवर्ग, मीरा, प्रकाश, स्त्री-स्वायत्तता, यथार्थवाद, सामाजिक व्यंग्य

१. प्रस्तावना : अभिशापक लौकिक अर्थ

'अभिशप्त' शीर्षकसँ पहिल दृष्टिमे नियतिक क्रूर आदेशक बोध होइत अछि। मुदा एहि उपन्यासक संसारमे अभिशाप ककरो बाहरी देवदण्ड नहि अछि। मनुष्य अपन स्वभाव, निर्णय, सम्बन्ध आ संस्थागत व्यवहारक कारणें जे दुःख अर्जित करैत अछि, ओही प्रक्रियाकेँ कथा धीरे-

धीरे स्पष्ट करैत अछि। एतय शीर्षक एकटा नैतिक प्रश्न थिक : पीड़ित के अछि, पीड़ाक जनक के अछि, आ दण्डकेँ अनिवार्य बना देनिहार सामाजिक व्यवस्था केहन अछि? एहन प्रश्नक उत्तर एक व्यक्ति पर दोष धरि नहि भेटत। प्रभास व्यक्तिक अन्तरतम आ सार्वजनिक जीवनक परस्पर निर्भरता देखैत छथि।

आधुनिक मैथिली गद्यक विकासमे सामाजिक सुधारवादी आग्रहक एक लम्बा इतिहास रहल अछि। तकर भीतर ई उपन्यास सुधारक घोषणापत्र बनबाक अपेक्षा दैनिक आचरणक उलझन पर नजरि रखैत अछि। जे लोक शिक्षित अछि से जरूरी नहि जे विवेकशीलो हो; जे लोक सार्वजनिक जीवनमे आदर्शक भाषा बजैत अछि से घरे अपन निकटतम सम्बन्धमे न्यायपूर्ण व्यवहार करैत हो, सेहो निश्चित नहि। एही फाँकमे ‘अभिशप्त’ अपन व्यंग्यात्मक आ करुण आलोचना निर्मित करैत अछि।

२. रचनात्मक सन्दर्भ आ मैथिली उपन्यासक परिवेश

प्रभास कुमार चौधरीक साहित्यिक व्यक्तित्व कथा आ उपन्यास दुनूमे परिचित अछि। हुनकर रचनाशीलता सामाजिक अनुभवकेँ रोचक प्रसंगमे बदलैत अछि, मुदा घटना-मात्रक आकर्षण पर निर्भर नहि रहैत। ‘प्रभास समग्र’क उपन्यास-खण्डमे ‘अभिशप्त’ पहिल कृतिक रूपमे राखल गेल अछि; तकर बाद ‘युगपुरुष’, ‘हमरा लग रहब?’, ‘नवारम्भ’ आ ‘राजा पोखरिमे कतेक मछरी?’ संकलित अछि। एहि क्रमसँ ‘अभिशप्त’केँ लेखकक उपन्यास-यात्राक आरम्भिक संवेदनशीलता बुझबाक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रवेशद्वार मानल जा सकैत अछि।

बीसम शताब्दीक उत्तरार्धमे समाजक शिक्षित तबकाक विस्तार, नौकरीक संस्थागत ढाँचा, शहरक बौद्धिक मंडली आ परिवारक भीतर बदलैत भूमिका-संबन्ध साहित्यक नव विषय बनल। ‘अभिशप्त’ एहि संक्रमणकेँ केवल बाहरी परिस्थिति नहि मानैत; ओकर प्रभाव पात्रक भाषा, आत्मछवि आ निर्णय-प्रक्रियामे जाँचैत अछि। एहि कारण ई उपन्यासक ‘मध्यवर्ग’ कोनो आर्थिक श्रेणीक साधारण नाम नहि; ई प्रतिष्ठा आ असुरक्षाक बीच जीबैत एकटा विशिष्ट मानसिक संसार अछि।

३. कथावस्तुक आधार : व्यक्तिगत संकटसँ सामाजिक संरचना धरि

उपन्यासक कथा-संसार अनेक पारस्परिक विरोधक सहारासँ विकसित होइत अछि। निजी जीवनमे पति-पत्नी बीच असन्तोष अछि; सामाजिक जीवनमे मित्रताक विश्वसनीयता प्रश्नांकित अछि; कार्यालयक व्यवहारमे कर्तव्य आ स्वार्थक टकराव अछि; साहित्यक क्षेत्रमे रचनात्मक ईमानदारी आ प्रतिष्ठा-प्रदर्शनक बीच दूरी अछि। एहि अलग-अलग क्षेत्रक संयोजन संयोग नहि, कृतिक मूल विचारक रचनात्मक विन्यास अछि। जे छल, प्रतिस्पर्धा आ अविश्वास सार्वजनिक संसारमे प्रकट होइत अछि, ओकर सूक्ष्म स्वरूप पारिवारिक जीवनमे सेहो प्रवेश करैत अछि।

प्रकाशक संघर्षक विशेष महत्त्व एहि लेल अछि जे ओकर जीवनक अभावक मात्र बाहरी कारण देखलासँ कथा अधूरी रहैत अछि। स्वयं कें केन्द्र मानबाक ओकर आग्रह, अपन पढ़ल-लिखल पत्नी मीरा प्रति हीनताबोध आ श्रेष्ठताक प्रदर्शन, तथा सम्बन्धकें सहभागिताक बदला अधिकारक दृष्टिसँ देखबाक प्रवृत्ति ओकर संकट कें गाढ़ करैत अछि। लेखक सामाजिक परिस्थितिक आलोचना करैत-करैत व्यक्ति कें उत्तरदायित्वसँ मुक्त नहि करैत छथि। एहि अर्थमे कथा नियतिवादक प्रतिरोध करैत अछि।

४. प्रकाश : शिक्षित अहंक आत्मपराजय

प्रकाशक चरित्रकें केवल नायक अथवा खलनायक कहि समेटब ओकर जटिलता घटायब होएत। ओ अपना कें जेना देखैत अछि आ ओकर व्यवहार दोसराक जीवनमे जतेक घाव बनबैत अछि, एहि दुनू छविक बीच दूरी कथाक सार्थक तनाव उत्पन्न करैत अछि। शिक्षाक संग अपेक्षित आत्मविवेक ओकर आत्म-सम्मानक कठोर रक्षाक कारणें विकसित नहि भऽ पबैत। ओकर नजरिमे सम्मान बाहरी मान्यता, पुरुष-प्रधानता आ आत्मछविक रक्षा सँ बन्हल देखाइत अछि। फलतः संवादक अवसर विवादमे बदलैत अछि।

प्रकाशक विडम्बना ई थिक जे अपन वर्चस्व सुनिश्चित करबाक प्रयत्न ओकर अपन असुरक्षाकें बारम्बार उजागर करैत अछि। जे व्यक्ति समान स्तरक संवादसँ डरैत अछि, ओ स्वयं कें प्रमाणित करबाक लेल सामनेवालाकें छोट बनाबय लगैत अछि। स्त्रीक शिक्षा वा विवेक तखन सहजीवनक समृद्धि नहि, पुरुष-अहं लेल चुनौती बनि जाइत अछि। एहि विघटनमे लेखक व्यक्तिक नैतिक कमजोरीकें सामाजिक संस्कारसँ जोड़ैत छथि। आलोचक लेल प्रश्न ई अछि जे

प्रकाशक जीवनक कठिनाईकेँ बुझब आ ओकर व्यवहारक आलोचना करब दुनू एक संग सम्भव अछि; कृतिक सफल पाठ एही द्वैत केँ सुरक्षित रखैत अछि।

५. मीरा : शिक्षा, आत्मसम्मान आ दाम्पत्यक असमान धरातल

मीरा शिक्षित स्त्रीक रूपमे कृतिक महत्त्वपूर्ण विवेक-बिन्दु छथि। हुनकर उपस्थिति ई सिद्ध करैत अछि जे परिवारक भीतर असमानता केवल निरक्षरता अथवा पुरान पीढ़ीक समस्या नहि। आधुनिक शिक्षा पाबि चुकल दम्पती सेहो परम्परागत अधिकार-बोधक जालमे फँसि सकैत अछि। मीरा केँ लघु करबाक प्रयत्न प्रकाशक दुर्बलता प्रकट करैत अछि, मीराक मानवीय मूल्य घटबैत नहि। एतय स्त्री-पात्रक प्रश्न व्यक्तिगत दुखक अतिरिक्त ज्ञान आ अधिकारक सम्बन्धसँ जुड़ैत अछि।

मीरा केँ पढ़ैत काल हुनका पुरुषक चरित्र-विकासक साधन मात्र बनाय देब उचित नहि। हुनकर शिक्षा, प्रतिक्रिया आ आत्मसम्मानक अपन अर्थ अछि। पत्नी केवल त्यागक प्रतीक होय, ई अपेक्षा कृतिक भीतर परीक्षण योग्य सामाजिक मान्यता बनैत अछि। एही दृष्टिसँ प्रकाश-मीरा सम्बन्धमे सद्भावक अभावक चर्चा सँ आगाँ बढ़ि दाम्पत्यक सत्तात्मक संरचना देखब आवश्यक अछि। सम्मानक बँटवारा असमान रहलासँ प्रेमक शब्द यथेष्ट नहि रहैत। एहि अर्थमे उपन्यासक स्त्री-सम्बन्धी प्रश्न समकालीन पाठमे विशेष प्रासंगिक अछि।

६. दाम्पत्य-सम्बन्ध : प्रेमक स्थानपर स्वामित्व

दाम्पत्य उपन्यासमे घरक निजी क्षेत्र भरि नहि अछि; ई समाजक नैतिकता परखबाक प्राथमिक प्रयोगभूमि थिक। समानता, स्नेह आ परस्परक स्वतन्त्र व्यक्तित्वक स्वीकृति जे सम्बन्धक आधार होबाक चाही, ओतय प्रतिष्ठा आ नियन्त्रणक आग्रह प्रवेश करैत अछि। परिणामस्वरूप संवाद ठहरि जाइत अछि आ अपराधबोधक स्थानपर आत्म-औचित्यक भाषा सक्रिय भऽ उठैत अछि। प्रेम केतबा अछि से प्रश्नसँ पहिने ई पूछब आवश्यक होइत अछि जे प्रेमक नामपर ककरा अपन इच्छा छोड़बाक अपेक्षा कएल जा रहल अछि।

प्रकाशक व्यवहार पाठककेँ एहि बिन्दुपर सोचबैत अछि जे अहं कोना सम्बन्धक साझा संसारकेँ एकपक्षीय विधानमे बदलि दैत अछि। मीरा केँ कमतर मानब केवल एक स्त्रीक अपमान नहि, शिक्षाक मानवीय मूल्यक सेहो निषेध अछि। उपन्यासक ‘अभिशाप’ एहि आत्मविरोधसँ

गहिराइ पबैत अछि : आत्मगौरव रक्षाक बहाने व्यक्ति ओहने आधार कैँ नष्ट करैत अछि, जाहिपर ओकर सुख टिकल रहि सकैत छल।

७. पीढ़ीगत विषमता आ बदलैत सामाजिक मूल्य

कृतिमे पीढ़ीसभक बीच वैषम्य एकटा उल्लेखनीय सामाजिक सूत्र अछि। आधुनिकता एकहि परिवारमे बराबर गतिसँ प्रवेश नहि करैत; जीवन-दृष्टि, व्यवहारक स्वीकार्य रूप, नैतिक अधिकारक अवधारणा आ स्त्री-पुरुष सम्बन्धक अपेक्षा विभिन्न आयु-समूहमे भिन्न रहि सकैत अछि। पुरान मूल्य अनिवार्य रूपें निर्दोष नहि, आ नवीन मूल्य स्वतः मुक्ति-दायक नहि। लेखक एहि तनावकेँ पात्रक आचरणमे रखैत छथि।

पीढ़ीगत टकरावकेँ केवल बूढ़ बनाम युवकक संघर्ष मानब सीमित दृष्टि होएत। अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे अधिकार आ उत्तरदायित्वक भाषा पीढ़ी बदललाक बादो बदलैत अछि वा नहि। आधुनिक व्यवसाय, शिक्षा आ नागर व्यवहारक अपनाइतो यदि व्यक्ति परिवारमे संवादक समानता स्वीकार नहि करैत अछि तऽ नव समय पुरान असमानताकेँ नब रूपमे चलबैत रहैत अछि। एतय ‘अभिशप्त’ प्रगतिक सहज कल्पनाक जाँच करैत अछि।

८. मित्रता, स्वार्थ आ सामाजिक विश्वसनीयता

दू मित्रक सम्बन्धक कृत्रिमताक आलोचनात्मक चर्चा एहि उपन्यासक सामाजिक व्याप्ति बढ़बैत अछि। मित्रता सामान्यतः स्वेच्छा, विश्वास आ परस्पर सहयोगक सम्बन्ध मानल जाइत अछि; मुदा मध्यवर्गीय प्रतिस्पर्धा ओकरा सुविधा, प्रतिष्ठा अथवा स्वार्थक साधनमे रूपान्तरित कऽ सकैत अछि। एहन रूपान्तरण पाठककेँ देखबैत अछि जे सम्बन्धक बाहरी नाम सुरक्षित रहितो ओकर अन्तर्वस्तु नष्ट भऽ सकैत अछि।

दाम्पत्य आ मित्रताक प्रसंग एक दोसराक प्रतिरूप बनि उठैत अछि। दुनूमे शब्द आ व्यवहारक दूरी महत्त्वपूर्ण अछि। जे व्यक्ति अपन निकटतम सम्बन्धमे विश्वसनीय नहि रहि पबैत अछि, ओकर सामाजिक सज्जनताक दावा प्रश्नवाचक बनैत अछि। कथा सार्वजनिक छविक आलोचना लेल निजी सम्बन्धक कठोर कसौटी प्रस्तुत करैत अछि।

९. कार्यालयी संस्कृति : अनुशासनक विघटन आ संस्थागत नैतिकता

कार्यालयी अनुशासनहीनताक चित्रण कथा केँ घरक सीमा सँ बाहर अनैत अछि। संस्थाक काज केवल नियमक लिखित व्यवस्था पर नहि, व्यवहारमे न्याय, उत्तरदायित्व आ विश्वासपर सेहो निर्भर करैत अछि। स्वार्थ, पक्षपात, टालमटोल आ प्रतिष्ठा-चिन्ताक दबावमे कर्तव्य ओझराइत अछि तऽ संस्था व्यक्ति केर दुर्बलताक विस्तार बनि जाइत अछि। एहि कार्यालयी प्रसंग सभक अर्थ तखन अधिक खुलैत अछि जखन हम देखैत छी जे कथाक व्यक्ति घरे आ बाहर अलग-अलग नैतिक मनुष्य नहि बनि जाइत।

उपन्यास ई संकेत करैत अछि जे आधुनिक नौकरशाहीक भीतर शिक्षा आ पद प्राप्त करब नैतिक परिपक्वताक प्रमाण नहि। कार्यालयक औपचारिक वाणी आ व्यवहारक वास्तविक प्रवृत्ति बीच दूरी सामाजिक व्यंग्यक सामग्री बनैत अछि। व्यक्ति-विशेषक दोष तऽ अछि, मुदा तकर संग व्यवस्था ओकरा प्रोत्साहन दैत अछि अथवा रोकेबाक क्षमता रखैत अछि—ई प्रश्न सेहो आवश्यक बनैत अछि। एहि बिन्दुपर कथा व्यक्तिगत आलोचनासँ संस्थागत आलोचनाक ओर बढ़ैत अछि।

१०. साहित्यिक जगतक आडम्बर : आत्मालोचनाक दुर्लभ साहस

‘अभिशप्त’क उल्लेखनीय विशेषता साहित्यिक क्षेत्रमे व्याप्त आडम्बर पर दृष्टि पड़ब अछि। साहित्यक संसारकेँ आम तौरपर सांस्कृतिक नैतिकताक सुरक्षित स्थल मानल जाइत अछि; लेखक एहि सहज विश्वासकेँ चुनौती दैत छथि। पद, प्रतिष्ठा, प्रशंसा आ जन-प्रदर्शनक लालसा रचनात्मक श्रमक मूल्यांकनकेँ दूषित कऽ सकैत अछि। साहित्य पर चर्चा करनिहार व्यक्ति साहित्यिक ईमानदारीक उदाहरण अवश्य होयत, एहन निश्चित नहि।

एहि व्यंग्यक महत्त्व केवल मनोरञ्जनमे नहि। ई लेखकक अपन क्षेत्र पर आलोचनात्मक नजरिक प्रमाण अछि। घरक पुरुष-अहं, मित्रताक स्वार्थ आ साहित्यिक प्रतिष्ठाक प्रदर्शन वस्तुतः एक व्यापक संरचनाक भिन्न रूप अछि : अपने छविक सुरक्षाक लेल दोसराक अस्तित्व वा सत्यकेँ गौण मानब। साहित्यक नामपर चलैत आडम्बर एहि कारण कृतिक केन्द्रीय विषयसँ अलग प्रसंग नहि, ओकर विस्तार अछि।

११. व्यंग्य, विडम्बना आ करुणाक संयुक्त स्वर

प्रभासक कथा-भाषामे सामाजिक विसंगतिक बोध करुणा आ कटाक्ष दुनू रूपमे प्रकट होइत अछि। केवल उपहास करला सँ पात्रक अन्तरवेदना गुम भऽ जाइत; केवल सहानुभूति रखला सँ ओकर अन्यायपूर्ण व्यवहार पर आलोचनात्मक दृष्टि कमजोर पड़ैत। उपन्यास एहि दुनू माँगक बीच चलैत अछि। पाठक पात्रक आत्मभ्रम पर मुस्कुरा सकैत छथि, मुदा ओहि भ्रमक परिणाम जखन दाम्पत्य आ सामाजिक सम्बन्धमे दुःख बनैत अछि तखन हास्यक जगह बेचैनी लैत अछि।

शीर्षकक विडम्बना विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि। ‘अभिशप्त’ कहल गेल व्यक्ति निरीह शिकार नहि, बहुत अवसर पर अपन दुःखक निर्माणमे सहभागी अछि। एतेक गम्भीर नैतिक उलझन यथार्थवादी उपन्यासक मर्म खोलैत अछि : आदमीक परिस्थिति ओकर क्रियाकेँ प्रभावित करैत अछि, मुदा क्रिया सेहो परिस्थिति केँ पुनः बदलैत अछि। एहि परस्पर सम्बन्धक कारण उपन्यासक नैतिक बोध एकरेखा आरोपसँ अधिक जटिल बनि जाइत अछि।

१२. संवादप्रधान विन्यास आ कथात्मक दृष्टिकोण

उपन्यासक अनेक अनुच्छेद संवाद आ तत्कालिक प्रतिक्रिया सँ आगाँ बढ़ैत अछि। एहि संरचनामे कथावाचक पात्रक सम्पूर्ण मनस्थिति एकहि बार पाठकक सोझाँ नहि राखि प्रत्येक उत्तर, प्रतिवाद आ मौनक बीच अर्थ बनबय दैत अछि। पाठक केवल घटना नहि देखैत, घटना पर पात्रसभक व्याख्या सेहो सुनैत अछि। एहि बहुस्तरीयतासँ निजी विवादक सामाजिक अर्थ उभरैत अछि।

मुदा संवादप्रधान कथा सँ एक खतरा सेहो जुड़ल अछि : पात्र यदि विचारक तैयार प्रतिनिधि बनि जाइत अछि तऽ जीवनक अनिश्चितता घटि सकैत अछि। ‘अभिशप्त’क सफल अंश ओ अछि, जतय पात्रक कथन ओकरा स्वयं सँ भिन्न प्रकाशमे रखैत अछि; ओकर भावी विकल्प निश्चित नहि भऽ जाइत, अपितु प्रश्न बनि रहैत अछि। आलोचनात्मक मूल्यांकनमे संवादक प्रवाहक संग एकर अर्थगत खुलापन सेहो देखबाक चाही।

१३. कथाभाषा, सामाजिक रजिस्टर आ गद्यक गति

प्रभासक मैथिली कथाभाषा सामाजिक सम्पर्कक व्यावहारिकता सँ ऊर्जा लैत अछि। घरक व्यवहार, निकट सम्बन्धक सम्बोधन, कार्यालयक औपचारिकता आ साहित्यिक मंडलीक आत्मप्रदर्शन—एहि क्षेत्रसभमे भाषिक मुद्रा बदलैत अछि। एहि भिन्नताक कारण पात्र मात्र नाम आ घटनाक सहारे नहि, अपन बोलबाक ढंगसँ सेहो पहिचान पबैत छथि।

संवादक आवृत्ति गद्यक गति कें तेज करैत अछि आ वाद-विवादक दबाव बनबैत अछि। तथापि वर्णनक छोट-छोट अन्तराल मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ स्पष्ट करैत अछि। सामाजिक उपन्यासक लेल एहि गति-सन्तुलनक महत्त्व अछि, कारण अत्यधिक व्याख्या कथा कें तर्क-प्रबन्ध बना सकैत अछि आ अत्यधिक घटना समाजक विश्लेषणकेँ सतही कऽ सकैत अछि। ‘अभिशप्त’क संरचनामे प्रसंग, बहस आ टिप्पणीक आवर्तन एही सन्तुलनक निरन्तर प्रयत्नक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

१४. बाह्य आलोचनाक संग संवाद

मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय अध्ययन करैत डॉ. अरुण कुमार झा ‘अभिशप्त’केँ यथार्थवादी कृति मानि सामाजिक समस्याक बहुविध चित्रण पर बल दैत छथि। ओ डॉ. दुर्गानाथ झा ‘श्रीश’क आलोचनात्मक मतक सहारासँ पीढ़ीगत असन्तुलन, मित्रताक कृत्रिमता, दाम्पत्यक व्यक्तिवादी तनाव, कार्यालयक अनुशासनहीनता आ साहित्यिक आडम्बरक उल्लेख करैत छथि। एहि सूचीकेँ केवल विषयसूची नहि, एक साझा नैतिक संरचनाक विभिन्न रूप मानला सँ उपन्यासक एकसूत्रता अधिक स्पष्ट होइत अछि।

एहि आलोचनात्मक परम्परासँ सहमति रखितो एकटा विस्तार आवश्यक अछि। प्रकाशक विफलता कें केवल व्यक्तिगत अहंकारक दोष कहला सँ पितृसत्तात्मक संस्कारक भूमिका ओझराइ सकैत अछि। तें मीरा प्रति ओकर व्यवहारक विवेचनमे पुरुष-अधिकारक सामाजिक प्रशिक्षणकेँ सेहो महत्त्व देबाक चाही। तकर विपरीत, सभ दोष ‘व्यवस्था’ पर धरला सँ प्रकाशक स्वयं केर विकल्प आ नैतिक उत्तरदायित्व मेटाइत अछि। संतुलित समीक्षा एहि दुनू पक्षक प्रतिपक्षी नहि, परस्पर-सम्पूरक अध्ययन करैत अछि।

१५. यथार्थवादक उपलब्धि आ कलात्मक सीमा

उपन्यासक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि एकान्त व्यक्तिगत दूषणकेँ व्यापक सामाजिक रोगक संकेत बनायब अछि। लेखक सहज उदाहरणसँ देखबैत छथि जे पारिवारिक असमानता, मित्रताक स्वार्थ, कार्यालयक छल आ साहित्यिक घमंड अलग-अलग समस्याक नाम होइतहुँ सामूहिक नैतिक विघटनक लक्षण अछि। एहि कारण कथाक अनेक प्रसंग एकटा साझा अनुभूतिक ओर केन्द्रित होइत अछि : आधुनिकताक बाह्य चिह्न पाबल समाज भीतर सँ कतेक आधुनिक बनल?

एही संग यथार्थवादी लेखनक सीमा पहचानब आवश्यक अछि। सामाजिक दोषक पहचान स्पष्ट होएबाक कारण कखनो नैतिक निष्कर्ष अनुमानित बनि सकैत अछि। पाठक यदि पहिनहि बुझि जाइत छथि जे कुन आचरण अनुचित अछि, तऽ कथा केँ केवल ओही ज्ञानक पुष्टि करबाक जोखिम रहैत अछि। गम्भीर साहित्यक अर्को दायित्व पात्रक अन्तर्विरोधकेँ एहन रूपमे रखब अछि, जाहिसँ पाठकक अपन निश्चय सेहो बदलए। ‘अभिशप्त’मे एहि अधिक जटिल पाठकानुभूतिक सम्भावना सर्वाधिक तखन देखाइत अछि जखन हम दोषक भाषा सँ आगाँ बढ़ि दुःखक सामाजिक निर्माणक प्रक्रिया देखैत छी।

१६. समकालीन प्रासंगिकता : शिक्षासँ अधिक आवश्यक सम्बन्धक लोकतन्त्र

एहि उपन्यासक सामाजिक प्रश्न अपन मूल समय धरि सीमित नहि रहल अछि। शिक्षा आ रोजगारक अवसर बढ़लाक बादो यदि पति-पत्नी एक-दोसराकेँ बराबर निर्णयकारी मनुष्य नहि मानैत छथि, तऽ आधुनिकताक दावा अधूरा अछि। कार्यस्थल पर नियमक विस्तार भेलाक बादो यदि पदक अहं आ निजी स्वार्थ प्रधान अछि, तऽ संस्थागत संस्कृति कमजोर बनैत अछि। सामाजिक माध्यम अथवा साहित्यिक मंच बदलि गेलाक बादो यदि प्रशंसाक व्यापार रचनात्मक मूल्यक स्थान लैत अछि, तऽ आडम्बरक रूप परिवर्तित मात्र भेल अछि।

एहि तरहेँ ‘अभिशप्त’ पढ़ब समकालीन पाठक लेल अपन निजी व्यवहारक परीक्षा अछि। प्रश्न ई नहि जे हम कोन पात्रसँ असहमत छी; प्रश्न ई अछि जे हमरा अपन दैनिक सम्बन्धमे प्रकाशक आत्मभ्रमक केहन सूक्ष्म रूप भेटैत अछि। साहित्यक स्थायित्व एहि असुविधाजनक प्रश्न करबाक क्षमतामे निहित रहैत अछि।

१७. निष्कर्ष : अभिशाप नहि, आत्मसमीक्षाक आह्वान

'अभिशप्त'क महत्त्व आधुनिक मैथिली उपन्यासक यथार्थवादी विस्तारमे अछि। प्रभास कुमार चौधरी दाम्पत्यक तनावकेँ समाजक आन क्षेत्रसँ काटि नहि रखैत छथि। प्रकाश-मीरा सम्बन्ध पाठककेँ लैंगिक सत्ता आ आत्मसम्मानक प्रश्न धरि पहुँचबैत अछि; पीढ़ीगत असन्तुलन परिवर्तित मूल्यक अधूरापन देखबैत अछि; मित्रता आ कार्यालयक प्रसंग सार्वजनिक आचरणक अविश्वसनीयता प्रकट करैत अछि; साहित्यिक आडम्बर रचनाकारक आत्मालोचनात्मक साहसक उदाहरण बनैत अछि।

उपन्यासक शीर्षक अन्ततः प्रतिरोधक सन्देश सेहो दैत अछि। जँ अभिशाप मनुष्य स्वयं अपन अहं, स्वार्थ आ अन्यायसँ रचैत अछि, तँ ओकरासँ बाहर निकलबाक सम्भावना सेहो मानवीय निर्णयमे निहित रहैत अछि। प्रभासक आलोचनात्मक यथार्थवाद एहि सम्भावनाकेँ सजग करैत अछि। एकर साहित्यिक मूल्य पाठककेँ तैयार नैतिक उत्तर देबामे नहि, अपन शिक्षित सभ्यताक भीतर व्याप्त असमानता आ छलकेँ पहचानबाक कठिन दायित्व सौंपबामे अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

चौधरी, प्रभास कुमार। 'अभिशप्त'। प्रभास समग्र (उपन्यास)। सम्पादक डॉ. वन्दना चौधरी। पिंडारुछ, दरभंगा : ज्योत्स्ना प्रकाशन, २०१७।

झा, अरुण कुमार। मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन। पुणे : कृपा-दृष्टि पब्लिकेशन्स, २०२६। https://books.kdpublications.in/index.php/kdp/catalog/download/262/256/3056

झा, दुर्गानाथ 'श्रीश'। मैथिली साहित्यक इतिहास। (एहि ग्रन्थक उपन्यास-संबन्धी विवेचनक उल्लेख अरुण कुमार झाक उपर्युक्त अध्ययनमे उपलब्ध अछि।)

'प्रभासोत्सव' पर साहित्यिक समागम—देश भरि सँ जुटला दिग्गज साहित्यकार। मैथिली जिन्दाबाद, २३ फरवरी २०१७। https://maithilijindabaad.com/?p=7696

'मैथिली उपन्यासकार प्रभास चौधरीक स्मृति समारोह।' मैथिली जिन्दाबाद, फरवरी २०१७। https://maithilijindabaad.com/?p=7693

२. ‘युगपुरुष’ : मिथ्या महिमामण्डन, सामाजिक शोषण आ युगबोधक विडम्बनात्मक आख्यान

प्रभास कुमार चौधरीक उपन्यासक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

सारांश

प्रभास कुमार चौधरीक ‘युगपुरुष’ आधुनिक मैथिली उपन्यासमे सामाजिक यथार्थक ओहन प्रस्तुति अछि, जाहिमे व्यक्तिक जीवनक असंगति धीरे-धीरे सामूहिक राजनीतिक संस्कृतिक प्रश्न बनि उठैत अछि। बनारसक रहस्यपूर्ण आरम्भिक परिवेश, शंकरक जिज्ञासु बाल्य-अनुभव, ओकर अधिकारबोधक क्रमिक शिथिलता, करुणेश, रोजी, रमन आ आनन्द आदि पात्रक विविध सम्बन्ध, चम्पा आ शोभासँ सम्बद्ध प्रेम-प्रसंग तथा निर्धनता आ शोषणक मारि सहैत रत्नाक स्थिति एहि रचनाक प्रमुख अध्ययन-बिन्दु अछि। शीर्षक ‘युगपुरुष’ महापुरुषत्वक सीधी स्तुति नहि, बरु एहन सार्वजनिक समाजक जाँच बनैत अछि, जाहिमे प्रसिद्धि, सामाजिक उपयोगिता आ नैतिक पात्रताक बीच सम्बन्ध अस्थिर भऽ गेल अछि। रत्नाक निरीहता, ओकर परिवेशक हिंस्र दबाव आ प्रतिरोधक अपूर्णता एकटा कठिन प्रश्न उपस्थित करैत अछि : सामाजिक पीड़ित व्यक्तिक राजनीतिक महत्त्व कोन प्रक्रियासँ बनैत अछि, आ तकर महिमामण्डनमे ककर स्वार्थ अन्तर्निहित रहैत अछि? समीक्षामे एहि उपन्यासक कथावस्तु, चरित्र-विकास, सामाजिक वर्ग-सम्बन्ध, स्त्री-प्रतिनिधित्व, संवाद-विन्यास, व्यंग्य तथा अन्तर्निहित कलात्मक सीमाक परीक्षण कएल गेल अछि। पूर्ववर्ती मैथिली आलोचनासँ संवाद करैत ई निष्कर्ष निकसैत अछि जे कृतिक मूल उपलब्धि ‘महान’ व्यक्तिक खोज नहि, अपितु महानताक सामाजिक निर्माणक विरोधाभासकेँ दृश्य बनायब अछि।

मुख्य शब्द : युगपुरुष, प्रभास कुमार चौधरी, रत्ना, शंकर, मैथिली उपन्यास, सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक व्यंग्य, वर्गीय शोषण, चरित्र-निर्माण, युगबोध

१. प्रस्तावना : ‘युगपुरुष’ शब्दक आलोचनात्मक अर्थ

‘युगपुरुष’ शब्द भारतीय भाषासाहित्यक परम्परामे प्रायः एहन असाधारण व्यक्तिक संकेत दैत अछि, जे अपन समयक विवेक, संघर्ष वा परिवर्तनक प्रतिनिधि मानल जाइत अछि। एहन

नामक उपन्याससँ पाठक वीरता, त्याग अथवा इतिहास-निर्माणक आदर्शवादी जीवनक अपेक्षा कऽ सकैत छथि। प्रभास कुमार चौधरी एहि अपेक्षाकेँ सरल रूपमे पूरा नहि करैत छथि। कथामे जे लोक सोझाँ अबैत छथि, ओ सभ अपूर्ण, परिस्थितिग्रस्त, इच्छाक द्वन्द्वमे फँसल आ कखनो-कखनो अपन अधिकार आ उत्तरदायित्वक प्रश्नपर उदासीन मनुष्य छथि। एही कारण शीर्षक अपन सर्वाधिक अर्थ उलटबाँसीमे प्राप्त करैत अछि।

एहि रचनाकेँ पढ़ैत समय पहिल प्रश्न 'ककरा युगपुरुष कहल गेल?' होइत अछि, मुदा गहन प्रश्न अछि 'ककरा आ कोन परिस्थिति मे समाज युगपुरुष बना दैत अछि?' व्यक्तिक महत्त्व आ सार्वजनिक प्रतिष्ठाक बीचक एहि दूरीकेँ उपन्यास सामाजिक शोषण, अवसर, नैतिकता, सम्बन्ध आ सामूहिक स्मृतिक माध्यमसँ परखैत अछि। ई व्यंग्य सतही उपहास नहि, राजनीतिक पहचान बनबाक सामाजिक प्रक्रियाक आलोचना थिक।

२. रचनाकार आ कृतिक ऐतिहासिक-साहित्यिक सन्दर्भ

प्रभास कुमार चौधरी आधुनिक मैथिली कथा-गद्यक प्रतिनिधि रचनाकार छथि। हुनकर उपन्याससभमे समाजक प्रत्यक्ष जीवन, व्यक्ति आ संस्थाक तनाव तथा सार्वजनिक नैतिकताक विघटन विविध रूपमे उभरैत अछि। 'अभिशप्त'मे शिक्षित मध्यवर्गीय पारिवारिक सम्बन्धक तनाव अधिक स्पष्ट अछि; 'युगपुरुष'मे सामाजिक परिधि विस्तृत भऽ शोषण, राजनीतिक प्रतिष्ठा आ विविध वर्गीय स्थितिक प्रश्न सोझाँ अबैत अछि। लेखकक कृतित्वकेँ एकहि समस्याक पुनरावृत्ति मानबाक बदला सामाजिक अनुभवक विस्तृत पड़तालक रूपमे देखब उचित अछि।

'प्रभास समग्र'क उपन्यास-खण्डक सम्पादन डॉ. वन्दना चौधरी कएने छथि। एहि संकलनमे पाँच उपन्यास अलग-अलग रचनाक रूपमे उपस्थित अछि। एहि कारण 'युगपुरुष'क आलोचनाक आधार ओकर अपन कथागत साक्ष्य रहबाक चाही; लेखकक प्रसिद्धि वा अन्य पुस्तकक पुरस्कार ओकर साहित्यिक मूल्यांकनक विकल्प नहि बनि सकैत। परवर्ती संकलन पाठ-संरक्षणक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपक्रम अछि; कृतिक आलोचनात्मक मूल्यांकनक आधार ओकर कथावस्तु, पात्र-विन्यास आ सामाजिक दृष्टि अछि।

३. बनारसक आरम्भ : रहस्य, जिज्ञासा आ विश्वदृष्टिक निर्माण

उपन्यासक आरम्भ बनारसक रहस्यपूर्ण परिवेशसँ जुड़ैत अछि। बनारसक सांस्कृतिक अर्थ अनेक स्तर पर कार्य करैत अछि : परम्परागत ज्ञान आ धार्मिक प्रतिष्ठा, नगरजीवनक विविध सामाजिक सम्पर्क, तथा बाहरी आध्यात्मिक आभाक भीतर व्यक्तिक निजी संशय। 'युगपुरुष'क प्रारम्भमे एहि नगरक उपस्थिति आरम्भिक अनुभवकेँ गम्भीरता दैत अछि, कारण पात्रक जगत् पहिनहि क्षणसँ सरल आ एकार्थी नहि देखाइत। यथार्थ ज्ञात करबाक जिज्ञासा आ दृश्य संसारक अस्पष्टता एक संग उपस्थित होइत अछि।

एहि प्रारम्भक आलोचनात्मक महत्त्व विशेष अछि। यदि कथा केवल राजनीतिक विडम्बनापर केन्द्रित होइत, तँ प्रारम्भसँ सामाजिक घोषणाक भाषा सक्रिय रहि सकैत छल। मुदा रहस्य आ जिज्ञासाक संयोजन पाठककेँ पात्रक दृष्टिसँ जगत् पहिचानबाक अवसर दैत अछि। एहि सँ कथा निजी अनुभवक भूगोल खोलि सार्वजनिक व्यवस्था धरि पहुँचबाक संरचना पाबैत अछि। तथापि नगरक 'रहस्य'केँ समूचा बनारसक कोनो निरपेक्ष सत्य नहि, कथा द्वारा निर्मित वातावरणक कलात्मक गुण मानबाक चाही।

४. शंकर : ज्ञानक आकांक्षा आ अधिकारबोधक क्षरण

शंकरक आरम्भिक रूप जिज्ञासाक रूप अछि। ओ सुनल, देखल आ बताओल गेल तथ्यसभक अर्थ बुझय चाहैत अछि। बाल्य-अनुभवक एहि प्रश्नाकुलतामे उपन्यास आधुनिक व्यक्तिक निर्माणक एकटा मूल क्षण देखबैत अछि : बच्चा अपन दुनिया कँ मानि लेबाक बदला ओकर औचित्य बुझबाक अभिलाषा रखैत अछि। शंकरक शैशवक तुलना अज्ञेयक 'शेखर : एक जीवनी'क शेखरसँ कएल गेल अछि; एहिसँ दुनू कृतिक कथात्मक प्रयोजन समान सिद्ध नहि होइत, मुदा जिज्ञासा आ सामाजिक निषेधक सम्बन्ध पर विचारक उपयोगी अवसर अवश्य खुलैत अछि।

शंकरक चरित्रक एकटा कठिन मोड़ अधिकारक प्रति ओकर उदासीनता अछि। जिज्ञासु चेतनाक अधिकार-सजगतामे रूपान्तरण स्वाभाविक होबाक चाही, मुदा कथा एहन सहज प्रगतिक भरोसा तोड़ैत अछि। मनुष्य संसारक विसंगति देखैतहुँ ओकर विरोधमे संगठित भूमिका नहि ग्रहण करय, ई वास्तविक सामाजिक संकट अछि। लेखकक दृष्टिमे व्यक्ति आ परिस्थितिक टकराव सर्वदा वीरतामे परिणत नहि होइत। शंकरक ई परिवर्तन साहित्यिक उपलब्धि सेहो बनि

सकैत अछि, जँ पाठक ओकर भीतरी कारणकेँ महसूस करय; आ कलात्मक प्रश्न सेहो बनैत अछि, जँ परिवर्तनक मनोवैज्ञानिक सूत्र पर्याप्त विकसित नहि देखाए।

५. कथाक केन्द्रक सरकन : शंकरसँ रत्ना धरि

'युगपुरुष'क कथाविन्यासकेँ एकरेखीय नायक-कथा मानलासँ एकर वास्तविक रूप पकड़मे नहि अबैत। शंकरक आरम्भिक जिज्ञासा कथा लेल प्रवेशद्वार खोलैत अछि, मुदा उपन्यासक समग्र सामाजिक आलोचना रत्नाक नियति दिश अधिक तीक्ष्ण रूपमे केन्द्रित होइत अछि। शंकर, करुणेश, रोजी, रमन, आनन्द आ अन्य पात्रसभ अपन-अपन प्रसंग लऽ कथा विस्तार करैत छथि। एहन विन्यास व्यक्तिक जीवनकेँ समाजक बहुस्तरीय नेटवर्कमे रखबाक अवसर दैत अछि।

आलोचनामे कथाक एहि सरकनकेँ दू तरहेँ पढ़ल जा सकैत अछि। पहिल दृष्टि एकरा रचनात्मक विसरण कहत : पाठकक प्रारम्भिक केन्द्र भंग होइत अछि आ पात्रसभ अप्रत्याशित दिशा लैत छथि। दोसर दृष्टि एकरा सोद्देश्य बहुकेन्द्रीयता मानत : राजनीतिक यथार्थक सत्य एक व्यक्ति मात्रमे सीमित नहि रहि सकैत। एहि दुनू सम्भावनाक बीच कृतिक मूल्यांकन करब आवश्यक अछि। 'युगपुरुष'क रूपात्मक तनाव एहि द्वैधतासँ अलग नहि।

६. रत्ना : निर्धनता, सामाजिक पराधीनता आ महिमामण्डनक प्रश्न

रत्ना उपन्यासक सामाजिक-राजनीतिक अर्थ खोलबाक प्रमुख पात्र अछि। ओकर स्थिति ग्राम्य परिवेशक आर्थिक अभाव, सामाजिक असुरक्षा आ शोषणसँ जुड़ल अछि। निर्धनता एहि ठाम कोनो अमूर्त पृष्ठभूमि नहि; ओकर कारण व्यक्तिक विकल्प सीमित होइत अछि, नैतिक आचरण पर बाहरी दबाव पड़ैत अछि, आ सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करबाक मार्ग सेहो असमान भऽ जाइत अछि। 'व्यक्ति कोन निर्णय लेलक?' एहि प्रश्नक संग 'ओकरा समक्ष कोन विकल्प उपलब्ध छल?'—ई दोसर प्रश्न जोड़ल जाएब जरूरी अछि।

रत्नाक माध्यमसँ कृति पीड़ित व्यक्ति आ तथाकथित युगपुरुषक विरोधाभास उजागर करैत अछि। जे पात्र अपन परिवेशक उत्पीड़नसँ मुक्त नहि भऽ सकैत, ओ सार्वजनिक महत्त्वक पदवीसँ कोना जुड़ैत अछि? यदि 'महानता'क निर्णय समाजक भीतर चलैत शक्ति-व्यवस्थासँ प्रभावित अछि, तँ ओ फैसला न्यायपूर्ण होयब आवश्यक नहि। शीर्षकक व्यंग्य रत्नाक

व्यक्तिगत उपहास नहि, एहन सामाजिक परिस्थितिक आलोचना थिक जतय असमानता अपनहि प्रतिनिधि गढ़ैत अछि आ फेर ओकर प्रतीकात्मक उपयोग करैत अछि।

७. प्रतिरोधक अभाव : नैतिक दोष वा संरचनात्मक विवशता?

रत्नाक सन्दर्भमे आलोचनात्मक परम्परा एकटा प्रश्न उठबैत अछि : परिवेश पहिचानलाक बादो ओ प्रतिरोधमे स्पष्ट रूपसँ कियैक नहि ठाढ़ भऽ सकल? प्रश्न सार्थक अछि, मुदा ओकर उत्तर देबाक क्रममे पीड़ित व्यक्तिकेँ स्वयं अपन उत्पीड़नक जिम्मेवार ठहराय देब गम्भीर चूक होएत। शोषण केवल अन्याय करनिहार एकटा व्यक्तिक काज नहि; ओकर आधार धन, सम्बन्ध, सामुदायिक प्रतिष्ठा, संसाधनक असमान पहुँच आ संस्थागत संरक्षणमे रहि सकैत अछि।

प्रतिरोध लेल केवल अन्याय-बोध पर्याप्त नहि। शिक्षा, सहारा, सुरक्षा, सामूहिकता आ प्रतिकूल परिणाम सहबाक क्षमता सेहो आवश्यक अछि। एहि दृष्टिसँ रत्नाक मौन अथवा निष्क्रियतामे एक व्यापक सामाजिक विफलताक संकेत देखल जा सकैत अछि। लेखक जँ प्रतिरोधक अनुपस्थितिक परिणाम उजागर करैत छथि, तँ आलोचकक कर्तव्य ओकर सामाजिक कारण सेहो विश्लेषित करब थिक। उपन्यासक राजनीतिक अर्थ तखन अधिक व्यापक बनैत अछि, जखन पीड़ित मनुष्यक गरिमा आ सामाजिक विवशता दुनू एक संग पढ़ल जाए।

८. वर्गीय सम्बन्ध : ग्राम्य निर्धनता आ सत्ता-वितरण

‘युगपुरुष’मे ग्रामीण निर्धनताक उल्लेख मात्र सहानुभूतिक वातावरण निर्मित नहि करैत; ओ पात्रक सामाजिक गतिशीलता आ संकटक कारण-शृंखला सँ जुड़ल अछि। अभावग्रस्त व्यक्तिक आचरणक मूल्यांकन आ सम्पन्न व्यक्तिक आचरणक मूल्यांकन समाज समान मानदण्डसँ नहि करैत। जाहि क्रियाकेँ एक वर्ग प्रतिष्ठाक स्वाभाविक साधन मानैत अछि, दोसरा वर्ग लेल ओ अपमान अथवा अपराधक आधार बनि सकैत अछि। उपन्यास एहि असमान नैतिक व्यवस्था केँ परोक्ष रूपमे प्रश्नांकित करैत अछि।

धर्म, वर्ग आ स्थानीय सामाजिक स्थिति रत्नाक चरित्रकेँ एकहि प्रकारक कठिनाईमे नहि, अनेक परतबला दबावमे रखैत अछि। एहि दबावकेँ विश्लेषित करैत समय वर्गीय शोषणक अर्थ केवल धनक अभाव नहि बुझबाक चाही। संसाधनक नियन्त्रण, सामाजिक आश्रयक आवश्यकता, प्रतिष्ठाक भय आ सार्वजनिक आवाजक असमान अधिकार—एहि सभ तत्वक

संयुक्त प्रभाव व्यक्तिक जीवननिर्णय पर पड़ैत अछि। एही कारण उपन्यासक वर्गीय प्रश्न निजी सदाचारसँ आगाँ बढ़ि सामाजिक संरचनाक आलोचना बनैत अछि।

९. महापुरुष-निर्माणक राजनीति : प्रतिष्ठा आ नैतिक पात्रताक दूरी

शीर्षकक सर्वाधिक धार राजनीतिक प्रतिष्ठाक निर्माण पर अछि। सार्वजनिक जीवनमे व्यक्ति ‘युगपुरुष’ कखनो अपन कर्मक कारण बनैत अछि, मुदा कखनो प्रचार, समूहगत स्वार्थ, परिस्थितिजन्य लोकप्रियता अथवा भ्रमक कारणो महिमामण्डित भऽ सकैत अछि। प्रभासक उपन्यास एहि भेदकेँ जिज्ञासाक विषय बनबैत अछि। पात्रसभक निजी सीमा आ सामाजिक पहचानक बीच विरोध रहैत अछि, तेँ महानताक घोषणा स्वतः प्रमाणित नहि मानल जा सकैत।

ई आलोचना कोनो विशेष दल वा एकटा ज्ञात ऐतिहासिक नेताक गुप्त जीवनक संकेत मानबाक आधार नहि दैत। उपन्यास प्रत्यक्ष दलगत घटनाक इतिहास नहि लिखैत, राजनीतिक संस्कृतिक नैतिक स्वरूपक पड़ताल करैत अछि। एतय ‘राजनीतिक’क अर्थ पद आ चुनाव मात्र नहि; सार्वजनिक प्रतिष्ठा ककरा भेटैत अछि, ककर आवाज सुना जाइत अछि, आ ककर अनुभवकेँ कथा-नायकत्व प्रदान कएल जाइत अछि—एहि प्रश्नसभसँ अछि।

१०. करुणेश, रमन आ आनन्द : बहुचरित्रीय संसारक प्रयोजन

करुणेश, रमन आ आनन्द सन पात्रक उपस्थिति कथाकेँ एक व्यक्ति केन्द्रित दृष्टिसँ बचबैत अछि। प्रत्येक पात्रक जीवनानुभव समान सामाजिक सत्यकेँ अलग कोणसँ प्रकाशमे अनैत अछि। ई भिन्नता उपन्यासक संसारमे संयोगक प्रवाह तथा विकल्पक अनिश्चितता बनबैत अछि। चरित्रसभक नाम गनायब मात्र पर्याप्त नहि; महत्त्व ई देखब थिक जे एक पात्रक क्रिया, विचार अथवा प्रतिक्रिया दोसराक स्थिति पर कोन अर्थात्मक दबाव बनबैत अछि।

एहि बहुपात्रीयता सँ कथा व्यापक सामाजिक प्रस्तुति अर्जित करैत अछि, मुदा ओहीक संग पात्रक अन्तरंग विकासक लेल उपलब्ध स्थान सीमित होबाक खतरा सेहो उत्पन्न होइत अछि। आलोचक एहि दोहरी स्थितिकेँ एकतरफा सफलताक प्रमाण नहि मानि रचनात्मक सौदा रूपेँ देखबाक चाही। उपन्यास एक पात्रक गहन अन्तर्मन आ एक समाजक विस्तृत मानचित्र—दुनूकेँ एक संक्षिप्त आख्यानमे समायोजित करबाक प्रयास करैत अछि।

११. रोजी : स्त्रीक व्यक्तित्व आ नैतिक निर्णयक पूर्वाग्रह

रोजी उपन्यासक स्त्री-प्रतिनिधित्वक विमर्शमे एक आवश्यक नाम अछि। पूर्ववर्ती आलोचनामे हुनकर प्रसंगकेँ चरित्रहीनताक कोटिमे राखि विचार कएल गेल अछि। मुदा आधुनिक साहित्यिक समीक्षामे एहन नैतिक उपाधि स्वयं परीक्षणक विषय बनैत अछि। जे आचरण लेल स्त्रीक कठोर सामाजिक निन्दा होइत अछि, ओहि सन्दर्भमे पुरुषक आचरणक जाँच कोन मानदण्डसँ होइत अछि? कथावाचकक दृष्टि, पुरुष-पात्रक निर्णय आ पाठकक आलोचनात्मक मूल्यांकन—ई तीनू समान बात नहि अछि।

रोजी केँ निष्क्रिय नैतिक प्रतीक बनाय देलासँ हुनकर मानवीय जटिलता ओझराइत अछि। स्त्रीक इच्छा, सामाजिक बाध्यता, सम्मानक राजनीति आ चरित्रपर समाजक फैसला बीचक तनाव कृतिक गम्भीर स्त्रीवादी पुनर्पाठक आधार दैत अछि। एहन पुनर्पाठ कथाक चित्रणकेँ नकारैत नहि; ओकर भीतर काम करैत मूल्य-निर्णयक भाषा केँ प्रश्नांकित करैत अछि। स्त्री सम्बन्धी आलोचनाक वास्तविक गुणवत्ता एहि विवेकमे निहित अछि जे पात्रक क्रिया आ पितृसत्तात्मक समाज द्वारा ओकर वर्गीकरणकेँ अलग-अलग पहचानल जाए।

१२. चम्पा आ शोभा : प्रेम, सामाजिक अर्थ आ सम्बन्धक विविधता

चम्पा आ शोभासँ जुड़ल प्रेम-प्रसंग उपन्यासक तनावपूर्ण सामाजिक संसारमे एक अन्य भावात्मक धरातल खोलैत अछि। प्रेम एहि कृतिमे सार्वजनिक शोषणक कथा सँ बिलकुल पृथक मनोरञ्जन नहि बनैत; ई व्यक्ति केँ सामाजिक भूमिकासँ इतर इच्छाशील मनुष्यक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि। सम्बन्धक कोमलता आ बाहरी सामाजिक दबावक बीच अन्तर्विरोध पाठकक समक्ष खुलैत अछि।

प्रेमक प्रसंगक मूल्यांकन करैत समय भावनात्मक मधुरताकेँ स्त्री-स्वायत्तताक पर्याप्त प्रमाण मानल नहि जा सकैत। पात्र अपन जीवनसँ सम्बन्धित निर्णय कतबा स्वतन्त्रतासँ कऽ पबैत छथि? प्रेम समाजक वर्गीय अथवा प्रतिष्ठागत सीमाकेँ चुनौती दैत अछि वा अन्ततः ओही सीमा भीतर समायोजित भऽ जाइत अछि? चम्पा आ शोभाक सन्दर्भसँ एहि प्रश्नसभक सम्भावना उठैत अछि। एकर योगदान कथा केँ निर्जीव राजनीतिक तर्क सँ बचाय व्यक्तिगत जीवनक आकांक्षा जोड़ब अछि।

१३. निजी इच्छा आ सार्वजनिक सत्ता : एकहि संकटकेँ दू रूप

'युगपुरुष'क राजनीतिक आलोचना बुझबाक लेल प्रेम, नैतिकता आ सामाजिक स्वार्थक प्रसंग सभकेँ परस्पर जोड़ि देखब आवश्यक अछि। सार्वजनिक प्रतिष्ठाक निर्माण आ निजी सम्बन्धक भीतर सम्मानक वितरण—दुनू स्थितिमे सत्ता सक्रिय होइत अछि। घरमे जे लोक दोसराक निर्णय नियन्त्रण करैत अछि, ओ सार्वजनिक मंचपर स्वयं कें उदार अथवा नैतिक कहि प्रस्तुत कऽ सकैत अछि। एहन द्वैध व्यवहार यथार्थवादी उपन्यासक शक्तिशाली विषय बनैत अछि।

अतः एहि रचनाक राजनीतिकता संसद वा शासनक प्रत्यक्ष चित्रणमे नहि, अपितु दैनिक सम्बन्धमे संसाधन, विश्वास, निर्णय आ प्रतिष्ठाक असमान नियन्त्रणमे निहित अछि। सामाजिक व्यंग्य तखन अधिक गहिर होइत अछि जखन महानताक भाषा अपनहि आसपासक सम्बन्धक अन्याय ढाँकय लगैत अछि।

१४. शीर्षकक विडम्बना आ कथ्यक आलोचनात्मक उलटफेर

शीर्षक पाठककेँ एक उन्नत नायकक प्रतीक्षा करबैत अछि, मुदा कथाक मनुष्य अपूर्ण, अस्थिर आ विवश छथि। एहि विसंगतिसँ 'युगपुरुष'क अर्थ व्यंग्यात्मक होइत अछि। महानताक उपाधि जतेक ऊँच अछि, ओकर सामाजिक आधारक प्रश्न ओतेक असुविधाजनक अछि। व्यक्ति केँ समाज किन अर्थमे महत्त्वपूर्ण घोषित करैत अछि? जे लोक अपन जीवनक शोषणसँ मुक्त नहि भऽ पाओल, ओकर प्रतीकात्मक महत्त्वक घोषणा के करैत अछि? एहि प्रश्नसभमे उपन्यासक नैतिक ऊर्जा केन्द्रित अछि।

रत्ना एतय अतिशय महत्त्वपूर्ण बनैत अछि, कारण ओकर अनुभव महानताक भाषाक नकारात्मक प्रतिबिम्ब बनि उठैत अछि। यदि समाज अपन अन्याय बदलबाक बदला पीड़ित व्यक्तिक छवि प्रयोग करैत अछि, तऽ 'युगपुरुष' ओ व्यवस्था द्वारा बनाओल व्यंग्य थिक। उपन्यास एहि सम्भावनाकेँ पाठकक विवेकक सम्मुख रखैत अछि।

१५. चरित्र-विकासक अप्रत्याशित मोड़ : जीवनक सत्य कि शिल्पगत दुर्बलता?

पूर्ववर्ती आलोचनामे बनारसक आरम्भिक खण्डक बाद पात्रसभक व्यवहार अप्रत्याशित रूपसँ बदलय लगबाक बात उठाओल गेल अछि। एहि आलोचनाकेँ गम्भीरतासँ लेब आवश्यक अछि। सामाजिक उपन्यासमे अनपेक्षित मोड़ अस्वाभाविक नहि; मनुष्यक निर्णय अनेक दबावसँ बदलैत अछि। मुदा बदलावक कलात्मक विश्वसनीयता लेल मनोवैज्ञानिक अथवा सामाजिक आधार पाठकक अनुभवमे स्थापित होबाक चाही।

यदि शंकरक प्रश्नाकुलता अधिकारक प्रति उदासीनतामे परिणत होइत अछि, तँ एहि परिवर्तनक कारण कथा कतेक स्पष्ट करैत अछि—ई मूल्यांकनक वैध कसौटी अछि। तथापि कोनो पात्र लेखकक बनाओल पूर्वनिर्धारित नायक-पथ पर नहि चलैत, एतेक मात्रसँ शिल्पगत विफलता सिद्ध नहि होइत। यथार्थवादी आख्यानक एकटा शक्ति अपेक्षाक उल्लंघन सेहो अछि। समस्या 'अप्रत्याशितता' नहि, ओकर कथात्मक औचित्य अछि। एहि सूक्ष्म भेदकेँ सुरक्षित राखि उपन्यासक उपलब्धि आ सीमा दुनूक निर्णय करब उचित होएत।

१६. संवाद, कथावाचक आ कथा-गतिक विन्यास

उपन्यासमे संवादक भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि। पात्रसभक प्रत्यक्ष कथनसँ पाठक सामाजिक सम्बन्धक तनाव अनुभव करैत अछि; कथावाचकक टिप्पणी आ वर्णन ओहि कथनसभक अर्थक पृष्ठभूमि उपलब्ध करबैत अछि। संवाद जँ केवल सूचना देबाक साधन होइत तँ कथा एकरेखा होएत; मुदा प्रश्न, प्रत्युत्तर आ भावात्मक आवेगक माध्यमसँ ई चरित्रक स्थितिक अनिश्चितता प्रकट करैत अछि।

कथाक आरम्भिक जिज्ञासा, मध्य भागक अनेक सम्बन्ध तथा अन्तक व्यंग्यात्मक सघनता एकहि गति नहि रखैत अछि। पाठकक ध्यान एक केन्द्रसँ दोसर केन्द्र दिस जाइत अछि। ई रूप बहुचरित्रीय सामाजिक उपन्यासक स्वाभाविक गुण सेहो अछि आ कथानकक विखण्डनक जोखिम सेहो। कृतिक आलोचनामे 'कतेक घटना भेल?'सँ अधिक 'घटनासभकेँ जोड़निहार अर्थात्मक सम्बन्ध कतेक प्रभावी अछि?'—ई प्रश्न निर्णायक अछि।

१७. भाषा आ मैथिली सामाजिक यथार्थक अनुभव

प्रभासक गद्यक एक विशिष्ट गुण सामाजिक जीवनसँ संवाद करबाक तत्परता अछि। भाषाक आत्मीयता आ व्यावहारिकता कथाक पात्रसभकेँ समकालीन परिवेशक अङ्ग बनबैत अछि। बनारसक नगर-संस्कृति, ग्राम्य निर्धनताक परिस्थिति, व्यक्ति-व्यक्ति बीच बोलचाल आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रदर्शन—एहि सबक बीच भाषिक व्यवहार बदलैत अछि। उपन्यासक अर्थ बुझबामे कथनक स्वर, सम्बोधनक सम्बन्ध आ व्यवहारक अंतराल महत्वपूर्ण अछि।

साहित्यिक भाषा केवल लोकभाषाक अनुकरण नहि; ओ अनुभवलोककेँ रूप दैत अछि। पात्र जखन अपना केँ न्यायोचित ठहरबैत अछि, तखन ओकर शब्दक छनोट सेहो विचारधाराक काम करैत अछि। पदवी, सम्मान, नैतिकता आ 'युगपुरुष' सन उच्चार्थी शब्दक प्रयोग अपन सामाजिक दबाव लऽ अबैत अछि। भाषाक एहि मूल्यगत रूपकेँ देखला सँ शीर्षक आ संवादक बीच अन्तर्सम्बन्ध अधिक स्पष्ट होइत अछि।

१८. यथार्थवाद : बाहरी घटनाक वर्णनसँ गहिर सामाजिक कारण-दृष्टि

'युगपुरुष'केँ यथार्थवादी उपन्यास कहबाक आधार केवल एतेक नहि जे पात्र काल्पनिक संसारमे रहितो सामान्य जीवनसँ परिचित लगैत छथि। अधिक महत्त्वपूर्ण ई अछि जे व्यक्तिक निर्णय आ सामाजिक परिस्थिति एक-दोसराकेँ प्रभावित करैत अछि। निर्धनता, सामाजिक प्रतिष्ठा, अधिकार-संकट आ सार्वजनिक महिमामण्डन कथानकक कारण-सूत्र बनैत अछि। एहि कारण यथार्थवाद अनुभवक प्रतिलिपि नहि, अनुभवक सम्बन्धसभक आलोचनात्मक पुनर्संयोजन थिक।

एहि दृष्टिसँ उपन्यासक राजनीतिकता परोक्ष अछि, मुदा महत्त्वहीन नहि। प्रत्यक्ष घोषणापत्रक अभावमे सेहो कथा समाजक प्रभुत्वशाली मूल्यसभक आलोचना करि सकैत अछि। शीर्षकक विडम्बना आ पात्रक जीवनक असुरक्षा एहि अप्रत्यक्ष आलोचनाक प्रधान माध्यम अछि।

१९. मनोवैज्ञानिकता आ सामाजिक व्याख्याक सम्बन्ध

शंकरक जिज्ञासा, ओकर बादक व्यवहार, रत्नाक असहायता आ आन पात्रक सम्बन्धक द्वन्द्व केवल बाहरी समाजक तथ्य नहि; ओकर भीतर मनुष्यक चाहना, भय, आत्म-औचित्य आ

संकोच काम करैत अछि। सामाजिक दृष्टि आ मनोवैज्ञानिक दृष्टि कैँ विरोधी मानला सँ उपन्यासक आधा अर्थ छुटि जाइत अछि। जखन व्यवस्था मनुष्यक विकल्प संकुचित करैत अछि, तखन मनोविज्ञान स्वयं सामाजिक इतिहासक प्रभाव क्षेत्र बनैत अछि।

मुदा मानसिक स्थितिक उल्लेख मात्रसँ चरित्रक सम्पूर्ण विवेचन नहि होइत। पात्रक निर्णयक क्रम, ओकर अप्रत्याशित परिवर्तनक संकेत आ दोसराक प्रतिक्रिया पाठककैँ कारणक अनुमान करबाक अवसर देबाक चाही। शंकरक चरित्र-विकास पर आलोचनात्मक संदेह एही प्रसंगमे प्रासंगिक अछि। एहि संदेहकैँ रचनाक नकार मात्र नहि, उपन्यासक मनोवैज्ञानिक संरचना अधिक सूक्ष्मतासँ पढ़बाक आग्रह मानब फलदायी अछि।

२०. अज्ञेयक ‘शेखर : एक जीवनी’सँ तुलनाक सीमा

शंकरक बाल्य-जिज्ञासाक तुलना अज्ञेयक ‘शेखर : एक जीवनी’क शेखरसँ कएल गेल अछि। ई संकेत आलोचनामे उपयोगी अछि, कारण प्रश्न करबाक बाल-अभिलाषा, पारम्परिक निषेधसँ टकराव आ स्वतन्त्र चेतनाक निर्माण आधुनिक भारतीय उपन्यासक महत्त्वपूर्ण समस्यासभ थिक। मुदा शैशवक एक-दू गुणक समानतासँ दू कृतिक सम्पूर्ण शिल्प वा वैचारिक अभिप्राय एक सन मानि लेब उचित नहि।

अज्ञेयक शेखरक आन्तरिक आत्मपरीक्षा तथा प्रभासक शंकरक बहुपात्रीय सामाजिक संसारमे भूमिका—एहि दुनू कैँ तुलनात्मक अध्ययनमे अलग-अलग देखबाक चाही। ‘युगपुरुष’ धीरे-धीरे एक व्यक्तिक आत्मजिज्ञासासँ व्यापक सामाजिक विडम्बनाक दिशा ग्रहण करैत अछि। एहि मोड़मे हुनकर मूल भिन्नता स्थित अछि। तुलनाक सार्थकता साम्यक घोषणा नहि, साम्यक बाद उभरैत अन्तरक विश्लेषणमे अछि।

२१. पूर्ववर्ती आलोचनाक मूल्यांकन

डॉ. अरुण कुमार झा ‘मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन’मे ‘युगपुरुष’कैँ वर्तमान व्यवस्थाक आलोचना करनिहार यथार्थवादी उपन्यासक रूपमे देखैत छथि। ओ बनारसक आरम्भिक वातावरण, शंकरक जिज्ञासु शैशव, कथा-चरित्रक अप्रत्याशित परिवर्तन तथा रत्नाक निर्धनताजन्य शोषण पर ध्यान आकर्षित करैत छथि। हुनकर विश्लेषणमे डॉ. प्रभावती झाक एहन मतक उल्लेख अछि जाहिसँ उपन्यासक सामाजिक विरोधाभासक अनावरणक महत्त्व स्पष्ट

होइत अछि। एहि आलोचनात्मक परम्पराक मूल योगदान राजनीतिक सत्यकेँ नायकक निजी गुणक बदला समाजक अन्तर्विरोधमे खोजब थिक।

तथापि एहि परम्पराक भीतर किछु निर्णयक पुनर्विचार जरूरी अछि। शंकरक बदलबैत व्यवहारकेँ लेखकक नियन्त्रण समाप्त होयबक सीधा प्रमाण मानब पर्याप्त नहि; एकरा पात्रक ऐतिहासिक अनिश्चितताक प्रतिफल सेहो मानल जा सकैत अछि। रत्नाक प्रतिरोध-अभावकेँ केवल दुर्बलता कहब शोषणक संरचनात्मक पराधीनताकेँ कम आँकब होएत। रोजीक सम्बन्धमे नैतिक उपाधि देब स्त्री-पात्रक स्वायत्त आलोचनात्मक पाठ केँ बन्द कऽ सकैत अछि। एहिसँ पूर्ववर्ती आलोचनाक मूल्य घटैत नहि, ओकरा नव दृष्टिसँ विस्तार देबाक अवसर भेटैत अछि।

२२. ‘अभिशप्त’ आ ‘युगपुरुष’ : लेखकक सामाजिक दृष्टिक विस्तार

‘अभिशप्त’ आ ‘युगपुरुष’केँ संग पढ़लासँ प्रभासक रचनात्मक दृष्टिक एक निरन्तरता आ एक परिवर्तन दुनू सोझाँ अबैत अछि। पहिल उपन्यासमे प्रकाश आ मीराक दाम्पत्यक माध्यमसँ शिक्षित मध्यवर्गक आत्मविरोध आ निजी जीवनक पितृसत्तात्मक असमानता प्रमुख बनैत अछि। दोसर उपन्यासमे शंकरक प्रश्नाकुलता, रत्नाक शोषण आ सार्वजनिक महानताक प्रश्न सामाजिक दृष्टिक व्याप्ति बढ़बैत अछि।

दुनू कृतिक साझा सरोकार व्यक्ति आ ओकर बाह्य नैतिक दावाक बीच दूरी अछि। ‘अभिशप्त’मे अभिशापक स्रोत जीवनक भीतर निर्मित होइत अछि; ‘युगपुरुष’मे महानताक उपाधि व्यक्तिक वास्तविक अवस्थासँ टकराइत अछि। पहिल शीर्षक पीड़ाक कारण पूछैत अछि, दोसर प्रतिष्ठाक प्रामाणिकता। एहि समानान्तर पाठसँ लेखकक व्यंग्यक सामाजिक लक्ष्य अधिक स्पष्ट होइत अछि, मुदा एतेक मात्रसँ दुनू उपन्यासक स्वतन्त्र कथा-संरचना विलीन नहि होइत।

२३. कृतिक प्रमुख उपलब्धि : ‘महानता’क प्रश्नकेँ जनजीवनक कसौटी पर राखब

‘युगपुरुष’क प्रमुख उपलब्धि सार्वजनिक महिमामण्डनक मोह भंग करब अछि। कथा व्यक्ति केँ ओकर सामाजिक परिवेशसँ पृथक महान घोषित नहि करैत; महानताक दावाकेँ आर्थिक अभाव, विकल्पक संकीर्णता, सम्बन्धक असमानता आ नैतिक विरोधाभासक कठोर कसौटी पर रखैत अछि। एहि कारण कृति व्यक्तिगत जीवनचित्रसँ व्यापक युग-समालोचना बनबाक सामर्थ्य अर्जित करैत अछि।

रत्ना सन पात्रक मार्मिकता एकर नैतिक केन्द्र अछि। जे समाज अवसर आ गरिमाक बराबर बँटवारा नहि करैत, ओही समाजमे असाधारणता आ प्रतिष्ठाक घोषणा कतेक विडम्बनापूर्ण बनैत अछि, ई प्रश्न पाठककेँ असहज बनबैत अछि। असहजता एतय उपन्यासक दुर्बलता नहि, ओकर आलोचनात्मक सफलता अछि।

२४. कलात्मक सीमा : विखण्डन, नैतिक रूढ़ि आ पात्रक मनोवैज्ञानिक निरन्तरता

प्रभासक उपन्यासक आलोचनात्मक परीक्षणमे प्रशंसाक संग सीमा-निर्धारण आवश्यक अछि। बनारसक रहस्यमय आरम्भसँ अनेक पात्रक विविध घटनाक्रम धरि कथा विस्तार होइत काल एकसूत्रता बनौने राखब चुनौतीपूर्ण अछि। शंकरक अधिकारबोधक प्रश्न आ ओकर परवर्ती उदासीनताक बीच यदि पर्याप्त मनोवैज्ञानिक सेतु नहि उभरैत, तँ चरित्रक विश्वसनीयता प्रभावित होइत अछि। एहि शंकाकेँ पूर्ण अस्वीकृति नहि, निकट पाठनक कठिन कसौटी मानबाक चाही।

एहि संग स्त्रीक आचरण पर परम्परागत नैतिक फैसला थोपबाक प्रवृत्ति, जँ कथाक मूल्य-व्यवस्थामे सक्रिय भऽ उठैत अछि, तँ सामाजिक आलोचनाक व्यापकता संकुचित होइत अछि। राजनीतिक अन्याय देखनिहार दृष्टि केँ लैंगिक अन्यायक प्रति सेहो समान संवेदनशील होबाक चाही। रत्नाक पीड़ित अवस्थाक व्याख्यामे वर्गीय कारण आ निजी विकल्पक सम्बन्ध स्पष्ट करब सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। आलोचना एहि प्रश्नसभक माध्यमसँ कृतिक उपलब्धि केँ निरस्त नहि करैत, ओकर सौन्दर्यात्मक मानदण्ड गहिर करैत अछि।

२५. समकालीन पाठ : नायक-पूजासँ सामाजिक उत्तरदायित्व धरि

समाजमे नेतृत्व, लोकप्रियता आ नैतिक विश्वसनीयता सदैव एक रूपमे उपस्थित नहि होइत। ‘युगपुरुष’ एहि विच्छेदक साहित्यिक रूपान्तर अछि। आजुक पाठक लेल एहि उपन्यासक प्रश्न केवल अतीतक राजनीतिक संस्कृति बुझब नहि; ई जाँचब सेहो अछि जे व्यक्तिगत पीड़ाक समाजक सामूहिक अनुभवमे कोन स्थान अछि, प्रतिष्ठाक घोषणा कोन आधारपर होइत अछि आ आलोचनात्मक जिज्ञासा कियैक धीरे-धीरे निष्क्रिय स्वीकृतिमे बदलि सकैत अछि।

शंकरक जिज्ञासा आ रत्नाक विवशताक बीचक दूरी आजुक सामाजिक चेतनाक कठिन समस्या बनैत अछि। सच देखबाक इच्छा पर्याप्त नहि, प्रतिरोध लेल सामूहिक आधार आवश्यक

अछि। ताहि लेल उपन्यासक ‘युगपुरुष’ प्रश्न अंततः महापुरुषक महिमा सँ अधिक समाजक जिम्मेदारीक प्रश्न होइत अछि।

२६. उपसंहार : युगपुरुषक छवि आ युगक वास्तविक मनुष्य

प्रभास कुमार चौधरीक ‘युगपुरुष’ आधुनिक मैथिली सामाजिक उपन्यासक ओहि परम्परामे महत्त्व रखैत अछि, जे व्यक्तिक कथा कहैत-कहैत समयक व्यवस्था पर प्रश्न उठबैत अछि। बनारसक आरम्भिक रहस्य, शंकरक तथ्य-जिज्ञासा, ओकर अधिकारबोधक अस्पष्ट यात्रा, करुणेश-रमन-आनन्दक विविध सामाजिक उपस्थिति, रोजी तथा चम्पा-शोभाक सम्बन्धक प्रसंग आ रत्नाक निर्धनताजन्य पराधीनता मिलि एकटा अस्थिर सामाजिक मानचित्र बनबैत अछि।

ई मानचित्र सरल नायक-निर्माणक विरुद्ध अछि। रत्नाक स्थिति याद दिअबैत अछि जे शोषित व्यक्ति कैँ सार्वजनिक प्रतीक बनाय देलासँ ओकर वास्तविक मुक्ति सुनिश्चित नहि होइत। शंकरक परिवर्तन कहैत अछि जे जिज्ञासासँ चेतना आ चेतनासँ सामाजिक कार्यवाही धरि पहुँचनाइ अनिवार्य प्रगति नहि। प्रेमक प्रसंग सामाजिक सम्बन्धक मानवीय जटिलता खोलैत अछि आ राजनीति सँ सम्बन्धित विडम्बना महानताक सार्वजनिक घोषणाकेँ कसौटी पर रखैत अछि।

उपन्यासक सीमा त्यतिकेँ अछि जतिकेँ एक बहुकेन्द्रीय, तीक्ष्ण सामाजिक आशयवला कृतिमे रहि सकैत अछि : पात्रक अप्रत्याशित गति, मनोवैज्ञानिक निरन्तरताक समस्या तथा किछु नैतिक वर्गीकरणक संकीर्णता। मुदा एहि सीमाक बीच एकर निर्णायक साहित्यिक योगदान अक्षुण्ण रहैत अछि। ‘युगपुरुष’ वास्तविक महानताक माप एक व्यक्तिक प्रतिष्ठामे नहि, सामाजिक न्याय, आत्मविवेक आ विवश मनुष्यक गरिमामे खोजबाक आग्रह करैत अछि। एहि अर्थमे ई उपन्यास एक युगपुरुषक चरित मात्र नहि, अपन युगक मूल्य-व्यवस्थापर चलैत गम्भीर प्रश्नोत्तर अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

चौधरी, प्रभास कुमार। ‘युगपुरुष’। प्रभास समग्र : उपन्यास। सम्पा. डॉ. वन्दना चौधरी। दरभंगा : ज्योत्सना प्रकाशन, २०१७।

झा, अरुण कुमार। मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन। पुणे : कृपा-दृष्टि पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण। ISBN 978-81-19149-27-8।

अज्ञेय, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन। शेखर : एक जीवनी।

मैथिल मंच। ‘बाबूजीक पुस्तकालय : मैथिली उपन्यास’ (प्रभास समग्रक प्रकाशकीय विवरण)। https://www.maithilmanch.in/babujeekpustakalaya/maithili-upanyas/

मैथिली जिन्दाबाद। ‘प्रभासोत्सव पर साहित्यिक समागम—देश भरि सँ जुटला दिग्गज साहित्यकार।’ २३ फरवरी २०१७। https://maithilijindabaad.com/?p=7696

विदेह—प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका। ‘प्रभास कुमार चौधरी : साहित्यिक परिचय।’ https://videha-ejournal.github.io/videha/ratna.htm

३. ‘हमरा लग रहब?’ : सामन्ती सत्ता, स्त्री-अस्तित्व आ प्रणवक नैतिक निष्क्रियताक समाजशास्त्रीय आख्यान

प्रभास कुमार चौधरीक उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

प्रभास कुमार चौधरीक ‘हमरा लग रहब?’ मैथिली उपन्यासक ओहि यथार्थवादी प्रवृत्तिक प्रतिनिधि कृति अछि, जाहिमे व्यक्तिक जीवन सामाजिक सत्ता, वर्गीय विषमता आ लैंगिक शोषणक अनेक अन्तर्विरोधसँ निर्मित होइत अछि। एहि उपन्यासक केन्द्रमे प्रणव अछि, मुदा ओ पारम्परिक अर्थमे विजयी अथवा निष्कलंक नायक नहि। सामन्ती संस्कृतिक चिह्न देखैत, अपन निकटवर्ती लोकक पीड़ासँ परिचित होइतहुँ ओकर नैतिक प्रतिक्रिया आ सामाजिक आचरणक बीच दूरी बनल रहैत अछि। कल्लू चौधरीक सामन्ती उपस्थिति, मुनेसरक पराधीन स्थिति, राजनीतिक संरक्षणक छत्रछायामे मधुक जीवन, मामा-मामीक परिवेश तथा शीलाक जटिल व्यक्तित्व उपन्यासमे शोषणक अनेक आयाम खोलैत अछि। प्रेम, घृणा, प्रतिशोध, आत्मबलिदान, स्वाभिमान आ आकर्षण एक-दोसरासँ गुँथल देखाइत अछि। कृतिक द्विखण्डीय विन्यास, संवादप्रधान कथन, समय-संकेत आ बहुपात्रीय संसार सामाजिक अनुभूतिक व्यापकता दैत अछि। शीर्षकक प्रश्नवाचकता निकटता आ आश्रयक कामना मात्र नहि, एहि आश्रयक भीतर उपस्थित सत्ता तथा अनिश्चितताकेँ सेहो उजागर करैत अछि। ई समीक्षा कृतिक सामाजिक-ऐतिहासिक अर्थ, पात्र-निर्माण, स्त्री-पात्रक स्वायत्तता, मनोवैज्ञानिक कलात्मकता, नैतिक द्वन्द्व आ पूर्ववर्ती आलोचनाक सीमासभक विवेचन करैत अछि। एकर मुख्य निष्कर्ष ई अछि जे उपन्यास शोषणक प्रत्यक्षदर्शी होयब आ ओकर प्रतिरोध करबक बीचक दूरीकेँ पाठकीय आत्मपरीक्षाक विषय बनबैत अछि।

मुख्य शब्द : हमरा लग रहब?, प्रभास कुमार चौधरी, मैथिली उपन्यास, प्रणव, शीला, सामन्तवाद, लैंगिक शोषण, मनोवैज्ञानिक यथार्थ, राजनीतिक संरक्षण, सामाजिक चेतना

१. प्रस्तावना : शीर्षकमे उपस्थित प्रश्न

'हमरा लग रहब?'—एहि लघु प्रश्नमे आकर्षण आ असुरक्षाक दूटा भिन्न स्वर एक संग सुनाइत अछि। 'लग' स्थानसूचक होयबाक संग सम्बन्धसूचक सेहो अछि। ककरो लग रहबाक इच्छा प्रेम, विश्वास, आत्मीयता आ सहचर्यक अभिव्यक्ति भऽ सकैत अछि; मुदा एहि इच्छाक भीतर आश्रयक आवश्यकता, परित्यागक भय, निर्भरता अथवा अधिकारक आकांक्षा सेहो छुपल रहि सकैत अछि। प्रश्नचिह्न एहि कथनकेँ आदेश वा आश्वासन नहि बनय दैत; ओ ओकर अनिश्चितता सुरक्षित रखैत अछि।

प्रभास कुमार चौधरीक उपन्यास एहि अनिश्चितताकेँ व्यापक सामाजिक संसारमे प्रवेश करबैत अछि। निकट रहनिहार लोक सदिखन रक्षक नहि होइत; अपन कहल जाएवला सम्बन्ध कखनो शोषणक साधन बनैत अछि। एतय पारिवारिक आश्रय, राजनीतिक संरक्षण, लैंगिक आकर्षण आ सामन्ती प्रभुत्वक अर्थ एक-दोसरासँ जुड़ि जाइत अछि। तें शीर्षक केवल प्रणयक वाक्य नहि, एकटा सामाजिक-नैतिक प्रश्न बनैत अछि : ककर निकटता सुरक्षित अछि, ककर अधिकारपर सम्बन्ध निर्भर अछि, आ ककर इच्छाकेँ 'रहब' वा 'नहि रहब'क निर्णयक स्वतन्त्रता भेटैत अछि?

२. कृतिक स्थान : मैथिली उपन्यासक यथार्थवादी विस्तार

प्रभासक पाँच उपन्यासमे 'हमरा लग रहब?' तेसर कृति अछि। मैथिली अकादमी, पटनासँ एकर स्वतन्त्र प्रकाशन १९७७ ईस्वीमे भेल। बादमे डॉ. वन्दना चौधरीक सम्पादनमे 'प्रभास समग्र'क उपन्यास-खण्डमे ई रचना समाहित भेल। एहि प्रकाशन-इतिहासक महत्त्व एतेक अछि जे एकरा अलग साहित्यिक रचनाक रूपमे पढ़ल जाए, पाँच कृतिक सामूहिक प्रतिष्ठाक भरोसे नहि। रचनाक सामाजिक प्रश्न अपन कालयुगक वास्तविकतासँ निकलैत अछि, मुदा ओकर आलोचनात्मक ऊर्जा मात्र ओहि समय धरि सीमित नहि।

मैथिली उपन्यासक परम्परामे ग्रामीण जीवनक विखण्डन, सामाजिक विषमता, संस्कारक नियन्त्रण आ नारीक विवशता दीर्घकालसँ विषय बनैत रहल अछि। प्रभास एहि विषयसभकेँ एकटा समग्र समाजक प्रतिस्पर्धी सम्बन्धक रूपमे जोड़ैत छथि। 'अभिशप्त'क शिक्षित पारिवारिक अहं आ 'युगपुरुष'क राजनीतिक महिमामण्डनक प्रश्नसँ आगाँ बढ़ि 'हमरा लग रहब?' व्यक्तिक शरीर, इच्छा, वर्गीय सुरक्षा आ सामाजिक संरक्षणक जटिल सम्बन्धपर दृष्टि

दैत अछि। एतय यथार्थवाद घटनाक नकल नहि, असमान सामाजिक सम्बन्धक कारण-दृष्टि थिक।

३. कथाविन्यास : दू भाग आ बहुविध सामाजिक संसार

कृतिक विन्यास दू भागमे विकसित होइत अछि। एहि विभाजनकेँ केवल छपल पाठक बाहरी सुविधा मानला सँ ओकर निहित अर्थ ओझराइत अछि। कथा अनेक पात्रक अनुभवक माध्यमसँ आगाँ बढ़ैत अछि आ समय-समय पर वातावरण, सम्बन्ध तथा सामाजिक परिस्थिति बदलैत अछि। प्रथम भागमे स्थापित सम्बन्धक गाँठि आगाँ कथा-प्रवाहकेँ दिशा दैत अछि; दोसर भाग सामाजिक तथा वैयक्तिक तनावकेँ नब पटलपर आनैत अछि। एहि विन्यासमे एकहि नायकक अखण्ड जीवन-वृत्तान्तक बदला परिवेशक अनेक आवाज काम करैत अछि।

कथाक बहुपात्रीयता पाठकक निकट कोनो एकटा नैतिक निर्णय तुरन्त प्रस्तुत नहि करैत। प्रणवक दृष्टि महत्त्वपूर्ण रहितो सभ घटना ओकर निजी इच्छाक विस्तार नहि अछि। कल्लू चौधरी, मुनेसर, मधु, शीला, मामा-मामी तथा अन्य पात्रक उपस्थिति बतबैत अछि जे सामाजिक यथार्थ ककरो अकेल आत्मकथा सँ पूरा नहि होइत। रचनाक गुण एहि अनुभव-विस्तारमे अछि; ओकर शिल्पगत चुनौती पात्रसभक परस्पर सम्बन्धकेँ ठोस कारण-सूत्रसँ जोड़ि राखबमे अछि।

४. प्रणव : नायकत्वक नैतिक परीक्षा

प्रणवक चरित्रक पहिल पहचान शोषणक प्रत्यक्षदर्शीक अछि। ओ सामाजिक अन्यायसँ अनभिज्ञ नहि। सामन्ती अवशेष, निकटवर्ती लोकक कष्ट आ आर्थिक-सामाजिक पराधीनताक रूप ओकर समक्ष उपस्थित अछि। मुदा देखब, बुझब आ विरोध करब तीन अलग स्तर अछि। कृतिक आलोचनात्मक तनाव एहि ठाम उत्पन्न होइत अछि जे प्रणवक निरीक्षण स्वतः नैतिक साहसमे परिणत नहि होइत। नायकत्वक लोकप्रिय अपेक्षा ई रहैत अछि जे अन्याय देखनिहार पात्र विद्रोही बनत; प्रभास एहि अपेक्षाक साक्षात्कार अधिक असुविधाजनक यथार्थसँ करबैत छथि।

एहि नायकक मूल्यांकनक लेल ओकर आन्तरिक प्रेरणा, सम्बन्धक प्रति आकर्षण आ सुविधाक खोजकेँ अलग-अलग पढ़ब आवश्यक अछि। आलोचनात्मक परम्परामे प्रणवक गतिविधि कामनासँ प्रभावित होयबाक बात उठाओल गेल अछि। मुदा 'कामना'केँ नैतिक

आरोपक एकमात्र साधन बना देब उचित नहि; एतय प्रश्न ई अछि जे निजी इच्छा सामाजिक न्यायबोधकेँ कोना पीछे धकेलैत अछि। प्रणव पीड़ा देखैत छथि, मुदा कखनो परिस्थितिक विरुद्ध ठोस क्रिया करबाक अपेक्षा अपन निकटता आ आत्मरक्षाक मार्ग चुनैत छथि। एहि कारण ओ नायकक संज्ञापर स्वयं प्रश्नचिह्न बनैत छथि।

५. प्रत्यक्षदर्शी बनाम प्रतिरोधी : कृतिक केन्द्रीय द्वन्द्व

कोनो व्यवस्था सभसँ बेसी ओहि समय स्थिर रहैत अछि जखन अन्याय जाननिहार लोक सेहो ओकर विरोधक जोखिम नहि उठबैत। प्रणवक स्थिति एहि सामाजिक सत्यक रचनात्मक रूप अछि। ओकर देखल दृश्य तखने इतिहास बदलैत जखन अनुभवसँ सामाजिक निर्णय आ निर्णयसँ कर्म उपजैत। मुदा व्यक्तिक निजी स्वार्थ, भय, आकर्षण आ आश्रयक अपेक्षा एहि संक्रमणकेँ रोकि सकैत अछि। उपन्यास ई प्रश्न उठबैत अछि जे अन्याय-बोध अपने-आप सामाजिक चेतना नहि बनि जाइत।

प्रणवक निष्क्रियता केँ सम्पूर्ण रूपेँ चरित्र-दोष कहब सेहो सहज निष्कर्ष होएत। सामन्ती समाजमे प्रतिरोधक वास्तविक मूल्य चुकाबय पड़ैत अछि। आर्थिक निर्भरता, सामाजिक प्रतिष्ठाक भय आ सम्बन्धक दबाव व्यक्ति केँ जकड़ि सकैत अछि। मुदा एहि संरचनात्मक विवशताक स्वीकार सामाजिक उत्तरदायित्वकेँ मेटा नहि सकैत। रचनाक गम्भीर पाठ एहि द्वैतमे अछि : परिस्थिति व्यक्ति केँ सीमित करैत अछि, आ व्यक्ति अपन सीमाक भीतर जे निर्णय लैत अछि से व्यवस्था केँ टिकबैत अथवा चुनौती दैत अछि।

६. कल्लू चौधरी : सामन्ती सत्ता एकटा संस्थागत सम्बन्ध

कल्लू चौधरी सामन्ती प्रभुत्वक महत्त्वपूर्ण चिह्नक रूपमे सोझाँ अबैत छथि। सामन्तवादकेँ केवल पुरान जमींदारी व्यवस्थाक कानूनी अवस्था मानल जाए तँ एकर सामाजिक अवशेषक जटिलता स्पष्ट नहि होयत। भूमि, सम्पत्ति, पारिवारिक वर्चस्व, प्रभावशाली व्यक्तिक संरक्षण आ कमजोर लोकक निर्णयपर दबाव—ई सभ शक्ति-संरचनाक अङ्ग बनि सकैत अछि। उपन्यास एहि व्यापक अर्थमे सामन्ती संस्कृतिक आलोचना करैत अछि।

कल्लू चौधरीक उपस्थिति पाठककेँ ई सोचबाक लेल बाध्य करैत अछि जे समाजमे औपचारिक बराबरीक स्थापना भेलाक बादो व्यवहारमे असमानता कोना जीवित रहैत अछि।

सत्ता जखन केवल आदेश नहि, सम्बन्धक अनिवार्य माध्यम बनि जाइत अछि, तखन निर्बल व्यक्तिक स्वतन्त्रताक दायरा अनदेखा रूपमे संकुचित होइत अछि। एतय सामन्त मात्र एकटा व्यक्ति नहि; ओ एहन सामाजिक संरचनाक प्रतिनिधि छथि जाहि भीतर निकटता सेहो प्रभुत्वसँ मुक्त नहि।

७. मुनेसर : शोषित व्यक्तिक नियति आ राजनीतिक दृश्यता

मुनेसरक चरित्रमे निम्नवर्गीय पराधीनताक प्रश्न विशेष रूपसँ उठैत अछि। पूर्ववर्ती आलोचनामे हुनकर तुलना 'युगपुरुष'क रत्नासँ कएल गेल अछि। एहि तुलनाक सारथि पीड़ाक समानता नहि, व्यक्तिक असमान सामाजिक अवसरक संरचना बुझब अछि। जे लोक साधनहीन छथि, हुनकर चयन पर सामुदायिक दबाव, कामक खोज आ प्रतिष्ठाक सीमित उपलब्धता गहन असर डालैत अछि।

मुनेसरकेँ केवल दयाक पात्र मानब कृतिक सामाजिक अर्थ घटायब होएत। प्रश्न ई अछि जे पराधीनता कोन सामाजिक सम्बन्धसँ बनैत अछि, ओकर पुनरुत्पादन कोना होइत अछि, आ न्यायपूर्ण विकल्पक अभावमे व्यक्ति कतेक हद धरि निर्णय लेबामे समर्थ रहि जाइत अछि। एहि दृष्टिसँ मुनेसरक स्थिति प्रणवक अनुभवक नैतिक कसौटी सेहो अछि : शोषणक दर्शक ओकर पीड़ाकेँ आत्मपरिवर्तनक कारण बनबैत छथि अथवा मात्र स्मृतिमे राखि छोड़ि दैत छथि?

८. मधु : संरक्षण आ शोषणक विरोधाभासी सम्बन्ध

मधुक प्रसंग राजनीतिक संरक्षण आ स्त्रीक असुरक्षाक अन्तर्सम्बन्ध बुझबाक अवसर दैत अछि। 'संरक्षण' शब्द सतहपर सुरक्षा आ सहायता सूचित करैत अछि; मुदा सामाजिक शक्ति असमान रहलासँ ई सम्बन्ध अधिकार, ऋणात्मक कृतज्ञता, नियन्त्रण अथवा शोषणक माध्यम बनि सकैत अछि। मधुक चरित्रकेँ एहि विरोधक भीतर देखब आवश्यक अछि। स्त्रीक कमजोर सामाजिक स्थिति ओकरा स्वयं निर्णयक स्वामी होयबासँ रोकि सकैत अछि, भले बाहरी लोक ओकर स्थिति केँ सुरक्षित कहैत हो।

मधुक अनुभवक आलोचना करैत समय ओकर पीड़ाकेँ रोमांचक कथानकक सामग्री बना देबाक जोखिमसँ बचबाक चाही। लेखकक सामाजिक उद्देश्य कतेक सफल भेल, तकर आकलन एहि आधारपर होएत जे मधुक व्यक्तित्वमे चाहना, अस्वीकार, भय आ प्रतिरोधक सम्भावना

केहन स्थान पाबैत अछि। स्त्रीक शोषण केवल खलनायकक दुष्टताक उपज नहि; सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ निजी अधिकारक असमान वितरण सेहो ओकर मुख्य कारण अछि।

९. मामा-मामीक परिवेश : आत्मीयताक संस्थामे असमानता

मामा-मामीक संसार कथा केँ विस्तृत सामन्ती अथवा राजनीतिक संरचनासँ उठाय पारिवारिक सम्बन्धमे अनैत अछि। नातेदारी समाजमे सुरक्षाक अपेक्षित आधार मानल जाइत अछि। मुदा रिश्ताक भीतर अधिकार, संसाधन, आश्रय आ भावनात्मक दायित्व बराबर रूपेँ बँटल नहि रहैत। तें आत्मीयताक बाहरी नाम कखनो वास्तविक असुरक्षा दूर नहि करैत। एहि पारिवारिक प्रसंगसभक महत्त्व उपन्यासक समग्र सामाजिक सरोकारसँ जुड़ल अछि।

परिवारक आलोचना करब परिवारक प्रत्येक सम्बन्धक अवमूल्यन नहि। वास्तविक प्रश्न ई अछि जे एकटा सम्बन्ध सदस्यसभकेँ गरिमा आ स्वतन्त्र निर्णयक अधिकार दैत अछि अथवा ओकर निर्भरता बढ़बैत अछि। प्रणवक अनुभवमे एहन नैतिक तौल बारम्बार लौटैत अछि। 'हमरा लग रहब?' शीर्षक एहि ठाम पुनः अर्थवान बनैत अछि : ककरा लग रहब सुरक्षा थिक, आ ककरा लग रहब आत्मनिर्णयक क्षय?

१०. शीला : इच्छा, विवशता आ अन्तर्विरोधक जटिल चरित्र

शीला एहि उपन्यासक सर्वाधिक विचारोत्तेजक स्त्री-पात्रसभमे छथि। हुनकर व्यक्तित्वकेँ केवल आकर्षणक केन्द्र कहि सीमित नहि कएल जा सकैत। प्रेम आ घृणा, आत्मबलिदान आ स्वाभिमान, प्रतिशोध आ प्रणय—एहन विरोधी अनुभूति एकहि मनुष्यक भीतर सह-अस्तित्व राखि सकैत अछि। शीला एहि मनोवैज्ञानिक बहुस्तरीयताक कारणें एकरेखीय आदर्श अथवा पतित स्त्रीक रूढ़ छविसँ बाहर अबैत छथि।

शीला केँ पढ़बाक उचित पद्धति हुनकर प्रतिक्रियासभक नैतिक अर्थकेँ पुरुष-नायकक सुख-दुःखसँ स्वतन्त्र रूपेँ जाँचब अछि। हुनकर क्रोधकेँ केवल उग्रता, चाहनाकेँ केवल प्रलोभन आ आत्मसम्मानकेँ केवल बाधा मानल गेल तऽ कृतिक गहनता घटि जायत। उपन्यास मे शीलाक विरोधी भावसभ एक-दोसराकेँ रद्द नहि करैत; ओ दर्शबैत अछि जे अन्यायपूर्ण सामाजिक सम्बन्ध व्यक्तिक आत्मबोधकेँ कतेक जटिल बना दैत अछि।

११. प्रेम आ घृणा : मनोवैज्ञानिक अनुभवक साझा धरातल

प्रेम आ घृणा केँ सदैव एक-दोसराक पूर्ण विपरीत मानब मनोवैज्ञानिक रूपेँ अपर्याप्त अछि। जखन प्रेममे स्वत्वक आघात, अस्वीकार अथवा विश्वासघातक अनुभव जुड़ैत अछि, तखन आकर्षणक स्मृति आ प्रतिशोधक प्रवृत्ति एक संग सक्रिय रहि सकैत अछि। शीला-संबन्धी प्रसंगसभ एहि जटिल अवस्थाक रचनात्मक सम्भावना खोलैत अछि। एहि स्थितिमे पाठक पात्रक भावकेँ एकटा स्थिर नाम देबाक बदला ओकर कारण खोजबाक लेल प्रेरित होइत छथि।

प्रेमक एहि प्रकारक रूप सामाजिक शून्यमे उत्पन्न नहि होइत। वर्ग, प्रतिष्ठा, पुरुष-अधिकार आ स्त्रीक सामाजिक असुरक्षा सम्बन्धक स्वरूप तय करैत अछि। यदि स्त्री भावनात्मक रूपेँ स्वाधीन होइतहुँ बाहरी संरक्षणक लेल विवश अछि, तँ ओकर निर्णयक मूल्यांकन करुणा आ सामाजिक विवेक दुनूक माँग करैत अछि। एहि कारण शीलाक चरित्र विश्लेषणमे अन्तर्मन आ समाज केँ अलग कएलासँ रचनाक मर्म छूटि जाइत अछि।

१२. आत्मबलिदान, स्वाभिमान आ प्रतिशोध : नारी-पात्रक तीन नैतिक अवस्थिति

शीला सम्बन्धी आलोचनामे आत्मबलिदान, स्वाभिमान आ प्रतिशोधक उल्लेख कएल गेल अछि। ई तीनू भाव एकहि नैतिक स्तरपर नहि रहैत। आत्मबलिदान कखनो प्रेमक स्वैच्छिक अभिव्यक्ति होइत अछि, मुदा कखनो सामाजिक दबावक कारण स्वीकार कएल गेल असमान समझौता सेहो। स्वाभिमान आत्मनिर्णयक अनिवार्य आधार अछि; प्रतिशोध अन्यायक स्मृतिसँ जनमि सकैत अछि, मुदा ओकर नैतिक परिणाम परिस्थितिक अनुसार बदलैत अछि।

एकटा गम्भीर साहित्यिक आलोचना एहि भावसभकेँ स्त्री-पात्रक भावनात्मक अस्थिरताक प्रमाण मानि समाप्त नहि करैत। बरु देखैत अछि जे पात्रक संसाधन, सामाजिक सहारा आ विकल्प सीमित रहलाक अवस्था मे आत्मसम्मानक रक्षा लेल कोन मार्ग शेष रहि जाइत अछि। शीलाक जटिलता लेखकक मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताक उपलब्धि थिक; परंतु एकर सम्पूर्ण मूल्यांकन लेल ओहो देखब आवश्यक अछि जे कथाक नैतिक दृष्टि स्त्रीकेँ स्वतन्त्र निर्णयकारी मनुष्य मानैत अछि कि पुरुष-पात्रक भावनात्मक नियतिक अधीन रखैत अछि।

१३. स्त्रीक शरीर आ सामाजिक सत्ता

उपन्यासमे नारीक विविध सामाजिक स्थितिसँ एक प्रश्न बारम्बार उभरैत अछि : स्त्रीक शरीर पर नियन्त्रणक दावाक स्रोत के? परिवार, सामन्ती प्रतिष्ठा, धनबल, राजनीतिक संरक्षण आ प्रेमक नाम पर अधिकार—अनेक सम्बन्ध स्त्रीक निर्णयमे हस्तक्षेप करैत अछि। एहि हस्तक्षेपक परिणाम केवल व्यक्तिगत अपमान नहि; व्यक्ति अपन सामाजिक स्थान, आत्मविश्वास आ भविष्यक सम्भावना तक गुमाबि सकैत अछि।

शोषणक दृश्यसभकेँ यथार्थवादी चित्रण कहि स्वीकार करब पर्याप्त नहि। एहन दृश्य कलात्मक रूपेँ तखन समर्थ बनैत अछि जखन ओ हिंसाक कारण, पीड़ितक अनुभूति आ पाठकक नैतिक प्रतिक्रिया बीच गहिर सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। स्त्रीक पीड़ा केवल पुरुष-नायकक आत्मबोध जगाबय लेल नहि, अपने आपमे इतिहास आ अनुभवक विषय होयबाक चाही। एहि कसौटी पर कृतिक उपलब्धि तथा सीमाक विवेचन विशेष आवश्यक अछि।

१४. सामन्ती अवशेष आ आधुनिक राजनीतिक संरक्षण

कृति एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक ऐतिहासिक संक्रमणक ओर संकेत करैत अछि : पुरान सामन्ती प्रभाव समाप्त होयबाक घोषणाक बादो ओकर व्यावहारिक शक्ति नब राजनीतिक सम्बन्धमे जीवित रहि सकैत अछि। धन, मान, भय आ पारिवारिक प्रतिष्ठाक पुरान तन्त्र नव संरक्षण-व्यवस्थासँ गठबन्धन बना लैत अछि। एहि कारण सामन्तवाद आ आधुनिक राजनीति अलग-अलग युगक निर्विवाद विरोधी नहि रहैत।

एहि दृष्टिसँ कल्लू चौधरीक सामन्ती स्थिति आ मधुक राजनीतिक संरक्षणवला परिवेश परस्पर असम्बद्ध प्रसंग नहि। सत्ता अपन वैधता बदलैत अछि, मुदा शोषणक प्रवृत्ति स्थिर रहि सकैत अछि। रचनाक समाजशास्त्रीय गहनता एहि बिन्दुपर अछि : व्यक्तिगत दुष्कर्मक आलोचनासँ आगाँ बढ़ि ओहि जालकेँ देखब, जाहिमे लाभान्वित लोकक संग मौन दर्शक सेहो व्यवस्था केँ टिकबैत छथि।

१५. गाम आ शहर : दू परिवेश, साझा असमानता

प्रणवक जीवन-गाथामे गाम आ शहर दुनूक सामाजिक क्षेत्र उपस्थित अछि। गामक भीतर सामन्ती दबाव, नातेदारीक संरचना आ स्थानीय प्रतिष्ठाक व्यवस्था सक्रिय अछि; शहरमे आधुनिक अवसर, नब सम्बन्ध आ राजनीतिक सम्पर्कक अपेक्षा बनैत अछि। मुदा नगरक उपस्थिति अपने-आप सामाजिक मुक्ति सुनिश्चित नहि करैत। अनेक बेर शहरक सम्बन्ध सेहो आकर्षण, स्वार्थ आ प्रभुत्वक नब रूप सँ संचालित होइत अछि।

एहि कारण उपन्यासमे गाम-शहरक तुलना सभ्यता बनाम पिछड़ापनक सरल सूत्रमे नहि समा सकैत। सामाजिक स्थिति बदललाक बादो पात्रक संस्कार, भय आ चाहनाक स्मृति संग चलैत अछि। प्रश्न ई नहि जे कोन स्थान स्वभावतः अच्छा, बल्कि ई जे कखन कोन व्यवस्था व्यक्तिक स्वतन्त्रता बढ़बैत अछि आ कखन ओहि स्वतन्त्रताकेँ नव प्रकारक अनुशासनमे बाँधैत अछि।

१६. समय-संकेत आ स्मृतिक राजनीतिक अर्थ

कथामे समयक स्पष्ट संकेत तथा पात्रक अतीतक पुनर्स्मरण वर्णन-विन्यासकेँ केवल क्रमिक घटनाक सूची नहि रहय दैत। वर्तमानमे व्यक्तिक चुनाव ओकर पूर्व अनुभवसँ प्रभावित होइत अछि। शोषणक स्मृति, पारिवारिक आघात आ आकर्षणक पुरान सूत्र पछिला घटनाक अर्थ बदलैत अछि। पाठक समयक दूरीसँ देखैत अछि जे स्मरण हमेशा न्यायपूर्ण निर्णयक गारंटी नहि : व्यक्ति सब किछु देखल-बुझलाक बादो अपन सुविधाजनक भुलाबाक प्रवृत्ति विकसित कऽ सकैत अछि।

प्रणवक चरित्रमे अतीतसँ दूरी बनबैत वर्तमानक अवसरक ओर झुकाव एहि स्मृति-संकटक एक महत्त्वपूर्ण रूप थिक। प्रश्न ई अछि जे अनुभव समाज-विवेक बनैत अछि वा निजी आत्मकथाक सामग्री रहि जाइत। समय-संकेतक साहित्यिक प्रयोजन तखन सफल होइत अछि जखन पाठकक सोझाँ व्यक्तिक पूर्व स्थितिक संग वर्तमान निर्णयक नैतिक तुलना सम्भव बनैत अछि।

१७. संवादक समाजभाषिक भूमिका

‘हमरा लग रहब?’ संवादक माध्यमसँ सामाजिक नजदीकी आ दूरी दुनू निर्मित करैत अछि। पात्रक बोलीमे आग्रह, मनुहार, दबाव, संकोच, प्रतिरोध आ अविश्वासक भाव खुलैत अछि। लेखकक भाषा उपन्यासक सामाजिक परिवेशकेँ निर्जीव वर्णनक बदला जीवित आदान-प्रदानमे रूपान्तरित करैत अछि। सम्बोधनक लहजा सम्बन्धक सत्ता-सन्तुलन बतबैत अछि—ककरा प्रश्न करबाक अधिकार अछि, के उत्तर देबय बाध्य अछि, आ के मौन रहैत अछि।

समाजभाषिक स्तरपर संवादक ई महत्त्व विशेष अछि जे एके वाक्य एक सम्बन्धमे आत्मीयता, दोसरामे नियन्त्रणक अर्थ दऽ सकैत अछि। शीर्षकक प्रश्नकेँ एहि दृष्टिसँ पुनः पढ़ल जाए : कहनिहारक स्थिति, सुननिहारक स्वायत्तता आ दूनूक बीचक सामाजिक दूरी जाने बिना वाक्यक नैतिक अर्थ निश्चित नहि होइत। संवादक सफलता मात्र स्वाभाविक बोलचालमे नहि, एहि अन्तर्निहित सत्ता-सम्बन्ध केँ दृश्य बनाबय मे अछि।

१८. बहुपात्रीयता : सामाजिक पटल आ शिल्पगत जोखिम

कल्लू चौधरी, मुनेसर, मधु, शीला, मामा-मामी आ प्रणवक भिन्न सामाजिक अवस्थिति एक विस्तृत कथा-संसार रचैत अछि। एहि पद्धतिसँ उपन्यास वर्ग, लिंग आ प्रतिष्ठाक अनेक आयाम एकहि संरचनामे प्रस्तुत करि पबैत अछि। कोनो एकटा पात्र समूचा समाजक प्रतिनिधित्व नहि करैत; ओकर अनुभव दोसराक नियतिसँ जुड़ि सामाजिक यथार्थक बृहत्तर चित्र बनबैत अछि।

मुदा अनेक पात्रक उपस्थिति अपने-आप कलात्मक पूर्णताक प्रमाण नहि। पात्रसभक स्वतन्त्र आन्तरिकता आ घटनाक कारण-सूत्र पाठकक दृष्टिमे स्पष्ट रहबाक चाही। शोषणक क्रमवार उदाहरण मात्र जोड़ा गेल तँ रचना समाजशास्त्रीय सूची बनबाक जोखिम उठबैत अछि। प्रभासक कृतिक मूल्यांकनमे ई कसौटी उपयोगी अछि : एतेक सामाजिक परिस्थिति कथात्मक रूपमे कतबा परस्पर अनिवार्य बनल अछि, आ कतबा स्वतन्त्र प्रसंग रहि गेल?

१९. प्रणव आ शीला : विषम सत्ता-संबन्धक भीतर निकटताक प्रश्न

प्रणव-शीला सम्बन्ध आलोचनाक एक सूक्ष्म केन्द्र अछि। एहि सम्बन्धमे व्यक्ति केकरा देखैत अछि, आ केकरा देखय सँ बचैत अछि—ई प्रश्न आकर्षणसँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। प्रणव यदि

अपन सामाजिक विवेकक अपेक्षा व्यक्तिगत चाहनाकेँ प्राथमिकता दैत अछि, तँ शीलाक जीवन ओकर निजी भावुकताक उपन्यास बनयबाक खतरा उपस्थित अछि। दोसर दिस, शीलाक स्वाभिमान आ प्रतिरोधक भाव एहि एकपक्षीय दृष्टिक प्रतिपक्ष बनि सकैत अछि।

दुनू पात्रकेँ समान रूपेँ निर्बल अथवा समान रूपेँ स्वाधीन मानब सेहो असत्य होएत। समाजमे स्त्री-पुरुषक स्थितिमे असमान नियन्त्रण उपस्थित अछि। तें सम्बन्धक नैतिक मूल्यांकनमे व्यक्तिगत इच्छा आ सामाजिक अधिकारक बीच भेद आवश्यक अछि। उपन्यास एहि भेदकेँ अनुभूतिक रूपमे उपस्थित करैत अछि, चाहे ओकर पात्रसभ हमेशा एहि भेदक स्पष्ट बोध रखैत होथि अथवा नहि।

२०. मनोविश्लेषण आ सामाजिक यथार्थ : परस्पर-सम्पूरक दृष्टि

कृतिक मनोवैज्ञानिकता केँ सामाजिक विवेचनक प्रतिद्वन्द्वी मानब उचित नहि। शीला जे अनुभूति सँ गुजरैत छथि ओकर कारण केवल निजी स्वभाव नहि; सामाजिक असमानता ओकरा विशेष रूप दैत अछि। प्रणवक निष्क्रियता सेहो व्यक्तिगत संकोचक संग सुविधाक सामाजिक आकर्षणसँ सम्बन्ध रखैत अछि। आत्मसम्मान, भय, प्रेम आ प्रतिशोधक मनोभाव असमान सत्ता-संरचनाक भीतर अलग-अलग अर्थ ग्रहण करैत अछि।

एहि दृष्टिसँ मनोविश्लेषण पात्रक अन्तःकरणपर बाहरी समाजक छाप पढ़बाक एकटा उपाय बनैत अछि। मुदा केवल भावनात्मक उतार-चढ़ावक वर्णन पर्याप्त नहि; भावक निर्माण आ बदलावक कथात्मक विश्वसनीयता सेहो जरूरी अछि। आलोचककेँ प्रतिपाद्य नैतिक विचारक प्रभावसँ अलग पात्रक जीवन्तता मापबाक चाही।

२१. डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क आलोचनासँ संवाद

डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एहि उपन्यासक स्त्री-पात्रक व्यापक शोषण-चित्रण पर ध्यान देलनि अछि आ शीलाक चरित्रमे विवशता, प्रेम, घृणा, स्वाभिमान, आत्मबलिदान तथा प्रतिशोधक सहअस्तित्वकेँ कलात्मक महत्त्व देने छथि। ई मूल्यांकन उपन्यासक मनोवैज्ञानिक उपलब्धि बुझबाक लेल उपयोगी अछि। शीला केँ सरल सदाचारक उदाहरण वा दूषणक प्रतीक बनाय देबाक बदला मनक विरोधी प्रवृत्तिक जटिल मनुष्य रूपमे पढ़ब एहिसँ सम्भव होइत अछि।

दोसरा दिस, हुनकर स्त्री-पुरुष सम्बन्धसँ जुड़ल अनैतिकताक व्यापक चित्रणपर आपत्ति सेहो गम्भीर विचारक विषय अछि। प्रश्न ई अछि जे हिंस्र आ यौन-शोषणप्रधान समाजक चित्रणमे अतिशयोक्तिक सीमा कतय अछि। जँ अनेक पात्र एकहि नैतिक दोषक प्रतिनिधि बनि जाइत छथि तऽ चरित्रक विविधता घटि सकैत अछि। मुदा एहन एकाग्रता शोषणक संरचनात्मक व्यापकता दिखयबाक साहित्यिक युक्ति सेहो बनि सकैत अछि। अतः आलोचनामे दुनू सम्भावनाकेँ विवेकपूर्ण ढंगसँ तौलनाइ उचित अछि।

२२. डॉ. प्रभावती झाक दृष्टि : प्रणवक मनोवैज्ञानिक असंगति

डॉ. प्रभावती झाक आलोचनामे प्रणवक जीवन-गाथाक संग गाम-शहरक राजनीति तथा ओकर मानसक अन्तर्विरोध पर विचार उपस्थित अछि। एहिमे पात्रक कृत्रिमता आ घटनाक नाटकीयताक सम्बन्धमे प्रश्न उठैत अछि। एहि निर्णयक सार्थकता ई अछि जे उपन्यासक सामाजिक उद्देश्यकेँ पात्रक मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयताक बदला पर्याप्त नहि मानल जा सकैत। जँ लेखक न्यायप्रिय नायक देखाबय चाहैत छथि, मुदा ओकर कर्म बारम्बार विपरीत दिशा लैत अछि, तँ पाठक चरित्रक औचित्य पूछत।

मुदा प्रणवक नैतिक अपूर्णता स्वतः लेखकक कलात्मक विफलता नहि। एहन पात्र सम्भव अछि जे सच देखैतहुँ इच्छाक दास बनैत अछि। निर्णायक प्रश्न ई अछि जे उपन्यास एहि अपूर्णताकेँ सजग व्यंग्यक रूपमे बरतैत अछि वा पाठकसँ ओकरा आदर्श रूपमे स्वीकार करबाक आग्रह करैत अछि। आलोचनात्मक मूल्यांकनमे पात्रक व्यवहार आ कथावाचकक मूल्यनिर्णय अलग करबाक आवश्यकता एहि ठाम सर्वाधिक अछि।

२३. सुधांशु शेखर चौधरीक तुलनात्मक आपत्ति

प्रभासक ‘नवारम्भ’ उपन्यास पर विचार करैत सुधांशु शेखर चौधरी ‘हमरा लग रहब?’क प्रणवक कृत्रिम नायकत्वक प्रश्न उठौलनि अछि। ई आलोचनात्मक तुलना लेखकक विभिन्न उपन्यासमे आदर्शवादी पात्र-निर्माणक समस्याक ओर संकेत करैत अछि। प्रणवक व्यक्तित्व यदि कथाक भीतर अनेक असमान दबावसँ अस्थिर बनैत अछि, तऽ ओकर ‘देवत्व’सँ सम्बद्ध भाषा अनिवार्य रूपेँ सन्देहक विषय बनैत अछि।

एहि आपत्तिक आलोचनात्मक मूल्यांकन दू स्तरपर आवश्यक अछि। पहिल, कि पाठ वास्तवमे प्रणवकेँ श्रेष्ठ नैतिक प्रतिमान बनाबैत अछि? दोसर, जँ एहन प्रयत्न अछि तँ घटनाक विकास ओकर पुष्टि करैत अछि कि प्रतिरोध? एहि भेदकेँ स्पष्ट करब आवश्यक अछि। सामाजिक रूपेँ अपूर्ण व्यक्ति महत्त्वपूर्ण उपन्यासक नायक भऽ सकैत अछि; समस्या पात्रक अपूर्णतामे नहि, अपूर्णता आ कथागत महिमामण्डनक असंगत सामंजस्यमे अछि।

२४. सामाजिक अश्लीलता आ साहित्यिक यथार्थक सीमा

समाजक यौन-हिंसा आ स्त्री-शोषणक चित्रण पर ‘स्वस्थ’ अथवा ‘अस्वस्थ’ साहित्यक परम्परागत नैतिक निर्णय लगैत रहल अछि। एहि निर्णयक सीमा ई अछि जे ओ बहुत बेर पाठमे उपस्थित पीड़ाक ऐतिहासिकता सँ अधिक पाठकक शीलबोध पर ध्यान केन्द्रित करैत अछि। मुदा विपरीत अतिमे, हिंसाक किसी भी चित्रणकेँ यथार्थवादक नामपर स्वतः कलात्मक अधिकार देल नहि जा सकैत।

कसौटी ई होयबाक चाही जे दृश्य पीड़ित व्यक्तिक गरिमा, कष्टक सामाजिक स्रोत आ अन्यायक आलोचना प्रकट करैत अछि कि केवल सनसनीक साधन बनैत अछि। ‘हमरा लग रहब?’ एहन प्रश्न करबाक अवसर दैत अछि, कारण स्त्रीक विरुद्ध शोषणक अनेक रूप एकर कथा-संसारमे उपस्थित अछि। कठिन सामाजिक यथार्थक प्रतिनिधित्व तखन साहित्य बनैत अछि जखन घटना अनुभवक नैतिक जटिलतामे रूपान्तरित होइत अछि।

२५. ‘अभिशप्त’ आ ‘युगपुरुष’सँ अन्तर्सम्बन्ध

प्रभासक पहिल तीन उपन्यास संग पढ़लासँ रचनात्मक चिन्ताक क्रमिक विस्तार देखाइत अछि। ‘अभिशप्त’मे पारिवारिक अहं आ शिक्षित मध्यवर्गक आत्मविरोध प्रधान अछि। ‘युगपुरुष’मे वर्गीय विवशता आ सार्वजनिक महिमामण्डनक विडम्बना सोझाँ अबैत अछि। ‘हमरा लग रहब?’मे सामन्ती अवशेष, निजी आकर्षण, राजनीतिक संरक्षण आ स्त्रीक सामाजिक असुरक्षाक बहुस्तरीय सम्बन्ध प्रमुख बनैत अछि। एहि तीनू ठाम व्यक्तिक घोषित नैतिकता आ वास्तविक व्यवहारक बीच दूरी साझा सूत्र अछि।

मुदा एकरा एकहि उपन्यासक तीन पुनरावृत्ति मानब गलत होएत। ‘अभिशप्त’क घरेलू त्रासदी, ‘युगपुरुष’क राजनीतिक व्यंग्य आ ‘हमरा लग रहब?’क लैंगिक-सामाजिक संरचना

भिन्न कलात्मक प्रयोजन रखैत अछि। एहि भिन्नतामे प्रभासक रचनाशीलताक विकास देखब उचित अछि। लेखक केवल व्यक्ति कैँ निन्दित नहि करैत; ओ सामाजिक संस्कारक एहन रूपसभकैँ उजागर करैत छथि जे बारम्बार नब सम्बन्धमे पुनरुत्पन्न होइत अछि।

२६. आधुनिक मैथिली पाठक लेल कृतिक अर्थ

‘हमरा लग रहब?’क सामाजिक संसार इतिहासक एक समयसँ सम्बन्धित अछि, मुदा एकर प्रश्न समकालीन समाजमे सेहो अर्थवान अछि। स्त्रीक सुरक्षा ककर नियन्त्रणपर निर्भर अछि? परिवार आ राजनीति द्वारा देल गेल ‘संरक्षण’ स्वतन्त्रता बढ़बैत अछि वा घटबैत अछि? शिक्षित व्यक्ति शोषणक सत्य देखलाक बादो निजी सुविधा लेल मौन कियैक रहैत अछि? ई प्रश्न आधुनिक जीवनक अनेक स्तरपर पुनः उपस्थित होइत अछि।

उपन्यास पाठकसँ नायकक अन्धानुकरणक अपेक्षा नहि करबाक चाही; पाठकक दायित्व ओकर नैतिक विकल्पकैँ जाँचब थिक। प्रणवक दृष्टि देखब आ हुनकर निष्क्रियतापर प्रश्न उठायब, शीला कैँ आकर्षणक केन्द्र नहि बल्कि स्वतन्त्र मनुष्य रूपमे पढ़ब, मधु आ मुनेसरक स्थिति कैँ संरचनात्मक अन्यायसँ जोड़ब—एहि प्रक्रिया सँ कृतिक सामाजिक आलोचना आजुक जीवनसँ संवाद करैत अछि।

२७. निष्कर्ष : निकटताक याचना सँ गरिमाक अधिकार धरि

‘हमरा लग रहब?’ आधुनिक मैथिली उपन्यासक सामाजिक-यथार्थवादी परम्परामे एक महत्त्वपूर्ण प्रश्नाकुल कृति अछि। एकर शीर्षकक आत्मीय प्रश्न कथा-विकासमे अधिकार आ आश्रयक जटिल सम्बन्ध उद्घाटित करैत अछि। प्रणवक शोषण-दर्शन आ प्रतिरोधक दुर्बलता, कल्लू चौधरीक सामन्ती उपस्थिति, मुनेसरक सामाजिक विवशता, मधुक संरक्षणगत असुरक्षा, मामा-मामीक पारिवारिक परिवेश आ शीलाक मनोवैज्ञानिक बहुरूपता मिलि एहन संसार निर्मित करैत अछि, जाहिमे निकटता स्वयं सुरक्षा अथवा न्यायक पर्याय नहि रहि जाइत।

उपन्यासक उपलब्धि स्त्रीक पीड़ा आ व्यक्ति-सामाजिक सत्ताक सम्बन्धकैँ कथा-संसारमे सोझाँ आनब अछि। शीलाक चरित्रमे प्रेम, घृणा, स्वाभिमान आ प्रतिशोधक सहअस्तित्व ओकर कलात्मक जटिलता बढ़बैत अछि; प्रणवक अनिर्णय सार्वजनिक न्यायबोधक सीमाकैँ जगजियार

करैत अछि। एहि संग पात्रसभक मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता, शोषणक दृश्यसभक कलात्मक सन्तुलन आ आदर्शवादी नायकत्वक असंगतिक आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक रहैत अछि।

कृतिक मर्म एहि साधारण मुदा कठिन निष्कर्षमे केन्द्रित अछि जे ककरो लग रहबाक अधिकार आ ककरो जीवनपर अधिकार चलायबाक प्रवृत्ति एकहि बात नहि। विश्वास तखने मानवीय बनैत अछि जखन ओकर भीतर स्वतन्त्रता, समानता आ सम्मान उपस्थित हो। प्रभासक उपन्यास पाठककेँ एहि भेदक प्रति सजग करैत अछि। एही कारण 'हमरा लग रहब?' अपन निजी सम्बोधनक सीमासँ बाहर निकलि समाजक नैतिक संरचनापर एक दीर्घ प्रश्न बनि उठैत अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

चौधरी, प्रभास कुमार। हमरा लग रहब? पटना : मैथिली अकादमी, १९७७।

चौधरी, प्रभास कुमार। 'हमरा लग रहब?' प्रभास समग्र (उपन्यास)। सम्पादक : डॉ. वन्दना चौधरी। दरभंगा : ज्योत्स्ना प्रकाशन, २०१७।

झा, अरुण कुमार। मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन। पुणे : कृपा-दृष्टि पब्लिकेशन्स। ISBN 978-81-19149-27-8।

झा, दुर्गानाथ 'श्रीश'। मैथिली साहित्यक इतिहास। 'हमरा लग रहब?' सम्बन्धी आलोचनात्मक विवेचन।

झा, प्रभावती। स्वातंत्र्योत्तर मैथिली साहित्यक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति। 'हमरा लग रहब?' सम्बन्धी विवेचन।

चौधरी, सुधांशु शेखर। प्रभासक उपन्याससभक तुलनात्मक पुस्तक-परिचय। मिथिला मिहिर, ६ मई १९७९।

जापानक राष्ट्रिय सूचना-विज्ञान संस्थान। 'हमरा लग रहब? : मैथिली उपन्यास'—ग्रन्थसूची अभिलेख BA83164814।

पूर्णिया विश्वविद्यालय। स्नातक मैथिली पाठ्यक्रम, उपन्यास-अध्ययन खण्ड : 'हमरा लग रहब?'।

'प्रभासोत्सव' पर साहित्यिक समागम—देश भरि सँ जुटला दिग्गज साहित्यकार। मैथिली जिन्दाबाद, २३ फरवरी २०१७।

४. ‘नवारम्भ’ : सामन्ती गौरवक विघटन, रविक नैतिक विरोधाभास आ दलित चेतनाक पुनर्जन्म

प्रभास कुमार चौधरीक उपन्यासक विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

प्रभास कुमार चौधरीक ‘नवारम्भ’ मैथिली उपन्यासक ओहि सामाजिक-यथार्थवादी धाराक उल्लेखनीय कृति अछि, जाहिमे सामन्ती वर्चस्वक ऐतिहासिक अवसान, ओकर अवशेषपर उगैत भ्रष्ट सामाजिक व्यवहार आ दलित समुदायमे नवचेतनाक स्फुरणकेँ एकहि कथात्मक प्रक्रियाक भिन्न चरणक रूपमे देखल गेल अछि। ‘हवेली मोहनपुर’, ‘लंका मोहनपुर’ आ ‘नवारम्भ’—ई तीन खण्ड कथात्मक समयक संग मूल्यगत संक्रमणक रूपरेखा सेहो तैयार करैत अछि। श्रीकान्त चौधरी पुरान सामन्ती मर्यादाक रक्षक छथि; एकवाली चौधरी, हरिश्चन्द्र मिश्र, महेश मास्टर सन पात्र परिवर्तित शक्ति-संरचनाक अवसरवादी रूप उद्घाटित करैत छथि। रवि नव सामाजिक जीवनक सम्भावनाक वाहक होयबाक अपेक्षा जगबैत अछि, मुदा ओकर सामन्ती संस्कार, कविताक प्रति यौन-हिंसा, पलायन, सम्पत्तिक संघर्ष आ पछतावासँ जुड़ल सम्बन्ध ओकर नायकत्वक दावाकेँ जटिल बना दैत अछि। साहित्यिक अध्ययनक लेल ई विरोधाभास निर्णायक अछि : नव आरम्भक आकांक्षा पुरान अन्यायक पुनरावृत्ति करैत व्यक्ति द्वारा कतेक सम्भव अछि? समीक्षामे त्रिखण्डीय कथाशिल्प, गाँवक शक्ति-संरचना, वर्ग आ जातिक अन्तर्सम्बन्ध, स्त्रीक स्वायत्तता, सुधारवादक सीमा, दलित चेतनाक राजनीतिक आशय तथा पूर्ववर्ती समीक्षाक आलोचनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि। कृतिक उपलब्धि परिवर्तनकेँ व्यक्तिक सदिच्छा मात्र नहि, ऐतिहासिक उत्तरदायित्व आ सामूहिक प्रतिरोधक प्रश्न बनायबमे देखल जा सकैत अछि।

मुख्य शब्द : नवारम्भ, प्रभास कुमार चौधरी, हवेली मोहनपुर, लंका मोहनपुर, रवि, कविता, सामन्तवाद, दलित चेतना, ग्राम्य राजनीति, सामाजिक यथार्थवाद

अध्ययनक स्रोताधार

एहि आलेखमे कथासम्बन्धी तथ्य उपलब्ध प्रकाशित आलोचनात्मक अध्ययन आ साहित्यिक विवेचनक आधारपर ग्रहण कएल गेल अछि। ‘नवारम्भ’क सम्पूर्ण मूल पाठक प्रत्यक्ष परीक्षण सम्भव नहि भेलाक कारण

कोनो अप्रमाणित संवाद, अतिरिक्त घटना वा मूलपाठक उद्धरण प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। एहि सीमाक भीतर त्रिखण्डीय कथायोजना, पात्रसभक सामाजिक भूमिका आ कृतिक वैचारिक सम्भावनाक स्वतन्त्र आलोचनात्मक पुनर्पाठ कएल गेल अछि।

१. प्रस्तावना : आरम्भक अर्थ की?

'नवारम्भ' शीर्षक भविष्यक आशा जगबैत अछि, मुदा नव आरम्भक अर्थ पुरान संरचनाक बाहरी रूप बदलि देब मात्र नहि। समाजमे जखन एक वर्गक वर्चस्व टूटैत अछि, तखन ओकर स्थानपर न्यायपूर्ण लोकव्यवस्था स्वतः स्थापित नहि होइत। पुरान धनबलक अन्त होइतो ओकर संस्कार, सम्बन्धक असमानता आ लाभ उठेबाक कला नब शक्तिकेँ अपना भीतर समाहित कऽ सकैत अछि। प्रभास कुमार चौधरी एहि जटिल ऐतिहासिक संक्रमणकेँ उपन्यासक आधार बनबैत छथि।

कृतिक नाममे 'नव' आ 'आरम्भ'क संग एकटा अप्रकट प्रश्न सदिखन जुड़ल अछि : ककरा लेल नव? सामन्तक उत्तराधिकारी, सत्ताक अवसरवादी मध्यस्थ, स्त्री अथवा दलित समुदाय—ई सभ आरम्भकेँ समान अर्थमे नहि बुझि सकैत। एहि कारण रचना केवल वंशक पतनक करुण कथा नहि रहि जाति; ओ इतिहासक विषय कोन वर्ग बनत आ परिवर्तनक लाभ किनका भेटत, एहि प्रश्न धरि पहुँचैत अछि।

२. त्रिखण्डीय विन्यास : उत्थान, पतन आ पुनर्जागरण

उपन्यास 'हवेली मोहनपुर', 'लंका मोहनपुर' आ 'नवारम्भ' नामक तीन खण्डमे विकसित होइत अछि। एहन त्रिखण्डीय योजना कथाक ऐतिहासिक तर्क स्पष्ट करैत अछि। पहिल खण्डमे सामन्ती प्रतिष्ठाक आधार आ तकर टूटबाक संकट, दोसरमे पुरान ढाँचाक अवशेष पर जन्मल सामाजिक अनैतिकता, आ तेसरमे उपेक्षित समुदायमे चेतनाक नब सम्भावना रचनात्मक केन्द्र बनैत अछि। एहि क्रमकेँ यान्त्रिक रूपसँ 'अच्छा अतीत—बुरा वर्तमान—उज्ज्वल भविष्य' मानब गलत होएत। सामन्ती अतीतक कथित गौरव स्वयं प्रभुत्व आ वंचनाक आधारपर टिकल छल।

तीन खण्ड रचनामे परिवर्तित समयक अलग-अलग नैतिक भाषा होबाक संकेत दैत अछि। हवेली लोकक स्मृतिमे प्रतिष्ठित संस्था भऽ सकैत अछि; लंका रूपक बनि विलासिता, छल आ विनाशक बोध दैत अछि; नवारम्भ भविष्यक दावा प्रस्तुत करैत अछि। ई नाममात्रक भिन्नता

नहि, उपन्यासक भावविन्यासक क्रम अछि। एक खण्डकेँ दोसरासँ अलग पढ़लासँ परिवर्तनक मूल्यगत व्यंग्य अस्पष्ट रहि जाएत।

३. 'हवेली मोहनपुर' : सामन्ती 'गौरव'क ऐतिहासिक परीक्षा

पहिल खण्डक हवेली सामन्ती वैभवक वास्तु-चिह्न होयबाक संग सामाजिक श्रेणीकरणक केन्द्र सेहो बुझल जा सकैत अछि। घरक भौतिक विस्तार, प्रतिष्ठा आ परम्परागत अधिकारक भाव ओकरा समाजक समान नागरिक सभक घरसँ भिन्न करैत अछि। पुरान सामन्ती परिवेशमे 'गौरव' शब्दक प्रयोग स्वयं एक नैतिक समस्या उत्पन्न करैत अछि : जकरा गौरव कहल जाए, से ककर अनुभवक आधारपर गौरव मानल गेल?

श्रीकान्त चौधरीक पात्र-भूमिका एतय महत्त्वपूर्ण अछि। ओ पुरान मर्यादा आ सामन्ती मान्यताक रक्षकक रूपमे उपस्थित छथि। रक्षक होयब अपने-आप नैतिक श्रेष्ठताक प्रमाण नहि। जकर रक्षा कएल जाइत अछि, ओकर संस्थागत आधार—धन, आश्रित वर्ग, जातिगत प्रभुत्व, उत्तराधिकार—सभक आलोचनात्मक विवेचन आवश्यक अछि। 'हवेली मोहनपुर'क सार्थक पठन अतीतक अवसानपर अश्रु बहयबाक बदला एहि अवसानक सामाजिक कारण आ वैचारिक अर्थकेँ चिन्हैत अछि।

४. श्रीकान्त चौधरी : परम्पराक पहरेदार आ संकटग्रस्त सत्ता

श्रीकान्त चौधरी केँ सहज 'भल लोक' वा 'दुष्ट सामन्त'क दू कोटिमे बाँटब चरित्रक ऐतिहासिक भूमिका अस्पष्ट करैत अछि। ओ एकटा एहन मूल्यव्यवस्थाक प्रतिनिधि छथि, जाहिमे वंशीय प्रतिष्ठा, मर्यादा आ आदेश सामाजिक व्यवहारपर अधिकार रखैत छल। एहि व्यवस्थाक टूटब व्यक्तिगत अपमान सन अनुभव होइत अछि, कारण व्यक्ति अपन अस्मिताकेँ संस्थागत वर्चस्वसँ अलग नहि कऽ पबैत।

कृतिक प्रभावी पक्ष ई अछि जे सामन्ती पतनक संग व्यक्तिगत असुरक्षाक प्रश्न उठैत अछि। मुदा करुणाक वितरण बराबर नहि होबाक खतरा सेहो उपस्थित अछि। श्रीकान्तक अवसानपर पाठक दुखी होथि, तकर पूर्वशर्त ई नहि जे ओ पुरान सामाजिक अन्याय सेहो स्वीकार करथि। मानवक प्रति सहानुभूति आ अन्यायपूर्ण संस्थाक आलोचना परस्पर विरोधी नहि। एहि भेदकेँ स्पष्ट रखबाक आवश्यकता एहि खण्डक आलोचनामे सर्वाधिक अछि।

५. सामन्ती पतन : आर्थिक विपन्नता कि नैतिक संकट?

सामन्त वर्गक आर्थिक आधार टूटला सँ ओकर सामाजिक प्रभुत्व सेहो अस्थिर होइत अछि। मुदा सामन्तवाद सम्पत्ति मात्रक सम्बन्ध नहि; ओ व्यवहार, स्मृति, देह, सम्बोधन आ आत्मसम्मानक भाषा धरि व्याप्त रहैत अछि। ओकर आर्थिक पतनक बादो अनेक लोक मानसिक रूपसँ ओहि व्यवस्था कैं जिअबैत रहैत अछि। कृति एहन ऐतिहासिक विषम गति कैं चिन्हबाक अवसर दैत अछि।

यथार्थवादी आलोचनामे 'पतन'क अर्थ केवल साधनक ह्रास नहि, सामाजिक वैधताक क्षरण सेहो थिक। जे समाज एक समय किछु व्यक्तिकैं जन्मक आधारपर अधिकार दैत छल, ओ समाज नब आर्थिक-राजनीतिक परिस्थितिमे ओहि अधिकारक औचित्य पर प्रश्न उठाबय लगैत अछि। तथापि ई बदलाव सामूहिक न्यायमे परिणत होयबाक निश्चितता नहि दैत। एहि अनिश्चिततासँ 'लंका मोहनपुर'क जगत् जन्म लैत अछि।

६. 'लंका मोहनपुर' : विघटनक अवशेषपर नव शोषण

दोसर खण्डक नाममे 'लंका' शब्द अपने-आप विलास, अगाध शक्ति आ विनाशक सांस्कृतिक प्रतिध्वनि उत्पन्न करैत अछि। एहि प्रतिध्वनिसँ कथा पुरान हवेलीक स्मृतिसँ हटि नव अवसरवादी सम्बन्धक मर्म खोलैत अछि। पुरान प्रतिष्ठा टूटलाक बाद रिक्त स्थान बनेबाक अपेक्षा स्वार्थक नब समूह ओकरा भरय लगैत अछि। समाजक शक्ति-सन्तुलन बदलैत अछि, मुदा शोषित लोकक जीवनमे समानता तखनहुँ दूर रहि सकैत अछि।

एकवाली चौधरी, हरिश्चन्द्र मिश्र आ महेश मास्टर सन पात्र एहि परिवर्तित संस्कृतिक विविध पक्ष सूचित करैत छथि। हिनका सभकैं मात्र व्यक्तिगत कपटता अथवा नीतिहीनताक उदाहरण मानलासँ कथाक सामूहिक आलोचना कमजोर पड़त। महत्त्व ई देखब अछि जे नव सामाजिक क्षेत्रमे शिक्षित, प्रभावशाली अथवा संसाधनपर पहुँच रखनिहार लोक पुरान वर्चस्वक स्थान कोन प्रकार लैत छथि। सामन्ती नाम-पदवीक औपचारिक अन्त सामाजिक समानताक प्रमाण नहि बनि जाइत।

७. एकवाली चौधरी, हरिश्चन्द्र मिश्र आ महेश मास्टर : शक्ति-अन्तरणक मध्यस्थ

कृतिक आलोचनात्मक अध्ययनमे ई पात्रसभ महत्वपूर्ण छथि, कारण तकरासँ सामाजिक शक्ति एक व्यक्ति सँ दोसर व्यक्ति धरि मात्र नहि, एक जीवन-पद्धति सँ दोसर जीवन-पद्धति धरि जाइत देखाइत अछि। एकवाली चौधरीक नाम पुरान प्रभुत्वक अनुगूँज रखैत अछि; हरिश्चन्द्र मिश्र आ महेश मास्टर सन पात्र सामाजिक भूमिकाक अलग पहचान उपलब्ध करबैत छथि। बाहरी नाम, पेशा अथवा संस्कार बदललाक बादो अनैतिक लाभक तर्क स्थिर रहि सकैत अछि।

एहि पात्रसभक मूल्यांकनमे प्रत्यक्ष कथासाक्ष्य आ आलोचनात्मक अनुमानक भेद सुरक्षित रखब आवश्यक अछि। ओकर सभक प्रत्येक क्रिया एतय पुनर्कथित करबाक बदला एकर सामूहिक संरचनात्मक भूमिका पर ध्यान देब अधिक सार्थक अछि : शोषणक नब परिस्थितिमे कोन वर्ग लाभक मध्यस्थ बनैत अछि, आ कोन वर्गक श्रम ओ अधिकार अदृश्य होइत अछि? उपन्यासक प्रश्न निजी चरित्र-दोषसँ सामाजिक व्यवस्था धरि एहि प्रकार पहुँचैत अछि।

८. रविक प्रवेश : परिवर्तनक आकांक्षा आ अन्तर्विरोध

रवि नव चेतनाक सम्भावित वाहक रूपमे उभरैत छथि। कथागत अपेक्षा ई बनैत अछि जे ओ सामन्ती पतन आ अवसरवादी नब व्यवस्था दुनूक सीमाकेँ बुझि न्यायपूर्ण सामाजिक विकल्प खोजताह। मुदा रविक अन्तर्विरोध एहि अपेक्षाकेँ गम्भीर चुनौती दैत अछि। ओ पुरान संस्कारसँ मुक्त होयबाक दावा वा अभिलाषा रखितहुँ ओहि संस्कारक हिंसक रूप अपन आचरणमे पुनरुत्पन्न करैत छथि।

रविक कारण उपन्यास सुधारवादी नायकक आसान कल्पनासँ अलग होइत अछि। अन्यायक विरोध करबाक भाषा जाननिहार व्यक्ति स्वयं अन्याय करि सकैत अछि; बदलैत समाजक प्रशंसा करनिहार व्यक्ति अपन निजी जीवनमे सामन्ती पुरुष-अधिकार निभा सकैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ एहि विरोधाभासक महत्त्व बहुतेक अछि, कारण ई पाठककेँ घोषणा आ आचरणक अन्तर बुझाबैत अछि। मुदा कृतिक कसौटी एहि ठाम कठोर सेहो होइत अछि : रविक अन्याय केँ कथा सचमुच अन्यायक रूपमे पहचानैत अछि, अथवा नायकक भविष्यक महानतामे विलीन कऽ दैत अछि?

९. कविता : हिंसाक शिकार स्त्रीक स्वतन्त्र नैतिक अस्तित्व

रवि आ कविताक सम्बन्ध उपन्यासक सभसँ कठिन आ निर्णायक प्रसंग अछि। रवि द्वारा कविताक प्रति कएल गेल बलात्कारकेँ 'प्रेमक भूल', 'यौवनक चूक' अथवा 'सामन्ती संस्कारक अनिवार्य परिणाम' कहि हलुक नहि कएल जा सकैत। सामाजिक संस्कार हिंसाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्पष्ट करैत अछि, मुदा अपराधक नैतिक उत्तरदायित्व मेटबैत नहि। एहि भेदकेँ सुरक्षित राखल बिना कृतिक स्त्री-चित्रणक गंभीर मूल्यांकन सम्भव नहि।

कविता उपन्यासमे केवल रविक प्रायश्चित्तक साधन नहि होयबाक चाही। हुनकर क्षति, भय, प्रतिरोध, निर्णय आ भविष्य अपने आपमे साहित्यिक महत्त्व रखैत अछि। कथा जँ हुनका नायकक आत्मशुद्धिक अवसरक रूपमे अधिक जगह दैत अछि आ स्वतन्त्र मनुष्यक रूपमे कम, तँ ई एक कलात्मक सीमा होएत। समाजशास्त्रीय समीक्षा लेल प्रश्न ई अछि जे कविताक अनुभव कथा-विन्यासमे कतेक स्वायत्तता पबैत अछि। स्त्रीक विरुद्ध हिंसाक सामाजिक आलोचना तखने पूर्ण होइत अछि जखन स्त्रीक आवाज, न्याय आ पुनर्निर्माण ओकर केन्द्रमे रहैत अछि।

१०. यौन-हिंसा आ सामन्ती पुरुषत्व

रवि द्वारा कएल गेल हिंसाकेँ पूर्ववर्ती सामाजिक अध्ययन सामन्ती संस्कारसँ जोड़ैत अछि। ई व्याख्या महत्त्वपूर्ण अछि, कारण सामन्ती सत्ता केवल भूमि आ धनपर अधिकार नहि, स्त्रीक देहपर स्वामित्वक मानसिकतामे सेहो टिकैत अछि। एहन संस्कार व्यक्ति केँ दोसराक इच्छाकेँ गौण मानबाक प्रशिक्षण दैत अछि। सामन्तवादक औपचारिक आर्थिक अवसान एहन पुरुषत्वकेँ स्वतः समाप्त नहि करैत।

मुदा सामाजिक कारणक उल्लेख अपराधक न्यायिक वा नैतिक प्रकृतिमे कमी आनबाक माध्यम नहि बनबाक चाही। आलोचक जँ केवल रविक सामाजिक प्रशिक्षण बुझबैत रहि जाए, तँ कविताक पीड़ा पीछे छूटि जाइत अछि। सही विवेचनमे कारण-व्याख्या आ उत्तरदायित्व दुनू उपस्थित रहबाक चाही। ई द्वैधता 'नवारम्भ'क समस्त नवचेतना-विमर्शक कसौटी बनि उठैत अछि : जे परिवर्तन स्त्रीक सहमति आ गरिमाकेँ सम्मान नहि करैत, ओकरा नब सामाजिक युग कहब कतेक उचित?

११. पलायन : साहसक अभाव अथवा आत्मरक्षाक रणनीति

कविता-संबन्धी हिंसाक बाद रविक गाम छोड़ि जाएबक प्रसंग सामाजिक-नैतिक प्रश्नकेँ तीक्ष्ण बना दैत अछि। पलायन व्यक्ति कैँ तात्कालिक जवाबदेही सँ दूर लऽ जा सकैत अछि, मुदा ओ अतीत कैँ समाप्त नहि करैत। रविक गामसँ दूरी ओकर भीतर संस्कारगत परिवर्तनक विश्वसनीय प्रमाण नहि; ओ दोषक स्वीकृति वा समाधानक विकल्प सेहो नहि।

रवि जहिया वापस अबैत छथि, ताबत गामक परिस्थिति बदलि गेल रहैत अछि। एहि समय-अन्तरालक अर्थ विशेष अछि। समाज व्यक्ति कैँ प्रतीक्षा करैत ठाढ़ नहि रहैत; शक्ति-सम्बन्ध अपना गति सँ बदलैत रहैत अछि। रविक अनुपस्थितिमे घटना-प्रक्रिया चलैत रहलाक कारण ओ अपन जीवनक केन्द्र होयबाक दावा खोइत छथि। नायकत्वक पौरुषपूर्ण मिथ्या आत्मविश्वासकेँ कथा एहि ढंगसँ चुनौती दैत अछि।

१२. वापसी आ सम्पत्तिक प्रश्न : अधिकारबोधक विचित्रता

रविक वापसीक बाद हुनकर सम्पत्ति हड़पबाक योजना बनैत रहबाक उल्लेख आलोचनात्मक साक्ष्यमे भेटैत अछि। ई प्रसंग पुरान सामन्ती समाजक उत्तराधिकार-आधारित अस्मिता आ बदलबैत शक्ति-संबन्धक बीचक तनाव उद्घाटित करैत अछि। सम्पत्तिक अधिकार व्यक्तिक निजी मामला सन देखाइत अछि, मुदा ग्रामीण सामाजिक व्यवस्थामे ओ संसाधनक वितरण, श्रमिकक स्थिति आ समुदायपर नियन्त्रणसँ जुड़ल रहैत अछि।

रवि यदि अपन अधिकारक रक्षा करबामे उदासीन रहैत छथि, तँ ई उदासीनता नैतिक उदात्तता आ निर्णयहीनता दुनूक रूपमे व्याख्यायित भऽ सकैत अछि। अधिकार त्यागब सदैव सामाजिक न्याय नहि, कारण सम्पत्ति ककर हाथमे जाएत, ओकर उपयोग कोना होएत, आ आश्रित वर्गक स्थिति की होएत—ई प्रश्न अनुत्तरित रहि सकैत अछि। साहित्यिक नायकक मूल्यांकन एहि ठाम निजी वैराग्यक अलंकारक बदला सामाजिक परिणामक आधारपर होबाक चाही।

१३. सुधारवादी वक्तव्य आ परिवर्तनक वास्तविक सम्भावना

रवि द्वारा सामाजिक शोषण, क्रान्ति आ गामक सुधारक चर्चा करबाक उल्लेख भेटैत अछि, मुदा हुनकर आचरण ओहि घोषणासँ लगातार मेल नहि खाइत। ई असंगति उपन्यासक

आलोचनात्मक केन्द्र अछि। सुधारवाद जँ मात्र सज्जन व्यक्तिक नेक इच्छापर आधारित रहैत अछि, तँ सामाजिक संरचनामे निहित शोषणक स्रोत बदलब कठिन होइत अछि। नव समाज लेल अधिकारक पुनर्वितरण, समुदायको निर्णयकारी भागीदारी आ सत्ता-विरोधी संगठन आवश्यक अछि।

‘गामक नक्सा बदलि देब’ एक आकर्षक प्रतिज्ञा अछि, मुदा नक्सा बदलयबाक अर्थ पक्की सड़क अथवा भवनक बदलावसँ बेसी होबाक चाही। जातिगत पदानुक्रम, स्त्रीक सामाजिक सुरक्षा, श्रमक मूल्य आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न जसक तस रहलासँ नब रूपमे पुरान दमन जारी रहि सकैत अछि। रविक सुधारवादी भाषा एहि कसौटीपर अधूरी प्रतीत होइत अछि। कृतिक आलोचनात्मक महत्त्व एहि अधूरापनकेँ दृश्य बनाबय मे अछि।

१४. सामन्ती संस्कारक दीर्घायु : व्यक्ति बदलैए, सम्बन्ध नहि

‘नवारम्भ’क समाजशास्त्रीय विवेचनमे ‘संस्कार’ शब्द महत्त्वपूर्ण अछि। समाज केवल कानून, भूमि-व्यवस्था अथवा राजनीतिक पदक जोड़ नहि; ओकर निरन्तरता व्यक्तिक आचरण, आशा, भय आ नैतिक तर्कमे सेहो स्थापित रहैत अछि। सामन्ती व्यवस्था औपचारिक रूपसँ कमजोर भेलाक बादो रविक पुरुष-अधिकारक मानसिकता, सम्पत्ति-संबन्धी अस्थिर व्यवहार आ सामाजिक सुधारक अभिभावकवत् भाषा पुरान संस्कारक अवशेष संकेत करैत अछि।

एहि कारण उपन्यासक वास्तविक परिवर्तन केवल श्रीकान्तक शक्तिक ह्रास नहि। असली प्रश्न अछि जे रवि आ हुनकर सामाजिक वर्ग ओहि असमानतासँ बौद्धिक-मनोवैज्ञानिक दूरी बना पबैत छथि वा नहि। जाति आ लिंगक प्रश्नपर ओहि दूरीक प्रमाण बिना नव आरम्भक घोषणा अविश्वसनीय रहैत अछि।

१५. दलित चेतना : तेसर खण्डक नैतिक केन्द्र

तेसर खण्डमे दलित समुदायक मर्म आ नवचेतनाक उभारक उल्लेख पूर्ववर्ती समीक्षामे विशेष बलसँ कएल गेल अछि। ई मात्र कथा केँ संवेदनापूर्ण बनाबय लेल उपेक्षित पात्रकेँ सोझाँ आनब नहि। जाति-आधारित श्रेणीकरणक विरुद्ध आत्मसम्मान, सामाजिक अधिकार आ सामूहिक चेतनाक प्रश्न उपन्यासक व्यापक परिवर्तन-दृष्टिकेँ नब आधार दैत अछि। सामन्ती ‘गौरव’क

विघटन तखन इतिहासक प्रगति कहल जाएत जखन ओहि व्यवस्थासँ वंचित समूहकेँ अपन भविष्य तय करबाक अधिकार भेटत।

तेसर खण्डक महत्त्व एहि लेल अत्यधिक अछि जे नव आरम्भक दावाकेँ रविक व्यक्तिगत आत्मशुद्धि सँ स्वतन्त्र बनाबैत अछि। यदि समाजक उपेक्षित वर्ग स्वयं सक्रिय ऐतिहासिक पक्ष बनैत अछि, तँ परिवर्तनक वाहक एक सामन्ती उत्तराधिकारी नहि रहि कऽ सामूहिक समुदाय बनैत अछि। एहि दृष्टिसँ तीन खण्डक संरचना नायकक जीवनीसँ बाहर निकलि शक्ति-संबन्धक परिवर्तनक आख्यान बनयबाक सम्भावना प्राप्त करैत अछि।

१६. दलित संवेदना आ दलित राजनीतिक कर्तृत्वक भेद

दलित जीवनक प्रति करुणा आ दलित समुदायकेँ निर्णायक कर्ता मानब दुनू अलग साहित्यिक क्रिया छथि। करुणामूलक चित्रण पीड़ाक तीव्रता व्यक्त करि सकैत अछि, मुदा पीड़ितकेँ स्वयं निर्णयकर्ता मानल गेल बिना सामाजिक न्याय अधूरा रहैत अछि। एहि कारण ‘नवारम्भ’क तेसर खण्डक अध्ययनमे ई देखब निर्णायक अछि जे दलित पात्र स्वयं प्रश्न उठबैत, निर्णय करैत आ समूहगत कार्रवाईमे सहभागी होइत छथि कि नहि।

पूर्ववर्ती आलोचना ‘दलित नवचेतना’क स्फुरण पहिचानैत अछि। एहि पहिचानक गहन विस्तार एहि प्रश्नसँ सम्भव अछि : चेतनाक रूप केवल नैतिक जागरण अछि अथवा संसाधन, सम्मान आ राजनीतिक भागीदारीक नब दावा? एकटा सामाजिक उपन्यासक परिवर्तनकारी शक्ति एहि दूसरे धरातलपर अधिक प्रखर होइत अछि। एतय दलित विमर्श बाहरी सिद्धान्तक आरोपण नहि, कृतिक त्रिखण्डीय अर्थ-विकाससँ निकलैत प्रश्न बनैत अछि।

१७. ‘उत्थान–पतन–पुनर्जागरण’क आलोचनात्मक पुनर्विचार

तीन खण्डक कथा-विकासकेँ उत्थान, पतन आ पुनर्जागरणक क्रममे पढ़बाक प्रचलित पद्धति उपयोगी अछि; मुदा एहि शब्दसभक अर्थ आलोचनात्मक रूपेँ स्थिर नहि। पहिल चरणक उत्थान सामन्ती वर्गक उत्थान अछि, समूचा समाजक नहि। दोसरक पतन केवल पुरान घरानाक गरिमा-ह्रास नहि, आ नव अवसरवादक उभार सेहो अछि। तेसरक पुनर्जागरण जँ दलित समुदायमे केन्द्रित अछि तँ ओ पिछला दुनू चरणक नैतिक सीमा उजागर करैत अछि।

एहि प्रकार कथात्मक क्रम रैखिक प्रगतिक उत्सव नहि, सामाजिक मूल्यांकनक पुनर्व्यवस्था बनि उठैत अछि। जे अतीत ककरो लेल स्वर्णयुग छल, ओ दोसराक लेल शोषणक समय भऽ सकैत अछि। जे वर्तमान पुरान अभिजातक लेल विनाश अछि, ओ वंचित वर्ग लेल विकल्पक उद्घाटन बनि सकैत अछि। भविष्यक 'नवारम्भ' तेँ वर्ग-विशेषक स्मृति सँ ऊपर उठि साझा सामाजिक न्याय पर टिकबाक माँग करैत अछि।

१८. कविता आ रवि : प्रेमक बदला पश्चात्तापक सम्बन्ध

रवि आ कविताक अन्तिम सम्बन्धकेँ प्रेमक सहज पुनर्मिलन मानल नहि जा सकैत। उपलब्ध आलोचनात्मक विवेचनमे ओ सम्बन्ध पश्चात्तापसँ सम्बद्ध कहल गेल अछि। एहि भेदक नैतिक अर्थ गम्भीर अछि। पछतावा अपराध-बोधक सम्भावित आरम्भ भऽ सकैत अछि, मुदा ओ पीड़ितक क्षतिपूर्ति अथवा स्वीकृति अपने-आप प्राप्त नहि करैत। एहिसँ कृतिमे प्रेमक रोमानी निष्कर्षक सम्भावनापर प्रश्न उठैत अछि।

स्त्रीक विरुद्ध हिंसाक बाद सम्बन्धक पुनर्स्थापनाक आलोचनामे 'क्षमा'क विचार सेहो सावधानीसँ बरतबाक चाही। क्षमाक निर्णय केवल पीड़ितक स्वतन्त्र अधिकार होइत अछि। कथा जँ पुरुषक पछतावाकेँ मुख्य उपलब्धि बनबैत अछि, तँ नायिकाक अनुभव गौण पड़बाक जोखिम उपस्थित होइत अछि। दोसर दिस, सम्बन्धक भीतर गहिर दरारक बोध पाठककेँ हिंसाक अपरिवर्तनीय परिणाम समझबैत अछि। एहि नैतिक तनावमे रवि-कविता सम्बन्धक गहर अर्थ खुलैत अछि।

१९. रविक नायकत्व : पूर्ववर्ती समीक्षाक महत्त्वपूर्ण मतभेद

सुधांशु शेखर चौधरी 'हमरा लग रहब?'क प्रणव आ 'नवारम्भ'क रविक तुलनामे रविक चरित्रकेँ अधिक समर्थ मानैत छथि, कारण सत्य प्रकट भेलाक बाद रविमे कम-सँ-कम संघर्ष लेल सन्नद्ध होयबाक प्रवृत्ति देखाइत अछि। एहि तुलनाक महत्त्व एहि ठाम अछि जे साहित्यिक नायकत्व नैतिक निष्कलंकताक बराबर नहि मानल गेल अछि। नायकक असफलताक बीच प्रतिक्रिया आ प्रतिरोधक क्षमता देखल गेल अछि।

मुदा ई प्रशंसाक संग हुनकर आपत्ति सेहो छलनि जे अन्तिम नाटकीयता रविक संघर्षकेँ पर्याप्त रूपेँ पुष्ट नहि करैत आ कृतिक कलात्मक प्रभाव घटबैत अछि। एहि आपत्तिकेँ

गम्भीरतासँ लेब आवश्यक अछि। जे पात्र ऐतिहासिक परिवर्तनक वाहक बनबाक संकेत दैत अछि, ओकर संघर्ष जँ कथानकमे परिणाममूलक रूप प्राप्त नहि करैत, तँ नायकत्वक दावामे रिक्ति रहि जाइत अछि। आलोचनाक असली प्रश्न रवि नायक छथि वा नहि, एहि बाइनरीमे सीमित नहि; कथात्मक संरचना हुनकर सम्भावनाक विश्वसनीय पुष्टि करैत अछि कि नहि, से अछि।

२०. अरुण कुमार झाक समाजशास्त्रीय विवेचन : योगदान आ सीमा

डॉ. अरुण कुमार झा 'मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन'मे उपन्यासक तीन खण्डक सहारे सामन्ती पतन, नव भ्रष्ट सामाजिक संस्कृति आ दलित वर्गक उदीयमान चेतनाक अर्थ स्पष्ट करैत छथि। श्रीकान्त चौधरी, एकवाली चौधरी, हरिश्चन्द्र मिश्र, महेश मास्टर आ रविक भूमिका पर ध्यान दैत ओ वर्गीय असमानता तथा सुधारवादक सीमापर जोर रखैत छथि। हुनकर अध्ययनक मुख्य उपलब्धि ई अछि जे कृतिक घटना-क्रमकेँ सामाजिक परिवर्तनक दीर्घ प्रक्रियासँ जोड़ि देखल गेल अछि।

हुनकर आलोचनामे रवि लेल कठोर नैतिक विशेषण प्रयुक्त भेल अछि। एहन विशेषण पात्रक असफलता प्रति तीव्र असहमति जाहिर करैत अछि, मुदा साहित्यिक मूल्यांकनमे नैतिक निन्दा मात्र पर्याप्त नहि। रविक हिंसा, भय, पलायन आ सुधारवादी भाषा केहन सामाजिक कारणसँ बनैत अछि, ओकर अलग-अलग विश्लेषण अधिक फलदायी अछि। निन्दात्मक भाषा अनचाहे पात्रक मनोवैज्ञानिक जटिलताकेँ सीमित कऽ सकैत अछि। तेँ सामाजिक आलोचनाक न्यायपूर्ण विस्तार लेल उत्तरदायित्वक स्पष्टता आ कारण-दृष्टि दुनू आवश्यक अछि।

२१. उमेश मंडलक संवेदनात्मक पाठ

उमेश मंडल 'मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर' नामक आलेखमे 'नवारम्भ'क तीन खण्डकेँ उत्थान, पतन आ पुनर्जागरणक प्रक्रियासँ जोड़ैत छथि आ तेसर खण्डमे दलितक मर्म तथा संवेदनाक उभार विशेष रूपसँ चिन्हैत छथि। एहि मूल्यांकनसँ रचनाक मानवीय केन्द्रपर ध्यान जाइत अछि। इतिहासक रूपान्तरण केवल संस्थागत घटना नहि, अनुभवक संसार बदलबाक प्रक्रिया सेहो अछि।

तथापि संवेदनाक स्वरकेँ सामाजिक क्रियाशीलतासँ जोड़ि पढ़ब आवश्यक अछि। दलितक पीड़ा देखब एकटा चरण अछि, दलितक अधिकार आ आत्मनिर्णयकेँ कृतिक नब ऐतिहासिक केन्द्र बनबैत देखब दोसर चरण। उमेश मंडलक दृष्टि एहि दूसरे प्रश्नक दिश एक उपयोगी प्रवेशद्वार दैत अछि।

२२. 'नवारम्भ' आ 'हमरा लग रहब?' : प्रणव–रवि तुलनाक औचित्य

प्रभासक तेसर आ चारिम उपन्यासमे नायकक नैतिक आचरणपर उठैत प्रश्न एक सम्भावित साझा सूत्र अछि। 'हमरा लग रहब?'मे प्रणव शोषणक प्रत्यक्षदर्शी होइतहुँ निर्णायक प्रतिरोधसँ दूर रहैत अछि। 'नवारम्भ'मे रवि सामन्ती संस्कारक वाहक बनि स्वयं हिंसा करैत अछि, फेर पलायन, वापसी आ सुधारवादी आकांक्षाक विरोधाभासमे फँसैत अछि। एहि कारण दुनूकेँ समान नैतिक स्थितिक पात्र मानल नहि जा सकैत।

प्रणवक दुर्बलताक केन्द्र अन्याय देखिकऽ पर्याप्त प्रतिक्रिया नहि देब होइत अछि; रविक संकटमे सक्रिय अन्यायक उत्तरदायित्व सेहो शामिल अछि। एहि भिन्नताकेँ मिटा देलासँ तुलनाक अर्थ नष्ट भऽ जाइत अछि। सुधांशु शेखर चौधरीक रविक संघर्ष-सन्नद्धता पर बल उपयोगी अछि, मुदा रविक अपराधक आलोचना ओकरा सँ स्वतन्त्र आवश्यक रहैत अछि। सामाजिक परिवर्तनक साहित्यिक कथा जँ नैतिक उत्तरदायित्वक ई असमान स्तर चिन्हैत अछि, तखनहि ओकर नायक-विवेचन विश्वसनीय बनैत अछि।

२३. पात्रक भाषा आ विचारक भाषाक बीचक दूरी

सामाजिक उपन्यासमे पात्रक कथन लेखकक अन्तिम निर्णय नहि मानल जा सकैत। सामन्ती परम्पराक पक्षमे बजैत व्यक्ति, नब प्रतिष्ठाक आत्मप्रशंसा करैत व्यक्ति आ सुधारक भाषा अपनबैत व्यक्ति—सभ अपन-अपन स्थिति सँ सचक दावा प्रस्तुत करैत छथि। कृतिक आलोचना एहि दावासभक पारस्परिक विरोधसँ विकसित होइत अछि।

रविक सुधारवादी शब्द आ हुनकर व्यवहारक बीचक दूरीक विशेष महत्त्व अछि। यदि उपन्यास एहि दूरीकेँ विडम्बना बनबैत अछि, तँ रचनाक यथार्थवाद सघन होइत अछि। मुदा जे स्थितिमे कथा केवल नायकक भाषणकेँ मान्य मानि लैत अछि, ओतय शिल्पगत दुर्बलता प्रवेश करैत

अछि। संवादक कलात्मक सफलता दावेकेँ पुष्ट करब मात्र नहि, पात्रक आत्मभ्रम उजागर करब सेहो अछि।

२४. कथाकाल आ सामाजिक संक्रमणक गति

तीन खण्डक नाम अलग-अलग कालखंड आ सामाजिक अवस्थाकेँ सूचित करैत अछि। समयक एहि विस्तारसँ लेखककेँ एक घराना, ओकर आसपास बनैत सम्बन्ध आ उपेक्षित समुदायक बदलबैत चेतना केँ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य देबाक अवसर भेटैत अछि। कथा समयक ओही लम्बाईमे व्यक्तिक मानसिक परिवर्तन आ संरचनाक सामाजिक परिवर्तनक गति समान नहि होयबाक संकेत दैत अछि।

रविक पलायन आ वापसी एहि असमान गतिक स्पष्ट बिन्दु अछि। ओ बदलल गाम देखैत छथि, मुदा अपन संस्कारसँ पूर्ण मुक्त भेल छथि कि नहि, ई प्रश्न बचल रहैत अछि। सामाजिक संस्थाक परिवर्तित नक्शा मात्रसँ नैतिक चेतनाक नव जन्म प्रमाणित नहि होइत। समयक रूपात्मक उपयोग एहि द्वैध परिवर्तनकेँ पाठकक सोझाँ रखैत अछि।

२५. यथार्थवादक उपलब्धि : सामाजिक अवशेषक साक्षात्कार

'नवारम्भ'क सामाजिक यथार्थवादक महत्त्व पुरान सामन्ती व्यवस्था समाप्त भेलाक बाद नव अन्याय कियैक पसरैत अछि, से प्रश्न उठायबमे अछि। पतनक बाद रिक्ति उत्पन्न होइत अछि; ओकरा भरय लेल पूर्वसत्ताक संस्कार धारण कएने नव लाभार्थी सोझाँ अबैत छथि। एहि संधिकालमे स्त्रीक देह, दलितक श्रम आ भूमिक अधिकार सामाजिक प्रतिस्पर्धाक लक्ष्य बनि सकैत अछि।

ई उपन्यास परिवर्तनकेँ शुद्धिकरणक एक क्षण नहि, असमान शक्तिसभक लम्बा संघर्षक रूपमे समझबाक अवसर दैत अछि। सामान्य सामाजिक इतिहासमे जे वर्ग उत्तराधिकारी अथवा प्रशासनिक मध्यस्थक रूपमे नाम पबैत अछि, उपन्यास ओकर अन्तर्गत अनैतिक अवसरवाद पहिचानय लेल प्रेरित करैत अछि। तकर साहित्यिक शक्ति एहि विरोधाभासक निर्माणमे निहित अछि।

२६. कलात्मक सीमा : रविक मनोवैज्ञानिक औचित्य आ अन्तक नाटकीयता

रविक चरित्रपर उठल प्रश्न उपन्यासक महत्त्वपूर्ण कलात्मक आलोचना अछि। सामन्ती हिंसामे लिप्त पात्रक सुधारवादी भाषामे प्रवेशक मनोवैज्ञानिक मार्ग कतेक स्पष्ट अछि? ओकर अपराधबोध केहन क्रियामे परिणत होइत अछि? संघर्षक घोषणा तथा वास्तविक संघर्षक बीच कथात्मक सेतु कतेक विश्वसनीय बनैत अछि? एहि सभ प्रश्नक उत्तर उपन्यासक संरचनात्मक सफलता निर्धारित करैत अछि।

सुधांशु शेखर चौधरी द्वारा अन्तिम नाटकीयताक सीमा चिन्हबाओल गेल अछि। ई आलोचना स्वीकार करबाक संग एहो ध्यानमे राखब आवश्यक जे नायकक अपूर्णता अपने-आप त्रुटि नहि। उपन्यास यथार्थक विरोधाभास देखेबाक लेल कखनो संकल्प आ परिणामक बीच दूरी बनौने रखि सकैत अछि। समस्या तखन होइत अछि जखन पात्रक बदलैत निर्णयक पर्याप्त कथात्मक औचित्य नहि मिलैत। एहि कारण रविक असफलता आ लेखकक शिल्पगत असफलताकेँ समानार्थी मानब उचित नहि।

२७. दलित नवचेतनाक सीमा : प्रतिनिधित्वक प्रश्न

तेसर खण्डमे दलित चेतनाक उभारक आलोचनात्मक उल्लेख कृतिक सामाजिक महत्त्व रेखांकित करैत अछि। मुदा शोषित समुदायक साहित्यिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न एहि ठाम समाप्त नहि होइत। के कथा कहैत अछि? दलित अनुभवकेँ ककर नजरिसँ देखाओल गेल अछि? परिवर्तित समाजक निर्णयकर्ता के बनैत अछि? एहन प्रश्न उपन्यासक लोकतान्त्रिक सम्भावना परखबाक मानदण्ड अछि।

दलित संवेदनाकेँ केवल उच्चवर्गीय नायकक नैतिक जागरणक पृष्ठभूमि बना देलासँ उपेक्षितक इतिहास फेर बाहरी दृष्टिमे सीमित भऽ जाएत। कृतिक त्रिखण्डीय योजनामे तेसर खण्डक स्वायत्त महत्त्व एतय अछि जे ओ कथाक केन्द्र बदलबाक क्षमता रखैत अछि। सामाजिक ‘नवारम्भ’क अर्थ दलित समुदायक अपन कर्तृत्वसँ निर्धारित होएबाक चाही, नहि तँ रचना फेर एकटा अभिभावकवत् सुधारवादमे घुमि आएत।

२८. समकालीन अर्थ : नव राज, पुरान असमानता

सामन्ती सत्ता हटलाक बाद लोकतान्त्रिक संस्थाक विस्तार भेल, मुदा जातिगत असमानता, लिंग-आधारित हिंसा आ राजनीतिक संरक्षणक संस्कृति अनेक रूपमे जीवित रहि सकैत अछि। 'नवारम्भ' एहि निरन्तरताक साहित्यिक बोध देबाक क्षमता रखैत अछि। नव भाषा, नव पदवी, नव योजना आ नव राजनीतिक नेतृत्व अपने-आप समाजक नैतिक जन्मक प्रमाण नहि।

कृतिक समकालीन पुनर्पाठ एहि लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे रविक सुधारवादी दावाक तुलना सामाजिक न्यायसँ कएल जा सकैत अछि। स्त्रीक सहमति, जातिगत गरिमा आ संसाधनपर न्यायपूर्ण पहुँच यथार्थ परिवर्तनक कसौटी अछि। जखन नव व्यवस्था एहि कसौटीपर खरी नहि उतरैत, तखन 'नवारम्भ' शब्द उपन्यासमे प्रश्नवाचक व्यंग्यक अर्थ सेहो ग्रहण करैत अछि।

२९. प्रभासक उपन्यास-यात्रामे कृतिक विशिष्टता

'अभिशप्त'मे मध्यवर्गीय दाम्पत्य आ पुरुष-अहं, 'युगपुरुष'मे सार्वजनिक महानताक व्यंग्य, आ 'हमरा लग रहब?'मे सामन्ती प्रभाव, शोषण तथा नायकक निष्क्रियता साहित्यिक चिन्ताक विविध आधार प्रस्तुत करैत अछि। 'नवारम्भ' एहि प्रसंगसभकेँ इतिहासक अधिक विस्तृत फलकपर एकत्र करैत अछि। एक घरानाक उत्थान-पतन सँ दलित समुदायमे नवचेतना धरि पहुँचबाक संरचना कृतिक विशिष्टता अछि।

एहि विस्तारमे उपन्यासक दृष्टि व्यक्ति-केन्द्रित नैतिक संकटसँ सामूहिक सामाजिक पुनर्रचनाक प्रश्न धरि बढ़ैत अछि। मुदा रविक चरित्र पाछाँ छोड़ि देब नहि, बल्कि अपन सामन्ती संस्कारक कारण ऐतिहासिक बदलावकेँ जटिल बनबैत अछि। एतय प्रभासक सामाजिक यथार्थवादक महत्त्वपूर्ण द्वन्द्व अछि : पुरान वर्चस्व समाप्त होइतहुँ ओकर मानवीय वाहक नब समाजक निर्माणमे उपस्थित रहैत छथि।

३०. निष्कर्ष : सचमुच नव शुरुआतक शर्त

'नवारम्भ' सामन्ती अतीतक स्मरण, ओकर पतनक विडम्बना आ दलित चेतनाक उभारकेँ एकहि कलात्मक इतिहासमे जोड़बाक महत्त्वाकांक्षी उपन्यास अछि। 'हवेली मोहनपुर' सँ 'लंका मोहनपुर' आ 'नवारम्भ' धरि यात्रा केन्द्रीय रूपसँ सत्ता आ नैतिकताक बदलैत सम्बन्धक यात्रा

अछि। श्रीकान्त चौधरी पुरान मर्यादाक रक्षक छथि; एकवाली चौधरी, हरिश्चन्द्र मिश्र आ महेश मास्टर नव अवसरवादी सामाजिक क्षेत्रक प्रतिनिधि; रवि असफल सुधारक नायकक रूपमे सामन्ती संस्कारक निरन्तरता जगजियार करैत छथि; कविता हिंसाक परिणामक जीवित नैतिक साक्ष्य बनैत छथि।

कृतिक उपलब्धि नब समाजक उदयकेँ पूर्व-निर्धारित विजयक रूपमे नहि, अनैतिक विरासतसँ जूझैत प्रक्रियाक रूपमे समझबाक अवसर दैत अछि। रविक कविताप्रति अपराध, ओकर पलायन, वापसी तथा पश्चात्तापक छायामे चलैत सम्बन्ध देखबैत अछि जे व्यक्तिक सुधारक भाषा अहिंसक आ समानतामूलक व्यवहारक विकल्प नहि। दलित नवचेतना एहि सीमाकेँ पार करैत सामूहिक कर्तृत्वक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि।

तथापि उपन्यासक शिल्पपर प्रश्न बचल रहैत अछि : रविक नैतिक परिवर्तनक मनोवैज्ञानिक आधार, हिंसाग्रस्त स्त्रीक स्वतन्त्र आवाजक स्थान, तथा अन्तिम नाटकीयताक सामाजिक औचित्य। एहि सीमाक आलोचनाक बावजूद कृतिक विशिष्ट साहित्यिक महत्त्व अक्षुण्ण अछि। ‘नवारम्भ’ पाठककेँ ई समझबैत अछि जे नव युगक घोषणा पुरान हवेलीक पतनसँ नहि, वंचित मनुष्यक गरिमा, स्त्रीक स्वायत्तता आ सामाजिक न्यायकेँ व्यवहारमे प्रतिष्ठित करबासँ सार्थक होइत अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

चौधरी, प्रभास कुमार। ‘नवारम्भ’। प्रभास समग्र (उपन्यास)। सम्पादक डॉ. वन्दना चौधरी। पिंडारुछ, दरभंगा : ज्योत्सना प्रकाशन, २०१७।

झा, अरुण कुमार। मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन। पुणे : कृपा-दृष्टि पब्लिकेशन्स। ISBN 978-81-19149-27-8।

मंडल, उमेश। ‘मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर’। विदेह, अंक ७४, १५ जनवरी २०११, भाग चारि। https://videhajournal.blogspot.com/2011/01/part-iv_31.html

चौधरी, सुधांशु शेखर। ‘नवारम्भ’ सम्बन्धी पुस्तक-परिचय। मिथिला मिहिर, ६ मई १९७९। अरुण कुमार झाक उपर्युक्त अध्ययनमे चर्चित।

मैथिली जिन्दाबाद। ‘प्रभासोत्सव पर साहित्यिक समागम—देश भरि सँ जुटला दिग्गज साहित्यकार’। २३ फरवरी २०१७। https://maithilijindabaad.com/?p=7696

विदेह—प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका। ‘प्रभास कुमार चौधरी : साहित्यिक परिचय एवं कृति-सूची’।
https://videha-ejournal.github.io/videha/ratna.htm

५. ‘राजा पोखरिमे कतेक मछरी?’ : लोककथाक प्रतिरोध, भास्करक सांस्कृतिक त्रासदी आ सामन्ती समाजक नैतिक विघटन

प्रभास कुमार चौधरीक उपन्यासक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

सारांश

प्रभास कुमार चौधरीक ‘राजा पोखरिमे कतेक मछरी?’ आधुनिक मैथिली उपन्यासक ओहि विचारोत्तेजक प्रवृत्तिक उदाहरण अछि, जाहिमे सामाजिक अन्यायक प्रतिरोधक सम्भावना आ प्रतिरोधी व्यक्तिक पराजय एकहि कथात्मक संसारमे उपस्थित अछि। कथाक उपलब्ध आरम्भिक प्रसंगमे भास्कर अपन दादीसँ कठरी बाबाजीक लोककथा सुनैत अछि। सतत मारि सहितो चोरीक बाट रोकनिहार बाबाजीक अडिग प्रश्न बालक भास्करक भीतर न्यायबोध, सत्यक खोज आ नैतिक साहसक बुनियाद रखैत अछि। एहि लोककथाक बाद प्रस्तुत सामन्ती परिवारक वंशवृत्त, वैभव, स्त्रीपर अधिकारक हिंसक संस्कार आ पारिवारिक विभाजन जनजीवनक असमान संरचना उद्घाटित करैत अछि। भास्करक अल्प जीवनमे विश्वविद्यालय आ सार्वजनिक संस्थासभक अनैतिकतासँ टकराव एहि आरम्भिक नैतिक शिक्षाक कठिन ऐतिहासिक परीक्षा बनैत अछि। प्रकाशित आलोचनामे जुम्मन, ब्रह्म आ महेन्द्र सन पात्र सामाजिक दमन तथा उत्तरदायित्वक विभिन्न रूपसँ जोडल गेल छथि। शीर्षकक राजा, पोखरि आ मछरीक बिम्बकेँ सत्ता, सीमित जीवन-स्थान आ गणनायोग्य प्रजाक प्रश्नक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि, यद्यपि ई व्याख्यात्मक सम्भावना थिक, कथाक प्रत्यक्ष विवरण नहि। एहि आलेखमे लोककथा-अन्तःस्थापन, बाल्यजिज्ञासा, सामन्ती वंशवृत्त, शोषण, प्रतिरोध, संस्थागत संकट, चरित्र-निर्माण, त्रासदी आ पूर्ववर्ती आलोचनासँ संवादक विश्लेषण कएल गेल अछि। कृतिक प्रमुख उपलब्धि अन्यायक सोझाँ नैतिक अडिगता रक्षणक कठिनाईकेँ मार्मिक बनायब अछि; ओकर आलोचनात्मक चुनौती ई प्रश्न अछि जे भास्करक क्षतिक उत्तरदायित्व केवल व्यक्तिगत दुष्टतापर नहि, समाजक व्यापक मौन आ शक्तिसंरचनापर केना निर्धारित होय।

मुख्य शब्द : राजा पोखरिमे कतेक मछरी, प्रभास कुमार चौधरी, भास्कर, कठरी बाबाजी, जुम्मन, ब्रह्म, महेन्द्र, लोककथा, सामन्तवाद, सामाजिक प्रतिरोध, सांस्कृतिक त्रासदी

१. प्रस्तावना : प्रश्नसूचक शीर्षक आ सत्ताक भाषा

‘राजा पोखरिमे कतेक मछरी?’ सुनितहि एक विचित्र विरोध सोझाँ अबैत अछि। पोखरि जलक जीवनक्षेत्र अछि, मुदा शीर्षकमे पोखरिक पहिचान ‘राजा’क संग जुड़ल अछि। जलाशयक भीतर मछरीक संख्या के गनैत अछि? ओ संख्या जानबाक इच्छाक कारण की अछि? मछरीसभक जीवनकेँ ककर अधिकारक अन्तर्गत बुझल जाइत अछि? ई प्रश्न कृतिक शीर्षककेँ सरल ग्रामीण कौतूहलसँ व्यापक सामाजिक व्यंजना दिस लऽ जाइत अछि।

राजा नामक सत्ता-चिह्न आ मछरी नामक अपेक्षाकृत असुरक्षित जीव-जगतक बीच असमानता देखल जा सकैत अछि। एहि बिम्बक एक सम्भावित आलोचनात्मक अर्थ ई अछि जे शक्तिशाली व्यक्ति प्रजाकेँ स्वतन्त्र जीवनवाला मनुष्यक बदला गनल जा सकयवला वस्तु मानि लैत अछि। मुदा एहि व्याख्याकेँ उपन्यासक प्रत्यक्ष कथन घोषित नहि करबाक चाही; एकरा शीर्षकक अर्थ-सम्भावनाक रूपमे बुझब अधिक सटीक अछि। कृतिक प्रमाणित कथासंसारमे सत्ता आ असुरक्षाक संघर्ष एहि पठनकेँ वैचारिक आधार दैत अछि।

२. कथाक प्रारम्भमे लोककथा : अलग कथा, साझा नैतिक संसार

उपन्यासक उपलब्ध आरम्भक उल्लेखनीय विशेषता दादी द्वारा सुनाओल कठरी बाबाजीक कथा अछि। अन्हार रातिमे चोरी करबाक लेल निकलल चोरसभक बाटमे बाबाजी प्रश्न पूछैत छथि। चोरीक अभियानमे बाधा उत्पन्न होइत अछि; चोर हिंसक प्रतिक्रिया दैत छथि। परन्तु चोट सहलाक बादो बाबाजी प्रश्न करब बन्द नहि करैत। एहि छोट लोकवृत्तान्तमे प्रतिरोधक असाधारण रूप विकसित होइत अछि : बाहुबल अथवा अस्त्रक प्रयोग नहि, बल्कि गलत क्रियाकेँ सार्वजनिक रूपेँ पहिचानबाक निर्भीक आग्रह।

लोककथा एतय सजावट नहि। ई भास्करक बचपनक नैतिक संसारक प्रथम सूत्र बनैत अछि। रचनाक मुख्य कथा शुरु होयबाक पहिने एक प्रश्न स्थापल जाइत अछि—सत्य बोलयवला व्यक्तिकेँ मारल जाय, तँ ओ अपन प्रश्न छोड़ि देत कि नहि? एहि प्रश्नक पुनरावृत्ति भास्करक परवर्ती जीवनक सामाजिक संघर्षक पूर्वाभासक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

३. कठरी बाबाजी : हिंसामे सेहो प्रश्नक निरन्तरता

कठरी बाबाजीक सन्दर्भमे सर्वाधिक चकित करनिहार बात ई नहि जे हुनका मारल जाइत अछि, बल्कि ई जे मारल गेलोपर हुनकर प्रश्न जिअल रहैत अछि। चोरसभ हुनका डरेबाक, अपना संग लऽ जाएबाक आ चुप करयबाक भिन्न प्रयास करैत छथि। मुदा बाबाजी अपन साधारण जिज्ञासाकेँ त्यागैत नहि। अपराधक मार्गमे बारम्बार उपस्थित प्रश्न अन्ततः अपराधीसभक आत्मविश्वास तोड़ैत अछि।

कठरी बाबाजीक प्रतीकमे अहिंसक प्रतिरोधक एक चरम रूप देखल जा सकैत अछि। ओ प्रतिशोधक जालमे प्रवेश नहि करैत; प्रश्नक सार्वजनिक परिणाम अपराधीपर पड़ैत अछि। कथा ओहि लोकक आश्चर्यजनक नैतिक क्षमता देखबैत अछि, जकरा मारल जा सकैत अछि, मुदा अनैतिकताक स्वीकृति लेल बाध्य नहि कएल जा सकैत। बाबाजीक 'कठरी' होयबाक अर्थ शरीर सचमुच निर्जीव होयब नहि, हिंसाक सोझाँ आत्मिक अडिगताक लोककल्पना मानल जा सकैत अछि।

४. चोरसभक 'शगुन' : अपराधक अपन नैतिक व्याकरण

चोरसभक व्यवहारमे एक सूक्ष्म सामाजिक विडम्बना अछि। ओ चोरी करबाक अभियानकेँ 'शगुन'क भाषा सँ जोड़ैत छथि। अपराध स्वयं अशुभ नहि मानल जाइत; अपराधक बाटमे प्रश्न पूछल जाएब अशुभ मानल जाइत अछि। एहि उलटबाँसीसँ मनुष्यक आत्म-औचित्य रचबाक क्षमता उद्घाटित होइत अछि। जे काज समाजक दृष्टिमे गलत अछि, ओकर कर्ता अपनहि आचरण लेल अलग अनुष्ठान, तर्क आ शुभ-अशुभक व्यवस्था गढ़ि लैत अछि।

ई लोककथा उपन्यासक व्यापक सामाजिक संसार सँ एही कारण जुड़ैत अछि। सामन्ती प्रभुत्व, संस्थागत पक्षपात आ अनैतिक सुविधाक संसार सेहो अपन व्यवहारकेँ सम्मान, परम्परा अथवा व्यवस्था-रक्षाक नाम दऽ सकैत अछि। कठरी बाबाजीक प्रश्न एहि आत्मनिर्मित औचित्यक एकदम विपरीत थिक। बाबाजी कोनो पैघ सिद्धान्त नहि बखानैत छथि; हुनकर प्रश्न अनैतिक कर्मक छुपल नामकेँ उजागर करैत अछि।

५. दादी आ भास्कर : मौखिक परम्पराक अन्तर्गत नैतिक शिक्षा

कठरी बाबाजीक कथा दादी सुनबैत छथि आ भास्कर ओकर अर्थ बुझय चाहैत अछि। एहि संरचनामे लोकस्मृति आ बाल्यजिज्ञासाक सजीव सम्पर्क अछि। दादी परम्परा द्वारा प्राप्त कथा अगिला पीढ़ी धरि पहुँचबैत छथि; भास्कर ओहि कथाकेँ निष्क्रिय श्रद्धासँ स्वीकार नहि करैत। ओ प्रश्न करैत अछि जे बाबाजी यदि काठक छलाह, तँ हुनकर देहसँ रक्त कियैक बहल आ चोट कियैक लागल? एहि प्रश्नमे लोककथाक अलौकिक भाषा आ बालकक अनुभवजन्य तर्कक बीच टकराव उपस्थित अछि।

दादीक उत्तर एतय निर्णायक अछि। ओ बालकक प्रश्नकेँ केवल हँसीमे टारैत नहि, अपितु मनुष्यक देह आ आत्मिक अजेयतामे भेद करैत छथि। एतय कहानी परम्परागत भक्तिभावक विषय रहि नहि जाइत; ओ न्याय, साहस आ सत्यभाषणक कठिन शिक्षा बनैत अछि। भास्करक बचपनमे युक्तिबोध आ करुणा अलग नहि, एक-दोसराकेँ समर्थ बनबैत अछि।

६. बालकक प्रश्न : श्रद्धाक पुनर्व्याख्या

भास्कर प्रश्न करबाक साहस रखैत अछि। दादीक कथा सुनलाक बाद ओकर जिज्ञासा कठरी बाबाजीक पीड़ाक शारीरिक यथार्थ पर टिकैत अछि। एहि प्रश्नसँ रचनामे ज्ञानक दू रूपक संवाद होइत अछि—लोककथा द्वारा रूपायित नैतिक अर्थ आ बालक द्वारा पूछल गेल तथ्यात्मक सम्भावना। बालक एहि दुनूक संगति खोजैत अछि।

एहि दृष्टिसँ उपन्यासक आरम्भ अन्धश्रद्धाक प्रशंसा नहि। नैतिकता तर्कसँ विरोधी होयब आवश्यक नहि, ई सम्भावना दादी-भास्कर संवादमे विकसित होइत अछि। सचक खोज करनिहार व्यक्तिक भविष्यक जीवनमे संस्थागत अनैतिकतासँ टकराव एही प्रारम्भिक जिज्ञासाक विस्तार बनि सकैत अछि। शिशु-प्रश्न जखन समाजक बड़े प्रश्नमे परिणत होइत अछि तखन उपन्यास अपन आकार प्राप्त करैत अछि।

७. दादीक रात्रि-परिवेश : घर, स्मृति आ कथाक ताप

कथा-श्रवणक परिवेश जाड़क राति, दादीक स्नेह आ घरक आगिक संग जुड़ल अछि। एहि स्थानमे लोककथा भयमुक्त स्नेहक भीतर सुनाओल जाइत अछि, जखन कि ओकर विषय हिंसा

आ प्रतिरोध अछि। रचनाक ई विरोधाभास महत्त्वपूर्ण अछि : बालक एक सुरक्षित देहगत निकटतामे अन्यायक संसारक प्रथम नैतिक बोध प्राप्त करैत अछि। घर आ बाहरक दुनू क्षेत्रक बीच कथा पुल बनबैत अछि।

दादीक सम्बन्धेँ भास्करक प्रश्न निषिद्ध नहि बनैत; ओ प्रश्नक विकसित होयबाक अवसर पबैत अछि। एहि स्नेहमय वातावरणक अर्थ बादक सामाजिक जीवनक कठोरतासँ तुलना करिते अधिक गहिर होइत अछि। जकर प्रारम्भिक शिक्षा न्यायपर प्रश्न करब अछि, ओकरा लेल अनैतिक संस्थासँ समझौता करब असहज होयब स्वाभाविक अछि।

८. सामन्ती परिवारक घर : स्थापत्यक सामाजिक अर्थ

उपलब्ध कथाअंशमे भास्करक परिवारक घरक विस्तृत विवरण भेटैत अछि। आँगनक चारू कात घर, भाइसभक बीच बँटवारा, अलग भंडार, रसोई तथा दालानक निर्माण केवल स्थापत्यक विवरण नहि। एहि संरचनामे अधिकारक विभाजन आ परिवारक स्मृति सुरक्षित अछि। घरक कोठरीसभ वंशक बदलैत सम्बन्धक भौतिक चिह्न बनैत अछि।

गामक सामन्ती परिवारमे घर केवल निवास नहि, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा आ लोकसम्पर्कक संस्था सेहो अछि। विभाजनक बाद कोठरीक उपयोग बदलैत अछि, मुदा पुरान सामाजिक क्रमक स्मृति जीवित रहैत अछि। दालान जनसमागमक स्थल बनि परिवारक सार्वजनिक वर्चस्वकेँ अलग रूप दैत अछि। एहि कारण घरेलू भूगोल पढ़लासँ सत्ता-संबन्धक इतिहासक अंश बुझि पड़ैत अछि।

९. महारुद्र चौधरीक वैभव : प्रतिष्ठा आ भयक संगति

कथाक उपलब्ध आरम्भमे महारुद्र चौधरी सामन्ती प्रतिष्ठा आ रसिक जीवनक प्रतीकक रूपमे सोझाँ अबैत छथि। नाच-गानक सार्वजनिक आयोजन, धनक वैभव आ सामाजिक प्रभाव एक संग चित्रित अछि। मुदा एहि बाहरी सांस्कृतिक गौरवक संग भय आ स्त्रीक प्रति अधिकारक हिंसक प्रवृत्ति सेहो जुड़ल अछि। तें लेखकक प्रस्तुत संसारमे ‘रसिकता’केँ स्वतः सभ्यता अथवा नैतिक उदारताक प्रमाण मानि नहि सकैत छी।

सामन्ती वर्चस्वक एक विशिष्ट गुण ई होइत अछि जे हिंसा आ प्रतिष्ठा एकहि सामाजिक व्यक्तित्वक दू पक्ष बनि जाइत अछि। शक्तिशालीक ‘महिमा’ कहनिहार समाज ओकर

अत्याचारकेँ स्मृतिक किनारामे धकेलि सकैत अछि। महारुद्र चौधरीक रूपायित पुरान जगत् एहि चयनात्मक स्मृतिक आलोचना करबाक अवसर दैत अछि।

१०. कुलीनता, विवाह आ वंशक राजनीतिक अर्थ

वंशक वर्णनमे विवाह-सम्बन्धक सामाजिक अर्थ विशेष महत्त्व रखैत अछि। कुलीन ब्राह्मण परिवारसँ सम्बन्ध स्थापित करबाक इच्छा सामन्ती घरानाक दर्जा आ सामाजिक स्वीकार्यता सँ जुड़ल देखाइत अछि। विवाह एतय केवल पारिवारिक प्रसन्नताक विषय नहि, प्रतिष्ठा अर्जित करबाक संस्थागत उपाय बनि सकैत अछि। उच्च कुलक दावा आ आर्थिक शक्ति मिलि असमान सम्बन्धकेँ वैधता देबाक प्रयास करैत अछि।

घरानाक भीतर अनेक विवाह, कन्यादान, बँटवारा आ बसोबासक विवरणसँ देखल जा सकैत अछि जे व्यक्तिक निजी जीवन कतेक गहिराईसँ सामुदायिक श्रेणीकरणक अधीन छल। वैवाहिक सम्बन्धक आयोजनमे स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छा कतबा स्थान पबैत अछि, ई प्रश्न एहि संसारक सामाजिक आलोचनामे आवश्यक अछि। वंशक इतिहास जखन केवल पुरुषक सम्पत्ति-उत्तराधिकारक नाम होइत अछि तखन स्त्रीक अनुभवक इतिहास ओझराइ जाइत अछि।

११. विधवा-रसोईक पृथक्करण : देह, शुचिता आ नियन्त्रण

घरक विवरणमे विधवासभक लेल अलग रसोईक व्यवस्था महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संकेत अछि। भोजनक विधि, शुचिताक बोध आ वैवाहिक स्थितिक आधारपर बनल स्थानिक विभाजन स्त्रीक देह आ दैनिक जीवनपर परम्परागत नियन्त्रणक रूप बुझल जा सकैत अछि। एहि ठाम सामाजिक श्रेणीकरण केवल बाहरी गामक व्यवस्था नहि, रसोई आ भोजनक अन्तरंग व्यवहार धरि उपस्थित अछि।

रसोईक पृथक्करण समाजक स्मृतिमे 'रीति' कहल जाए, मुदा आलोचनात्मक पाठमे ई पूछब आवश्यक अछि जे समान परिवारक भीतर स्त्रीक जीवन पर अलग-अलग नियम किन अधिकारसँ लागू होइत अछि। अन्न, आगि आ घर सन जीवनोपयोगी वस्तु सभ सेहो सामाजिक सत्ता सँ मुक्त नहि। लेखकक विस्तृत घरेलू वर्णन एहि सूक्ष्म श्रेणीकरणकेँ चिन्हबाक स्रोत बनैत अछि।

१२. भास्कर : अन्यायक विरुद्ध बाल्यसंस्कार आ वयस्क संसार

प्रकाशित समाजशास्त्रीय आलोचनामे भास्करकेँ उपन्यासक नायक मानल गेल अछि। ओकर जीवन अल्प मुदा अनेक सामाजिक क्षेत्रसँ सम्पर्क करनिहार बताओल गेल अछि। एहि आकलनक संग कथाक बाल्य-अंश मिलौलासँ नायकक एक मूल द्वन्द्व उभरैत अछि : जे बालक कठरी बाबाजीक नैतिक जिज्ञासासँ प्रभावित होइत अछि, से यौवनमे अनैतिक सार्वजनिक संस्थासभसँ टकराइत अछि।

भास्करकेँ आदर्शीकृत महानायक मानि लेब ओकर त्रासदीक जटिलता घटाएत। ओकर सत्यसंधता सामाजिक सम्बन्धक भीतर कितेक सहारा पबैत अछि? अन्याय जानलाक बाद ओ केहन विकल्प चुनैत अछि? सामाजिक अलगाव आ नैतिक प्रतिरोधक सीमा कतय अछि? एहि प्रश्नसभ पर विचार करब उपन्यासक सम्भावित केन्द्रीय संरचनाकेँ उजागर करैत अछि।

१३. भास्करक मृत्यु : व्यक्तिक अन्त कि विचारक क्षति

प्रकाशित आलोचनामे भास्करक जीवनकेँ अकाल विनाशक कथा कहि चिन्हल गेल अछि। ई क्षति केवल एक पात्रक निजी भविष्यक छीनल जाएब नहि; समाजमे स्वस्थ, न्यायप्रिय जीवनक जे सम्भावना छल, ओकर नष्ट होयब सेहो अछि। एहि अर्थमे भास्करक परिणतिमे करुणाक संग सांस्कृतिक शोकक स्वर उपस्थित अछि।

मुदा भास्करक क्षतिपर केवल भावुक शोक व्यक्त कएलासँ सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रश्न बचि जाइत अछि। जँ ओकर जीवन संस्था आ सम्बन्धक अनैतिक दबावमे टूटैत अछि, तँ संकट केवल ‘भाग्य’क नहि। ई ओहि परिस्थितिक परिणाम अछि जाहिमे नैतिक दृढ़ता रखने व्यक्ति स्वयं असुरक्षित बनि जाइत अछि। उपन्यास पाठकसँ अनायासे ई पूछैत अछि जे भास्करक विनाशक लेल दंडित कोन व्यक्ति नहि, बदलय योग्य कोन व्यवस्था जिम्मेवार अछि।

१४. विश्वविद्यालयक संसार : आधुनिक शिक्षाक नैतिक परीक्षा

भास्करक जीवनसँ सम्बद्ध प्रकाशित विवेचनमे विश्वविद्यालयक वातावरणमे अन्याय आ अनैतिकता भेटबाक चर्चा अछि। ई प्रसंग अत्यन्त अर्थवान अछि, कारण विश्वविद्यालय सामान्यतः ज्ञान, जिज्ञासा, तर्क आ स्वतन्त्र चिन्तनक संस्था मानल जाइत अछि। कथाक

आरम्भिक भास्कर स्वयं प्रश्न करनिहार बालक अछि; जँ ओहि प्रश्नशील व्यक्तिकेँ ज्ञानक संस्थामे अन्याय देखय पड़ैत अछि, तँ आधुनिक शिक्षाक घोषित आदर्श आ वास्तविक व्यवहारक बीच गहिर दूरी खुलैत अछि।

एहि संस्थागत आलोचनाकेँ 'सभ विश्वविद्यालय भ्रष्ट छथि' सन सामान्य निष्कर्षमे बदलि देब उचित नहि। उपन्यासक प्रश्न ई अछि जे जखन शक्ति ज्ञानपर हावी होइत अछि, तखन सत्यसंध व्यक्तिक स्थान की रहि जाइत अछि। विश्वविद्यालयक परिसरमे अवसर, प्रतिष्ठा, अनुशासन आ संस्थागत संरक्षणक बँटवारामे अन्याय सम्भव अछि—ई सामान्य सामाजिक चिन्ता कथाक भास्कर प्रसंगसँ सुसंगत होइत अछि।

१५. राज्यसत्ता आ आधुनिक गणतन्त्रक विडम्बना

समाजशास्त्रीय आलोचना भास्करक सम्पर्कमे आएल आधुनिक गणतान्त्रिक व्यवस्था आ शिक्षा-संस्थाक अनैतिक संसारक उल्लेख करैत अछि। सामन्ती घरानाक इतिहासक बाद आधुनिक संस्थाक ई प्रवेश कथाक राजनीतिक अर्थ गहिर करैत अछि। राजपदक पुरान प्रतीक हटलाक बादो यदि अत्याचार नब वैधताक नामपर चलैत अछि, तँ प्रजाक गरिमा अपने-आप सुरक्षित नहि होइत।

एहि दृष्टिसँ सामन्ती वंशक कथा आ आधुनिक संस्थाक कथा परस्पर असम्बद्ध नहि। दुनू ठाम प्रश्न अधिकारक मनमानी आ उत्तरदायित्वक अभावक अछि। कृतिक ऐतिहासिक महत्त्व एहि सम्भावित निरन्तरतामे अछि : राज्यक नाम बदलैत अछि, नियम बदलैत अछि, मुदा अन्यायसँ लाभान्वित लोक अपन प्रभाव बचौने रखि सकैत छथि। भास्करक प्रतिरोध एही निरन्तरताक विरोधमे अर्थवान बनैत अछि।

१६. कठरी बाबाजी आ भास्कर : नैतिक सूत्रक समानता आ भिन्नता

कठरी बाबाजी आ भास्करक बीच एक सशक्त प्रतीकात्मक सम्बन्ध स्थापित करि सकैत छी। बाबाजी चोरसभक बाटमे प्रश्न करैत रहैत छथि; भास्कर समाजक अनेक क्षेत्रमे अनैतिक व्यवहार स्वीकार नहि करबाक स्थिति धरि पहुँचैत अछि। दुनूकेँ दबाव सहय पड़ैत अछि। मुदा लोककथाक बाबाजी अविनाशी धैर्यक चरम प्रतीक बनैत छथि, जखन कि भास्कर ऐतिहासिक-सामाजिक परिस्थितिमे कमजोर पड़ि सकनिहार मनुष्यक रूपमे चित्रित छथि।

एहि भिन्नताक महत्त्व उपन्यासक त्रासद संरचनामे अछि। लोककथामे अडिग प्रश्न अपराधीकेँ थकाबि दैत अछि; सामाजिक यथार्थमे प्रश्न करनिहार व्यक्तिकेँ अपन जीवनक मूल्य चुकाबय पड़ि सकैत अछि। अतः लोककथा एक नैतिक आदर्श स्थापित करैत अछि, आ भास्करक अनुभव ओहि आदर्शक यथार्थगत सीमा सोझाँ अनैत अछि। लेखकक कथात्मक कौशल एहि विरोधाभासक निर्माणमे खोजल जा सकैत अछि।

१७. जुम्मन : मानवताक अपूर्व सम्भावना

प्रकाशित आलोचनामे जुम्मनक चरित्रकेँ मानवीय उदारता आ दूसरेक जीवनक रक्षा करबाक आकांक्षासँ जोड़ल गेल अछि। एक आलोचनात्मक उल्लेखमे जुम्मनकेँ एहन व्यक्ति रूपेँ स्मरण कएल गेल अछि जे अपन पुत्रक क्षति सहलाक बादो आनक पुत्रक रक्षाक कामना रखैत अछि। एहि तथ्यक नैतिक अर्थ गम्भीर अछि। जुम्मनक करुणा परिवारक जैविक सीमा पार करैत अछि आ दूसरेक जीवनकेँ समान मूल्य देबाक स्थिति रचैत अछि।

एहि दृष्टिसँ जुम्मन उपन्यासक केवल सहायक पात्र नहि रहैत। ओ प्रतिरोधक नकारात्मक रूप—अन्यायकेँ अस्वीकार करब—सँ आगाँ बढ़ि मानवताक सकारात्मक रूप—अपरिचित वा परपीड़ितक रक्षाक इच्छा—सम्भव करैत अछि। जुम्मनक भूमिका सत्य, दया आ सामाजिक सौहार्दक साझा आधार सूचित करैत अछि। तथापि एकरा पूर्ण चरित्र-निर्णय नहि, उपलब्ध आलोचनामे रेखांकित मुख्य नैतिक आयामक विवेचन मानब उचित होएत।

१८. ब्रह्म : सामूहिक कुण्ठाक प्रतीक

अरुण कुमार झाक अध्ययनमे ब्रह्मक चरित्रकेँ सामाजिक कुण्ठित शक्तिक प्रतीकक रूपमे पढ़ल गेल अछि। एहि दृष्टिकोणक महत्त्व ई अछि जे विरोधी पात्रकेँ केवल व्यक्तिगत द्वेष अथवा क्षुद्र स्वार्थक सीमामे नहि राखल जाए। समाजक भीतर दबल भय, अपमान, हिंसा आ अवसरवाद संगठित भऽ व्यक्तिक जीवनपर विनाशकारी दबाव बना सकैत अछि।

‘कुण्ठित शक्ति’क आलोचनात्मक अर्थ निश्चित करैत समय सावधानी आवश्यक अछि। ई व्याख्या साहित्यिक प्रतीकार्थक अछि, ब्रह्मक प्रत्येक प्रसंगक विस्तृत पुनर्कथन नहि। तथापि एहिसँ भास्करक संकटकेँ समाजक वैचारिक रोगसँ जोड़ि देखबाक अवसर भेटैत अछि। अन्याय एक व्यक्ति द्वारा घटित घटना रहलासँ आगाँ बढ़ि सामूहिक संस्कारक हिस्सा बनि जाइत अछि।

१९. महेन्द्र : उत्तरदायी शक्तिक व्यक्तिकरण

समाजशास्त्रीय आलोचनामे महेन्द्रकेँ भास्करक संकट लेल उत्तरदायी शक्तिक व्यक्तिकरणक रूपमे चिन्हल गेल अछि। एहि कथनसँ पात्रक एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक भूमिका सोझाँ अबैत अछि : कथामे सामाजिक दमन निराकार व्याख्या मात्र नहि रहि व्यक्तिक व्यवहार आ निर्णयक माध्यमसँ देखल जाइत अछि।

एतय महेन्द्रक चरित्रकेँ भास्करक पिता महेन्द्रनाथ चौधरीक संग बिना स्पष्ट मूलपाठ-साक्ष्य एकरूप मानब उचित नहि। दुनू नामक साम्यता पर पात्रक सम्पूर्ण पहचान टिका देब समीक्षा केँ अशुद्ध बना सकैत अछि। भास्करक बाल्य-वंशवृत्तमे महेन्द्रनाथक स्थान आ राजनीतिक-सामाजिक विवेचनमे महेन्द्रक प्रतीकात्मक भूमिका अलग-अलग पाठाधारपर उपलब्ध अछि; एहि कारण पृथक विवेचन आवश्यक अछि।

२०. भास्करक पिता महेन्द्रनाथ आ पीढ़ीगत वंशवृत्त

कथाक उपलब्ध आरम्भमे महेन्द्रनाथ चौधरी भास्करक पिता रूपमे उपस्थित छथि; महारुद्र चौधरीक परिवारक परम्परा, भवन-विभाजन आ सामाजिक प्रतिष्ठाक विवरण एहि वंशसँ जुड़ैत अछि। एहि परिवारक इतिहास भास्करक व्यक्तित्वक सामाजिक आधार प्रस्तुत करैत अछि। ओ शून्य मे जन्मल नैतिक चमत्कार नहि; परम्परागत सामन्ती संस्कारक भीतर जिज्ञासा अर्जित करनिहार बालक अछि।

एहि स्थितिमे भास्करक प्रतिरोधक सम्भावना आर अधिक अर्थवान होइत अछि। परम्परा सँ प्राप्त सुविधा आ विचार सँ अर्जित नैतिकता हमेशा एक-दोसरासँ मेल नहि खाइत। एकटा बच्चा जे व्यवस्था सँ सम्बन्धित घरमे पलैत अछि, वही व्यवस्था सँ आलोचनात्मक दूरी बना सकैत अछि। सामाजिक मूलकथा एहि अन्तर्द्वन्द्वकेँ विकसित करबाक आधार प्रस्तुत करैत अछि।

२१. लोकस्मृति आ इतिहास : वंशक भव्यता सँ हिंसाक अभिलेख धरि

दादीक कथा आ सामन्ती वंशवृत्त दुनू अतीतक प्रस्तुति अछि, मुदा दुनूक नैतिक दिशा अलग अछि। लोककथा अन्यायक विरुद्ध प्रश्न करनिहार साधुक स्मृति बचबैत अछि; वंशक इतिहास धन, अधिकार, विवाह, गृहविभाजन आ प्रतिष्ठाक क्रम प्रस्तुत करैत अछि। पाठककेँ ई देखबाक

अवसर भेटैत अछि जे एकहि समाजक स्मृतिमे प्रतिरोधक परम्परा आ वर्चस्वक परम्परा सहअस्तित्व रखैत अछि।

साहित्यक महत्त्व एहि सहअस्तित्वकेँ स्पष्ट करबमे अछि। इतिहास ककर कथा बचबैत अछि—सत्ताधारीक कि प्रतिरोध करनिहारक? दादीक लोककथा प्रचलित अभिलेखसँ बाहरक नैतिक स्मृति थिक, जखन कि घरानाक वंशावली संस्थागत शक्ति-प्राप्तिक अभिलेख। भास्करक जीवन एहि दुनूक बीच टकरावक परिणामस्वरूप पढ़ल जा सकैत अछि।

२२. शीर्षकक पोखरि : सीमित जीवन-क्षेत्रक रूपक

पोखरि मिथिलाक ग्राम्य जीवनमे जल, माछ, श्रम, किनार आ सामुदायिक स्मृतिक समागमक स्थल अछि। शीर्षकमे राजा द्वारा पहिचानल पोखरि निजी अधिकारक प्रश्न उठा सकैत अछि। पोखरिक मछरीक संख्या पूछब जीवनक स्वायत्तता सँ अधिक ओकर गणनायोग्य उपस्थिति पर दृष्टि केन्द्रित करैत अछि। एहि आधारपर आलोचनात्मक रूपेँ पोखरिकेँ सामन्ती अथवा संस्थागत सीमित समाजक रूपक पढ़ल जा सकैत अछि।

मुदा केवल शीर्षकक आधारपर सम्पूर्ण उपन्यासकेँ पारिस्थितिकी अथवा मत्स्य-जीविकाक कथा घोषित करब अप्रमाणित होएत। उपलब्ध कथा-प्रसंग भास्करक सामाजिक जीवन आ अन्यायक प्रतिरोधपर केन्द्रित अछि। तें जलाशयक बिम्बक व्याख्या प्रतीकात्मक सीमा भीतर राखब चाहिए। एहि संयमसँ शीर्षकक सौन्दर्यात्मक अनिश्चितता बनल रहैत अछि।

२३. गणना आ गरिमा : मछरीक प्रश्नक राजनीतिक अर्थ

संख्याक भाषा कखनो प्रशासनिक सुविधा आ कखनो सत्ता-संग्रहक साधन बनैत अछि। 'कतेक मछरी'क प्रश्नमे निहित संख्या-चिन्ता मनुष्यक गरिमाक प्रश्नसँ अलग प्रतीत होइत अछि। भास्करक जीवनक त्रासदी एहि भेदक आलोचना करबाक अवसर दैत अछि। समाज यदि व्यक्तिक जीवित नैतिकताकेँ मूल्य देबाक बदला ओकरा हटाय देब अधिक सुगम मानैत अछि, तँ मनुष्य संख्या वा बाधा भरि बनि जाइत अछि।

ई शीर्षकक व्याख्या आलोचकीय प्रस्ताव थिक; ओकरा मूल पात्रक उद्घोषणा मानबाक कोनो आधार नहि। मुदा उपन्यासक शोषण-प्रतिरोधक ज्ञात सरोकारक संग ई रूपक सुसंगत अछि।

गणनाक विपरीत गरिमा एकटा अ-माप्य मानवीय मूल्य थिक। भास्करक क्षति पाठककेँ एहने मूल्य-विरोधक सामना करबैत अछि।

२४. संवादक शिल्प : प्रश्नक आवर्तन आ नैतिक दबाव

कठरी बाबाजी प्रसंगमे एकहि साधारण प्रश्नक बारम्बार आवर्तन कथात्मक लय निर्मित करैत अछि। प्रश्न जतबा बेर दोहराएल जाइत अछि, हिंसा ओतबा बेर अपना कोनहि औचित्यक प्रमाण देबामे असफल होइत अछि। पुनरावृत्तिसँ कथाक हास्य, तनाव आ नैतिक दबाव एक संग बढ़ैत अछि। ई लोकशैलीक महत्त्वपूर्ण कथात्मक संसाधन अछि।

भास्कर आ दादीक संवाद अलग लय लैत अछि। ओतय प्रश्नक उद्देश्य चोरक बाट रोकब नहि, कथाक भीतरक असंगति बुझब थिक। एहिसँ लेखक 'प्रश्न'केँ दू स्तर पर बरतैत छथि—अनैतिकताक सार्वजनिक प्रतिरोध आ ज्ञानक निजी खोज। एहि शिल्पगत समानता सँ लोककथा आ मुख्य कथाक आरम्भिक संवेदनाक एकसूत्रता निर्मित होइत अछि।

२५. कथानकक नैतिक गति : आश्वासनसँ त्रासदी धरि

बचपनक दादीक आश्रय आ लोककथाक साहस भास्करक भविष्य लेल एक उज्ज्वल सम्भावना बनबैत अछि। परवर्ती आलोचना ओकर जीवनक अकाल क्षतिक उल्लेख करैत अछि। कथाक एहि दू ध्रुवक बीच नैतिक गति विकसित होइत अछि : जे संसार न्याय करबाक प्रेरणा दैत अछि, से समाज वास्तविक जीवनमे न्यायप्रिय व्यक्तिक संरक्षण कियैक नहि करि पबैत?

त्रासदीक प्रभाव भाग्यवश दुखद अन्तक कारण नहि, अपितु प्रारम्भक अपेक्षा आ अन्तक विफलताक दूरीसँ उत्पन्न होइत अछि। कठरी बाबाजीक लोककथामे अपराधी हारि मानैत छथि; भास्करक सामाजिक संसारमे न्यायप्रियता जीवनरक्षाक पर्याप्त गारंटी नहि। एहि अन्तरक कारण उपन्यासक करुणा वैचारिक बेचैनीमे बदलैत अछि।

२६. सामाजिक यथार्थवादक सीमा आ सामर्थ्य

उपन्यासकेँ यथार्थवादी कहब तेखन सार्थक होइत अछि जखन ओकर पात्र सामाजिक सम्बन्धक ठोस दबावमे बँधल देखाइत छथि। सामन्ती वंशक विस्तृत ब्योरा, स्त्रीपर मनमानी अधिकार, परिवारक आन्तरिक विभाजन आ आधुनिक संस्थाक अन्याय सम्बन्धी

आलोचनात्मक सूचना एहि सामाजिक परिप्रेक्ष्यकेँ आधार दैत अछि। व्यक्ति निरपेक्ष नैतिक प्रयोगशालामे नहि, ऐतिहासिक समाजक भीतर संघर्ष करैत अछि।

मुदा यथार्थवादक नामपर कृतिक प्रत्येक घटना स्वतः विश्वसनीय मानल नहि जा सकैत। डॉ. भीमनाथ झा अपन पूर्ववर्ती विवेचनमे प्रभासक रोचक, सहज कथा-प्रवाहक प्रशंसा करैत संगहि कखनो-कखनो आकस्मिक नाटकीयताक प्रश्न उठौने छथि। ई आपत्ति साहित्यिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। उपन्यासक व्यापक सामाजिक उद्देश्य सफल होइतो घटनाक कारण-सम्बन्ध विश्वसनीय रहबाक चाही।

२७. भीमनाथ झाक आलोचना : परिवेशक सूक्ष्मता आ नाटकीयताक प्रश्न

प्रकाशित समाजशास्त्रीय अध्ययनमे उद्धृत भीमनाथ झाक मतानुसार प्रभासक सामर्थ्य मिथिलाक ग्रामीण परिवेश, टूटैत सामन्ती परिवार आ बदलैत आर्थिक-सामाजिक सम्बन्धक परिचित संसारकेँ रोचक ढंगसँ प्रस्तुत करब अछि। लोकप्रचलित कथन आ परम्पराक नव सन्दर्भमे अर्थनिर्माण हुनकर लेखकीय विशेषतामे गनल गेल अछि। ई मत ‘राजा पोखरिमे कतेक मछरी?’क आरम्भिक लोककथात्मक विन्याससँ सहमति रखैत अछि।

तथापि भीमनाथ झा कथाक स्वाभाविक प्रवाहमे कखनो आकस्मिक नाटकीय मोड़सँ उत्पन्न असंगतिक संकेत सेहो करैत छथि। एहि मतक गहनता एतय अछि जे साहित्यिक करुणा आ सामाजिक प्रतिबद्धता कथाविन्यासक अनुशासनक विकल्प नहि। भास्करक क्षतिक त्रासदी पाठकपर तखने स्थायी प्रभाव छोड़ि सकैत अछि जखन ओकर कारणक क्रम पर्याप्त विश्वसनीय प्रतीत हो।

२८. उमेश मंडलक दृष्टि : शोषणक संग प्रतिरोध

उमेश मंडल ‘मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर’मे कृतिकेँ शोषण आ प्रतिरोधक मार्मिक, संवेदनपूर्ण तथा स्वाभाविक कथा मानैत छथि। एहि संक्षिप्त मूल्यांकनमे उपन्यासक मूल द्वन्द्व पकड़ा गेल अछि। शोषणक चित्रण अपने-आप न्यायवादी साहित्यक निर्माण नहि करैत; पीड़ितक प्रतिक्रिया, प्रश्न उठेबाक इच्छाशक्ति आ प्रतिरोधक सम्भावना कृतिक सामाजिक अर्थ तीक्ष्ण बनबैत अछि।

कठरी बाबाजी प्रसंग एहि प्रतिरोधक नैतिक भाषा स्पष्ट करैत अछि। भास्करक सामाजिक जीवन ओकर ऐतिहासिक मूल्य जाँचैत अछि। एहि कारण उपन्यासमे प्रतिरोध केवल संघर्षक घटना नहि; मनुष्यक भीतर विकसित होइत अस्वीकृतिक क्षमता अछि। मंडलक संवेदनात्मक पठनकेँ एहि रूपमे विस्तारित करैत उपन्यासक करुणा आ प्रतिरोधकेँ परस्पर-आश्रित समझल जा सकैत अछि।

२९. अरुण कुमार झाक समाजशास्त्रीय विवेचन

डॉ. अरुण कुमार झाक 'मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन'मे कठरी बाबाजीक प्रसंग, भास्करक जीवन, आधुनिक सामाजिक संस्थाक अनैतिकता आ जुम्मन-ब्रह्म-महेन्द्रक भूमिकाक महत्वपूर्ण विवेचन अछि। झा भास्करक जीवनक अकाल क्षतिकेँ सांस्कृतिक क्षतिसँ जोड़ैत छथि आ पाठकक करुणासँ आगाँ बढ़ि ई प्रश्न उठबैत छथि जे मृत्यु तथा सामाजिक विफलताक वास्तविक उत्तरदायित्व ककर अछि।

एहि दृष्टिकोणक विशेष सार्थकता एतय अछि जे करुणा केँ आत्मसन्तोषक ठौर नहि बनय देल जाइत। पाठक भास्करक लेल दुखी भऽ सकैत छथि, मुदा तकर बाद समाजमे अन्यायक संरक्षण करनिहार प्रथा आ मौनक भूमिका देखनाइ जरूरी बनैत अछि। झाक विवेचन एहि प्रश्न लेल उपयोगी मार्ग खोलैत अछि, जखन कि मूल रचनाक पूर्ण पात्रविन्यासक स्वतन्त्र परीक्षण एक अलग आलोचनात्मक आवश्यकता रहैत अछि।

३०. सामाजिक उत्तरदायित्व : अपराधी मात्र नहि, दर्शको

कठरी बाबाजीक लोककथामे अपराधी चोरसभ छथि, मुदा बाबाजी पर मारि बरसेबामे कखनो ओ लोक सेहो सहभागी भऽ जाइत छथि जे परिस्थिति केँ ठीकसँ बुझल नहि। एहि घटनाक अर्थ गहिर अछि। अनैतिकता कखनो केवल योजनाबद्ध अपराधीसँ नहि, सामाजिक भ्रम आ अविवेकी सामूहिक प्रतिक्रियासँ सेहो संरक्षित होइत अछि।

भास्करक त्रासदीसँ सम्बन्धित समाजशास्त्रीय प्रश्न सेहो एही दिशामे जाइत अछि। व्यक्तिक मृत्यु वा क्षतिक प्रत्यक्ष कर्ता के छल, ई प्रश्न आवश्यक अछि; मुदा तकरा सँ व्यापक प्रश्न अछि जे वातावरणमे न्यायप्रिय व्यक्ति निरन्तर असुरक्षित बनल, ओहि स्थितिक निर्माण आ निरन्तरता

मे ककर-ककर भूमिका छल। एहि रूपमे उपन्यास व्यक्तिगत करुणाक कथा सँ सामाजिक आत्मपरीक्षाक आख्यान बनैत अछि।

३१. पाँच उपन्यासक पृष्ठभूमिमे अन्तिम कृतिक विशिष्टता

प्रभासक ‘अभिशप्त’ शिक्षित मध्यवर्गीय दाम्पत्यक आत्मविरोध उद्घाटित करैत अछि; ‘युगपुरुष’ सार्वजनिक महिमामण्डन आ वर्गीय विडम्बनाक प्रश्न उठबैत अछि; ‘हमरा लग रहब?’ शोषणक प्रत्यक्षदर्शी प्रणवक नैतिक निष्क्रियताक परीक्षा करैत अछि; ‘नवारम्भ’ सामन्ती पतन आ दलित नवचेतनाक सम्बन्ध केन्द्रित करैत अछि। ‘राजा पोखरिमे कतेक मछरी?’ एहि क्रममे अन्याय जाननिहार व्यक्तिक निःसंग प्रतिरोध आ ओकर ऐतिहासिक असुरक्षाकेँ अत्यन्त मार्मिक रूप देबाक कारण विशिष्ट बनैत अछि।

एहि तुलना केँ प्रकाशनक्रम अथवा लेखकीय ‘प्रगति’क अवश्यंभावी निर्णय मानब उचित नहि। प्रत्येक उपन्यासक अपन संरचना आ सामाजिक केन्द्र अछि। मुदा पाँच कृतिक पारस्परिक पठनसँ एक साझा चिन्ता देखल जा सकैत अछि : सम्मानित समाजक भीतर बाँचि रहल हिंसा, स्वार्थ आ नैतिक भ्रमकेँ कोना पहिचानल जाए। अन्तिम कृति एहि प्रश्नकेँ बालकक निष्कपट जिज्ञासा आ वयस्क संसारक निर्मम अनुभवक विरोधमे रखैत अछि।

३२. कलात्मक उपलब्धि आ विवेचनक सीमा

उपलब्ध कथा-अंशसँ कृतिक तीन महत्त्वपूर्ण उपलब्धि स्पष्ट होइत अछि। पहिल, लोककथाकेँ बालकक प्रश्नक माध्यमसँ जीवित नैतिक विचारमे बदलि देब। दोसर, सामन्ती घरानाक भौतिक संसारक यथार्थ ब्योरा द्वारा ऐतिहासिक सत्ता केँ ठोस स्थान देब। तेसर, बाल्यसंस्कार आ सामाजिक विफलताक बीच उत्पन्न त्रासद टकरावकेँ मार्मिक रचनात्मक सम्भावना बनायब।

तथापि कृतिक सम्पूर्ण शिल्प, प्रत्येक पात्रक विकास आ अन्तिम घटनाक क्रमपर पूर्ण निश्चित निर्णय लेल सम्पूर्ण मूलपाठक निकट अध्ययन आवश्यक अछि। प्रकाशित हिन्दी रूपान्तरक उपलब्ध आरम्भिक अंश आ मैथिली आलोचनामे सुरक्षित कथासूत्र पर आधारित विवेचन केँ व्यापक समीक्षात्मक प्रस्ताव मानब उचित होएत। अपन जानकारीक सीमा छुपा कऽ प्रत्यक्ष उद्धरण अथवा मनगढ़न्त घटना जोड़ब साहित्यिक अध्ययनक विश्वसनीयता नष्ट करैत

अछि। एहि लेखमे तें प्रमाणित प्रसंग आ व्याख्यात्मक सम्भावना बीच भेद सुरक्षित राखल गेल अछि।

३३. निष्कर्ष : प्रश्नक अजेयता आ समाजक पराजय

'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?'क सर्वाधिक प्रखर अर्थ प्रश्न करबाक अधिकारक पक्षमे उभरैत अछि। कठरी बाबाजीक लोककथा सिखबैत अछि जे अन्यायकेँ प्रश्न करनाइ स्वयं एक प्रकारक साहस अछि। दादीक संवाद बालक भास्करमे एहि साहसक तार्किक आ भावनात्मक आधार रखैत अछि। सामन्ती घरानाक इतिहास बतबैत अछि जे प्रतिष्ठाक चमकक भीतर हिंसाक दीर्घ परम्परा छुपल रहि सकैत अछि। आधुनिक संस्थाक अनैतिक संसार सँ भास्करक टकराव एकर सामाजिक विस्तार प्रस्तुत करैत अछि।

जुम्मनक करुणा, ब्रह्मक प्रतीकात्मक दमन आ महेन्द्रक उत्तरदायी शक्तिसँ सम्बद्ध आलोचनात्मक भूमिका एहि बातकेँ संकेत करैत अछि जे कथा एक व्यक्ति सँ बेसी व्यापक समाजक प्रश्न अछि। भास्करक अकाल क्षति पाठकक हृदयमे शोक उत्पन्न करैत अछि, मुदा उपन्यासक स्थायी मूल्य एहि शोककेँ असुविधाजनक प्रश्नमे रूपान्तरित करबमे अछि : निःस्वार्थ प्रश्न करनिहार व्यक्ति असुरक्षित होय, तकर उत्तरदायित्व ककर?

एहि अर्थमे शीर्षकक राजा आ पोखरिक मछरी केवल ग्रामीण चित्र नहि रहि सामाजिक असमानताक सम्भावित रूपक बनैत अछि। कृतिक अन्तर्निहित नैतिक आग्रह ई अछि जे जीवनक मूल्य सत्ता द्वारा तय कएल गेल संख्या अथवा प्रतिष्ठासँ नहि, मनुष्यक गरिमा, सत्यक साहस आ अन्यायक सोझाँ ठाढ़ रहबाक क्षमतासँ निर्धारित होय। प्रभासक उपन्यास पाठककेँ एहि आग्रहक करुण आ तीक्ष्ण अनुभव धरि पहुँचबैत अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

चौधरी, प्रभास कुमार। 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?' प्रभास समग्र : उपन्यास। सम्पादन : डॉ. वन्दना चौधरी। ज्योत्स्ना प्रकाशन, पिण्डारुछ, दरभंगा।

चौधरी, प्रभास कुमार। राजा पोखरे में कितनी मछलियाँ। मैथिली सँ हिन्दी अनुवाद : विभा रानी। भारतीय ज्ञानपीठ, १९९९। उपलब्ध कथाअंश आ पुस्तक-परिचय : https://pustak.org/index.php/books/bookdetails/701

झा, अरुण कुमार। मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन। कृपा-दृष्टि पब्लिकेशन्स, पुणे। ISBN 978-81-19149-27-8। https://books.kdpublications.in/index.php/kdp/catalog/download/262/256/3056?inline=1

मंडल, उमेश। ‘मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर’। विदेह, अंक ७४, १५ जनवरी २०११। https://videhajournal.blogspot.com/2011/01/part-iv_31.html

झा, भीमनाथ। ‘राजा पोखरिमे कतेक मछरी?’ सम्बन्धी आलोचनात्मक टिप्पणी। मिठिमिठो, जून १९८३। उद्धृत : झा, अरुण कुमार, मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन।

मैथिली जिन्दाबाद। ‘प्रभासोत्सव पर साहित्यिक समागम—देश भरि सँ जुटला दिग्गज साहित्यकार’। २३ फरवरी २०१७। https://maithilijindabaad.com/?p=7696

वाणी प्रकाशन। ‘विभा रानी : लेखक परिचय’। ‘राजा पोखरे में कितनी मछलियाँ’क हिन्दी अनुवादक पुष्टि। https://vaniprakashan.com/author/vibha-rani

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका। ‘प्रभास कुमार चौधरी : साहित्यिक परिचय आ कृति-सूची’। https://videha-ejournal.github.io/videha/ratna.htm

६. भूख, स्मृति, सत्ता आ प्रतिरोधक कथा-परिदृश्य

प्रभास कुमार चौधरीक 'दिदवल'क समग्र साहित्यिक समीक्षा
आधुनिक मैथिली कथा • समीप-पाठ • आख्यान-विश्लेषण

सारांश

प्रभास कुमार चौधरीक 'दिदवल' मैथिली कथाक ओहन संग्रह अछि जाहिमे मध्य बीसम शताब्दीक ग्रामीण अनुभवसँ लऽ कऽ उत्तरवर्ती दशकक शहरी एकान्त, संस्थागत निर्दयता, जनान्दोलनक विडम्बना आ घरेलू जीवनक दरारि धरि अनेक स्तर परस्पर जुड़ैत अछि। संग्रहक बीस कथा कालक्रममे एकरूप नहि, मुदा हुनकामे भूख, विस्थापन, प्रतीक्षा, अपमान, नैतिक निर्णय, सामाजिक असमानता आ मनुष्यक अदम्य अस्तित्व-बोधक आवर्ती स्वर एकटा गहन आन्तरिक एकता गढ़ैत अछि। 'धरती कुहरि उठल' कथालेखनक सामाजिक प्रयोजन पर प्रश्न करैत अछि; 'ग्राम सुधार समिति' आ 'विशेषाधिकार' संस्थागत ढोंगक भेद खोलैत अछि; 'मन्दाकिनी' स्मृति आ घरक विघटनकेँ आत्मीय जटिलता प्रदान करैत अछि; 'दिदवल' आधुनिक दिनचर्याक भीतर भय आ आत्मपरीक्षणक तनाव रचैत अछि; 'पतिव्रता' वर्ग, लैंगिक असमानता आ देहक राजनीतिक अर्थकेँ सोझाँ आनैत अछि; आ 'अष्टावक्रक शेष कथा' धार्मिक अनुष्ठान, समूह-मनःस्थिति तथा सामाजिक पदानुक्रमक भीतरी विरोधाभासक पड़ताल करैत अछि। एहि समीक्षामे कथा-वस्तु मात्र नहि, दृष्टिबिन्दु, संवाद, अन्तःसंघर्ष, व्यंग्य, काल-संरचना आ भाषिक रजिस्टरक समीप-पाठक आधार पर संग्रहक उपलब्धि एवं सीमा दुनूक विवेचन कएल गेल अछि।

बीज-शब्द

प्रभास कुमार चौधरी; दिदवल; आधुनिक मैथिली कथा; सामाजिक यथार्थ; ग्रामीण सत्ता; स्त्री-अनुभव; आख्यान-शिल्प; व्यंग्य; स्मृति; प्रतिरोध।

१. प्रस्तावना : कथा, समाज आ समयक दबाव

आधुनिक मैथिली कथा-परम्परामे प्रभास कुमार चौधरीक स्थानक निर्धारण करैत काल हुनका केवल एकटा सामाजिक यथार्थवादी कथाकार मानि लेब अधूरा होएत। हुनकर पात्र सभ सामाजिक सम्बन्धक जालमे बान्हल छथि, मुदा हुनकर संकट बहुधा बाहरी घटनासँ बेसी

आत्मसम्मान, असमर्थता, अपराध-बोध अथवा निर्णयक अनिश्चिततामे प्रकट होइत अछि। कखनो कथाकार एकटा मामूली कार्यालयी वार्तालापमे सत्ताक पूरा ढाँचा देखबैत छथि, तँ कखनो गामक घर, रोग, नदिया, खेत अथवा पैदल यात्राक दृश्यसँ व्यापक सामाजिक विषमताक अर्थ उद्घाटित करैत छथि। कथा एहिठाम 'घटना'क विवरण भरि नहि, मनुष्य पर घटित होइत दबावक विवेचन बनि जाइत अछि।

'दिदवल'क प्रकाशन लेखकक निधनक बाद भेल। संग्रहमे आरम्भिक आ परवर्ती रचनाक सहअस्तित्व पाठककेँ एके लेखकक संवेदनाक दीर्घ कालखण्डसँ साक्षात्कार करबैत अछि। प्रारम्भिक कथामे सामाजिक सुधारक सार्वजनिक भाषा आ वास्तविक जीवनक अन्तर अग्रभूमिमे अछि; बादक अनेक कथामे शहर, रोजी-रोटी, संस्थागत व्यवस्था, स्मृति आ अन्तरंग सम्बन्धक जटिलता बढ़ैत देखाइत अछि। एहि अन्तरकेँ कठोर रेखामे विभाजित करब उचित नहि, कारण आरम्भिक रचनामे आत्मसंवाद आ बादक रचनामे सामाजिक प्रतिरोध दुनू सजीव अछि। एहि संग्रहक महत्त्व एही निरन्तरताक भीतरक परिवर्तनमे निहित अछि।

प्रभासक साहित्यिक अवदानक व्यापक सन्दर्भ सेहो उल्लेखनीय अछि। 'कथा-प्रभास : तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा'क प्रकाशनक बाद 'प्रभासक कथा' लेल हुनका साहित्य अकादेमीक सम्मान भेटल। कथा-सम्पादन आ साहित्यिक गोष्ठीक गतिविधिसँ हुनकर जुड़ाव सेहो मैथिली कथाक सार्वजनिक संस्कृतिक एकटा महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। तथापि पुरस्कार अथवा साहित्यिक प्रतिष्ठा कृतिक मूल्यांकनक विकल्प नहि बनि सकैत; 'दिदवल'क अध्ययनमे निर्णायक प्रमाण ओहि कथा सभक कलात्मक संगठन आ अर्थ-सम्भावना अछि।

२. संकलनक विन्यास : बीस कथाक अनेक काल

संग्रहक अनुक्रममे 'धरती कुहरि उठल', 'प्रतीक्षा', 'ग्राम सुधार समिति', 'अभिशाप', 'यात्रा : हेरायल बाटपर', 'संभावना', 'समीकरण', 'पुनरावृत्ति', 'सीमाबद्ध', 'गुण्डपनी', 'बीति जयबाक खुशी', 'विशेषाधिकार', 'बाप-कठबाप', 'ककरो आड़मे', 'मन्दाकिनी', 'इजोतमे हेरायल लोकसभ', 'दिदवल', 'खूनी', 'पतिव्रता' आ 'अष्टावक्रक शेष कथा' सम्मिलित अछि। एहि क्रमकेँ विषयानुसार पढ़ला पर छोट आ लम्बा कथा, सामाजिक व्यंग्य आ मनोवैज्ञानिक स्थितिकथा, ग्रामीण समूहक आवाज आ एकाकी मानसक स्वर—सभ परस्पर संवाद करैत देखाइत अछि।

कतेको कथाक अन्तमे रचनाक समयक निर्देश भेटैत अछि। एहि काल-संकेतसभसँ कथा-भाषाक रूपान्तरण पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा हुनका लेखकक विचारक सीधा रैखिक विकासक अपराजेय प्रमाण बना देब अनुचित होएत। अलग-अलग पत्रिकाक लेल रचल कथा, प्रकाशनक अन्तराल आ लेखकक विषयगत प्रयोग—सभ एहि क्रमकेँ प्रभावित कएने होयत। अधिक उपयोगी ई अछि जे पाठक कथा-परिस्थितिक भीतर भाषिक जोर, व्यंग्यक प्रकृति आ पात्रक स्वतन्त्रताक स्वरूपक तुलना करथि।

पुस्तकक आरम्भमे 'ई संग्रह' आ 'पापा' नामक दू भूमिका-सदृश वक्तव्य संग्रहक स्मृति-परक स्थिति स्पष्ट करैत अछि। एक दिस प्रभासक कथाक सामाजिक असर पर विश्वास, दोसर दिस परिजनक आत्मीय स्मरण—दुनू पाठककेँ अपन-अपन ग्रहण-दृष्टि दैत अछि। समीक्षाक दृष्टिसँ एहि दोसर परतकेँ स्नेहपूर्ण साक्ष्य मानब चाही, निर्विवाद साहित्यिक निर्णय नहि। भूमिका जे मूल्य-आग्रह उठबैत अछि, कथा सभ ओकर समर्थन करैत अछि अथवा ओकरा जटिल बनबैत अछि—एहि अन्तरसँ स्वतन्त्र आलोचनाक आरम्भ होइत अछि।

३. 'धरती कुहरि उठल' : लेखनक नैतिकता आ उपेक्षित मनुष्य

आरम्भिक कथा 'धरती कुहरि उठल'मे विद्यालयक कथा-कविता प्रतियोगिताक प्रसंगसँ जखन एकटा लेखक-पात्र समाज दिस तकैत अछि, तँ रचना-प्रेरणाक साधारण प्रश्न एकाएक नैतिक प्रश्न बनि जाइत अछि। सुख, सौन्दर्य अथवा मनोरंजनक विषय खोजब सरल नहि रहि जाइत, कारण दृष्टिकेँ बस्ती, अभाव आ जीवनक कुरूप यथार्थ घेरि लैत अछि। कथाक विशेषता ई अछि जे पाठककेँ पहिने 'कथा किएक लिखल जाए'क प्रश्नसँ परिचित कराओल जाइत अछि; तकर बाद समाजक विषमता कथा-विषय बनैत अछि। एहि अर्थमे आरम्भिक कथा अपन लेखकीय घोषणापत्रक समान कार्य करैत अछि, मुदा सैद्धान्तिक घोषणापत्र बनि कऽ नहि।

ई रचना दुःखक सूची बनबैत नहि ठाढ़ि रहैत। अन्तर्मनक असुविधा, देखल चीजकेँ भाषामे बदलबाक असमर्थता आ सुन्दर वर्णनक प्रति संकोच—ई सभ कथाकारक आत्मालोचनात्मक मुद्रा अछि। कथाक सामर्थ्य ओहि बेचैनीमे अछि, जतए वक्ता अपन पढ़ल-सुनल सौन्दर्यबोध आ प्रत्यक्ष अनुभवक बीच भरोसेमन्द मेल नहि पाबि रहल अछि। एहि रचनाकेँ केवल 'गरीबी पर कथा' कहब ओकर मूल संरचनात्मक प्रयोगकेँ छोट कऽ देब।

४. 'प्रतीक्षा', 'ग्राम सुधार समिति' आ 'अभिशाप' : समय, संस्था आ निरुपायता

'प्रतीक्षा'मे प्रतीक्षा एकटा निष्क्रिय कालखंड नहि, सम्बन्ध आ आशाक मानसिक संरचना अछि। जे चीज आबएबाक चाही, ओ लगातार टलैत रहैत अछि; एहने स्थिति कथाक लय बनबैत अछि। प्रश्न केवल ई नहि जे प्रतीक्षा समाप्त होइत अछि वा नहि, बल्कि ई जे प्रतीक्षा करैत मनुष्य अपन जीवनक अधिकार कतेक दूर धरि सुरक्षित राखि सकैत अछि। कथा पाठककेँ अधूरापनक ओहि नैतिक क्षेत्रमे लऽ जाइत अछि जतए आशा स्वयं पीड़ाक कारण सेहो बनि सकैत अछि।

'ग्राम सुधार समिति'क शीर्षकमे संस्था आ सुधारक दू आश्वस्तकारी शब्द अछि; कथाक भीतर ग्रामीण अधिकार, सार्वजनिक भाषण, संगठन आ निहित स्वार्थक टकराव एहि शब्दसभक खोखलापन चिन्हित करैत अछि। समिति बनब, प्रस्ताव दैत रहब अथवा सार्वजनिक कल्याणक उद्घोष—ई सभ तखन धरि पर्याप्त नहि, जखन धरि स्थानीय सत्ता-समीकरण आ व्यक्ति-हितक पहिचान नहि कएल जाए। प्रभास सार्वजनिक हितक नारा आ वास्तविक सामाजिक व्यवहारक बीच हास्य-विरोध उत्पन्न करैत छथि; एहिमे व्यंग्य करुणा-विरुद्ध नहि, करुणाकेँ अधिक तीक्ष्ण करबाक युक्ति अछि।

'अभिशाप' व्यक्तिगत जीवनक बाध्यता, असुरक्षा आ भविष्यक अनिश्चितताकेँ केन्द्रमे आनैत अछि। पात्रक जीवनमे आवैत संकटकेँ धार्मिक भाग्यवादसँ ढाँपि देब कथाक लक्ष्य नहि देखाइत; ओकरा पीछे पारिवारिक अपेक्षा आ अवसरक असमान वितरणक प्रश्न स्पष्ट भऽ उठैत अछि। कथाक सार्थकता एहिमे अछि जे प्रतिकूल स्थितिकेँ असाधारण दुर्घटनाक रूपमे नहि, नियमित सामाजिक जीवनक एकटा घटकक रूपमे देखबैत अछि। तथापि कतेक प्रसंगमे लेखकक नैतिक आग्रह पात्रक स्वतन्त्र अस्पष्टताकेँ कम करैत अछि; ई दोष नहि तँ निश्चिते एकटा आलोच्य सीमा अछि।

५. 'यात्रा : हेरायल बाटपर' आ 'संभावना' : गतिक भीतर ठहराव

'यात्रा : हेरायल बाटपर'क प्रारम्भमे यात्राक दृश्य—रस्ता, नदी, घाट, गाम आ आवागमनक कठिनता—कथा-जगतकेँ भौगोलिक ठोसपन प्रदान करैत अछि। यात्रा दृश्य बदलैत अछि, मुदा ओहिसँ पात्रक जीवन स्वतः सरल नहि बनैत। बाहरक स्थानान्तर आ भीतरक भटकावक बीच कथा अपन अर्थ उपजाबैत अछि। कथामे गामक स्थानीय संरचना ओहि परिवहन-व्यवस्थासँ

जुड़ैत अछि जाहिसँ पाठक देखैत छथि जे एकटा बाट सभक लेल समान रूपसँ खुलल नहि होइत अछि। देहक श्रम, प्रतीक्षाक अवधि आ अवसरक असमानता यात्राकेँ सामाजिक घटना बनबैत अछि।

‘संभावना’ नाम एकटा भविष्यमुखी आश्वासन प्रस्तुत करैत अछि, मुदा प्रभासक रचनात्मक संसारमे सम्भावना सहज उपलब्ध वस्तु नहि। पात्र सब किछु सोचैत, जाँचैत, मन बनबैत अथवा टालैत छथि; परिस्थिति हुनका हर घड़ी दू दिशामे खींचैत अछि। कथा एहि अन्तरालकेँ उपयोगी अर्थ दैत अछि। ओकर प्रभाव सनसनीखेज मोड़मे कम, निर्णयपूर्वक तनावमे बेसी अछि। एहि कथा-संरचनाक संग पाठक ‘पुनरावृत्ति’ आ ‘सीमाबद्ध’मे सेहो बहुविध सम्बन्ध देख सकैत छथि।

६. ‘समीकरण’ आ ‘पुनरावृत्ति’ : घरेलू जीवनक हिसाब

‘समीकरण’मे राति, घरक बन्द कोठली, असुरक्षा आ परिजनक परस्पर व्यवहारसँ उभरैत भयक वातावरण प्रमुख अछि। चोरीक आशंका आ घरक भीतर पसारल अविश्वास केवल घटनाक उत्सुकता नहि उत्पन्न करैत; ओ पारिवारिक सम्बन्धक अर्थव्यवस्था पर टिप्पणी बनि जाइत अछि। ‘समीकरण’ शब्द गणितक तटस्थता स्मरण करबैत अछि, मुदा घरमे मनुष्यक स्थान, सम्मान, सम्पत्ति आ भरोसाक हिसाब कखनो निष्पक्ष नहि रहैत। कथा वस्तुतः एहि अनिश्चित ‘जोड़-घटाव’केँ सामाजिक अर्थ दैत अछि।

‘पुनरावृत्ति’क आरम्भिक बन्द कोठली आ लम्बा एकान्तक वर्णन जीवनक दैनिक क्रिया आवृत्तिमे बदलि जेबाक अनुभव उत्पन्न करैत अछि। बाहरी संसारसँ सम्बन्ध बनएबाक उत्कण्ठा आ ओहि सम्बन्धक सम्भावित संकट, दुनू एक्केसँग उपस्थित अछि। ई कथा कथानकक रैखिक प्रगति सँ बेसी मनःस्थितिक दोहराव पर आश्रित अछि। पुनरावृत्ति एतए केवल घटनाक नहि, चिन्ताक सेहो अछि—मन ओहि प्रश्न पर बेर-बेर घुरैत अछि जकर समाधान ओकरा हाथ नहि लगैत।

एहि दुनू रचनाक तुलना सँ लेखकक एकटा विशेष क्षमता उद्घाटित होइत अछि। परिवारकेँ ओ स्थायी शरणस्थल मानि निश्चिन्त नहि छथि। घरक दरबज्जा, कोठली, आँगन, रसोई, परिजनक छोट संवाद—सभ कखनो आश्वासन, कखनो दमनक माध्यम बनैत अछि। सामाजिक यथार्थक आलोचना एतए संस्थानक बाहर नहि, निजी सम्बन्धक भीतर उपस्थित अछि।

७. 'सीमाबद्ध', 'गुण्डपनी' आ 'बीति जयबाक खुशी' : आधुनिक जीवनक विडम्बना

'सीमाबद्ध'मे बहुत समय बाद भेटैत परिचित लोक, शहरक भीड़, सामाजिक दूरी आ संवादक असहजता महत्त्वपूर्ण अछि। आधुनिक शिक्षित जगतक बहुचर्चित बौद्धिक विषय आ मनुष्यक वास्तविक एकाकीपनक अन्तर कथामे स्पष्ट होइत अछि। सार्वजनिक चर्चामे अधिकार अथवा व्यवस्था पर बोलब आसान अछि, मुदा सोझाँ ठाढ़ि मनुष्यक अपरिचित पीड़ा समझब कठिन। कथाक शीर्षक मानवीय सम्बन्धपर पड़ल अदृश्य सीमा दिस संकेत करैत अछि। लेखक एहिठाम कटु व्यंग्यसँ बेसी आत्म-विच्छेदनक विधि अपनबैत छथि।

'गुण्डपनी'मे सामाजिक दबाव आ दबंगईक व्यवहार साधारण जनजीवनमे घुसि अबैत अछि। बलक उपयोग केवल शारीरिक आक्रमण तक सीमित नहि; भयक वातावरण, प्रभावशाली व्यक्तिक आदेश, आ विरोधक सम्भावनाक संकुचन सेहो ओकर हिस्सा अछि। कथा शक्ति आ वैधताक अन्तर पर आग्रह करैत अछि। ओकर कथन-संसार बतबैत अछि जे स्थानीय समाजमे 'सामान्य' कहल जाइत कतेको व्यवहार मूलतः असमानताक स्थायी अभ्यास अछि।

'बीति जयबाक खुशी' अपेक्षाक उलटा अर्थ-विन्यासक लेल उल्लेखनीय अछि। शीर्षकमे 'खुशी' उपस्थित अछि, मुदा ओ पूर्ण संतोषक भाषा नहि; समय बीतबो कखनो मुक्ति-जेकाँ अनुभव होइत अछि, कारण वर्तमान असह्य भऽ उठल अछि। प्रभास एहन विरोधाभासी शीर्षकसँ पाठकक प्रारम्भिक अनुमानकेँ अस्थिर करैत छथि। एहि कथाकेँ लघुता आ संकेतक शिल्पमे पढ़ब विशेष लाभकारी अछि; शीर्षक जे प्रश्न उठबैत अछि, कथा ओकरा केवल एकटा निश्चयात्मक उत्तरमे समाप्त नहि करैत।

८. 'विशेषाधिकार', 'बाप-कठबाप' आ 'ककरो आड़मे' : अधिकारक उलट अर्थ

'विशेषाधिकार' अत्यन्त संक्षिप्त व्यंग्य-कथा अछि। एकटा बीमार कर्मचारीक छुट्टीक आवेदन, अधिकारीक प्रतिक्रिया आ कार्यालयी व्यवहारक माध्यमसँ अधिकारक भाषा आ मनुष्यक बुनियादी आवश्यकता बीचक दूरी प्रत्यक्ष होइत अछि। देहक ज्वर आ कागजक औपचारिकता आमने-सामने ठाढ़ अछि। एकर प्रहार एहि बात पर अछि जे अधिकारक संस्थागत रूप कतेक सहजतासँ कृपाक अभिनयमे बदलि सकैत अछि। कथा कम शब्दमे शक्ति-संबन्ध व्यक्त करबाक दक्ष उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

'बाप-कठबाप'मे पारिवारिक सम्बोधनक भीतर स्नेह आ कठोरता एकत्र उपस्थित अछि। 'बाप' नामक आत्मीय सामाजिक पद आ 'कठबाप'क दूरी कथाक तनावक केन्द्र अछि। परिवारक मुखियाक छवि, रोग अथवा असहायताक समय आवश्यक सहारा, आ घरक भीतर अधिकारक अनुभवक बीच कथा असुविधाजनक सम्बन्ध खंगालैत अछि। शीर्षक परस्पर विरोधी भावसभकेँ एके साँस मे रखैत अछि। लेखक एकटा चरित्रकेँ पूर्णतः दुष्ट अथवा पूर्णतः उद्धारक बनाबय चाहैत छथि, एहन निष्कर्ष पर पहुँचब पाठक लेल सहज नहि रहैत।

'ककरो आड़मे'मे ग्राम्य जीवन, अफवाह, चोरी-डकैतीक आशंका, पुलिसिया उपस्थिति आ सामूहिक भयक प्रसंग जुड़ैत अछि। गामक सार्वजनिकता एतए भरोसाक सहज स्थान नहि, पहिचान आ आरोपक जटिल रंगभूमि अछि। 'ककरो आड़'क प्रश्न केवल अपराधी खोजबाक नहि, बल्कि असुरक्षाक परिस्थितिमे व्यक्ति ककरा अपन कहि पाबैत अछि, एकर सेहो अछि। सामाजिक दबावमे प्रमाणसँ पहिने धारणा बनि जाएब कथाक सार्थक व्यंग्यक एक स्रोत अछि।

९. 'मन्दाकिनी' : घरक स्मृति आ सम्बन्धक क्षरण

'मन्दाकिनी' संग्रहक ओहि रचनासभमे अछि जाहिमे सामाजिक यथार्थ पर सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक प्रकाश पड़ैत अछि। एकटा पारिवारिक परिस्थिति, रातिक विरल निस्तब्धता, पुरान आ नव सम्बन्धक तुलना आ घरक संरचनात्मक क्षय—ई सभ एक-दोसरक अर्थ बदलैत अछि। एतए घर भौतिक वस्तु मात्र नहि; स्मृति, दायित्व, अपूरल प्रतिज्ञा आ पारस्परिक अपेक्षाक संचित स्थल अछि। घरक दरारि आ सम्बन्धक दरारि बीच उपजल समानान्तरता कथाक मुख्य सौन्दर्य-उपकरण बनैत अछि।

एहि कथामे स्मृति पुरान समयक निष्कलुष महिमामण्डन नहि करैत। स्मरणक संग आर्थिक अपूर्णता, घरक मरम्मतिक असफलता आ परिजनसँ दूरीक पीड़ा सेहो घुरि अबैत अछि। कथाक भितरी गति बाहरी घटनाक अपेक्षा विचारक क्रम आ स्मृतिक आवागमनसँ निर्धारित होइत अछि। पाठक एके पारिवारिक प्रसंगकेँ वर्तमान चिंता आ अतीतक अपेक्षा, दू दृष्टिसँ देखैत छथि। एहि रूपमे 'मन्दाकिनी' घर-सम्बन्धी मैथिली कथाक भावुक रूढ़िकेँ चुनौती दैत अछि।

कथाक एकटा कलात्मक सीमा एहिमे चिन्हल जा सकैत अछि जे अनुभवक परत बढ़ला पर वर्णन कखनो-कखनो अधिक विस्तृत होइत अछि आ कथानकक आवेग मन्द पड़ैत अछि। मुदा ई

मन्दता मात्र शिथिलता नहि; ओ पात्रक मनसँ बाहर नहि निकलि पएबाक असमर्थताकेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि। एहि द्वैध कारणे कथा अपन लम्बाईकेँ आंशिक औचित्य दैत अछि।

१०. 'इजोतमे हेरायल लोकसभ' : जनसमूह, आन्दोलन आ भूख

'इजोतमे हेरायल लोकसभ'मे शहरक भीतर निकलल विशाल जुलूस, नारा, हल्ला आ जनता-संघर्षक दृश्य सोझाँ अबैत अछि। मुदा दृश्य-रचनाक केन्द्रमे जे बुनियादी प्रश्न अछि, ओ भीड़क संख्या नहि, ओहि भीड़मे उपस्थित भूखल मनुष्यक वास्तविक दशा अछि। आंदोलनक सार्वजनिक तेज आ व्यक्तिक पेटक खालीपनक बीच कथा तीक्ष्ण विरोध स्थापित करैत अछि। सामूहिक मुखरता गरीबक निजी भुखमरीकेँ नहि मिटा सकैत—ई प्रश्न कथाक व्यंग्यात्मक ऊर्जा अछि।

शीर्षकमे 'इजोत'क बिम्ब महत्त्वपूर्ण अछि। प्रकाश दृश्यता दैत अछि, मुदा समस्त मनुष्य समान रूपसँ देखल नहि जाइत छथि; किछु लोक तेज प्रकाशक बीचोबीच अदृश्य भऽ जाइत छथि। कथा ने जनान्दोलनक सर्वथा निषेध करैत अछि, ने सामूहिकता अपनहि मुक्तिदायक अछि एहन आश्वासन दैत अछि। ओ पूछैत अछि जे प्रतिनिधित्वक ऊँच स्वरक भीतर निम्नतम जीवन-अनुभवक स्वर कतेक सुनल जाइत अछि। छोट आकारक बावजूद ई रचना सामाजिक आलोचनाक गहन सम्भावना छोड़ैत अछि।

११. 'दिदवल' : माध्यम, मन आ बदलैत गृह-संसार

शीर्षक-कथा 'दिदवल' एकटा रातिक वातावरणमे आरम्भ होइत अछि। दूरदर्शनक कार्यक्रम समाप्त भऽ गेल अछि; घरक शान्ति, व्यक्तिगत एकाकीपन आ सामान्य दिनचर्याक बीच कथावाचकक मनमे असुविधाजनक विचार उठैत अछि। पुस्तिका, पुरान स्मरण, आर्थिक बोझ, भोजनक बदलैत अभ्यास आ घरेलू सम्बन्धक प्रश्न क्रमशः एहि मानसिक परिदृश्यकेँ निर्मित करैत अछि। आधुनिक माध्यमक उपस्थितिसँ जतेक बाहरी संसार घरमे पहुँचल अछि, ततेक आन्तरिक संवाद सरल नहि भेल अछि।

कथाक समय सीमित देखाइत अछि, मुदा मनक समय विस्तारित अछि। पात्रक वर्तमान अनुभूति लगातारी बीतल प्रसंग, सम्भावित भविष्य आ अपमानक स्मृतिसँ भरि जाइत अछि। बाह्य घटनाक संख्या कम रहितो अस्थिरता बढ़ैत जाइत अछि। ई काल-विस्तार मनोवैज्ञानिक

कथाक परिचित शिल्प अछि, मुदा प्रभास ओकरा मैथिली घरेलू व्यवहारक ठोस शब्दावली, खाय-पियबाक वस्तु, खर्च आ पारिवारिक सम्बोधनसँ नवीन स्थानीय स्वर दैत छथि।

शीर्षकक अर्थकेँ एकटा कोषगत परिभाषामे बाँधब कठिन अछि; कथा भीतर जँ ओकरा जीवनक बिखरैत तालमेलक संकेत मानल जाए तँ ओ मुख्य विषयसँ जुड़ैत अछि। तथापि शीर्षकक अर्थ पाठकक अनुभव पर खुलल रहैत अछि, जे रचनाक एकटा उपलब्धि अछि। कथा काल्पनिक 'आधुनिकता'क प्रचार नहि करैत; ओ देखबैत अछि जे जीवनक सुविधा आ आन्तरिक निश्चिन्तता दू अलग बात अछि।

१२. 'खूनी' : ग्रामीण रोग, भय आ व्यवस्थाक देरी

'खूनी'मे रोगक आकस्मिकता आ ग्रामीण जीवनक सीमित चिकित्सा-सुविधा कथाक आरम्भिक तनाव बनबैत अछि। अस्वस्थ युवक, परिवारक चिन्ता, अस्पतालक आस, औषधि अथवा उपचारक अनिश्चित उपलब्धता—एहि सभसँ बीमारी निजी दुर्घटना मात्र नहि रहैत; सार्वजनिक व्यवस्था पर प्रश्न बनि उठैत अछि। देहक व्यथा आ प्रशासनिक उदासीनताक अन्तर जितबा बढ़ैत अछि, उतेक कथा भयावह बनैत अछि।

कथाक नाममे 'खून'क तीक्ष्ण ध्वनि अछि, मुदा ओकर आलोचनात्मक महत्त्व सीधा हिंसा-चित्रणक अपेक्षा ओहि सामाजिक परिस्थिति चिन्हबामे बेसी अछि जाहिमे एकटा जीवनक क्षति लेल जिम्मेदारी बँटल-बिखरल रहैत अछि। प्रश्न उठैत अछि—दोषी केवल तत्काल उपस्थित व्यक्ति अछि वा ओ व्यवस्था सेहो, जे संकटकेँ सामान्य मानि लैत अछि? एहिठाम कथाक यथार्थवादी ऊर्जा नैतिक दुविधाक रूप धारण करैत अछि। कथा पाठकक सहानुभूतिकेँ आक्रोशमे बदलबाक क्षमता रखैत अछि।

१३. 'पतिव्रता' : पितृसत्ता, देह आ श्रमक असमान राजनीति

'पतिव्रता' गामक श्रम-व्यवस्था, अभावग्रस्त परिवार आ स्त्रीक जीवनमे पुरुष-नियन्त्रित नैतिक नियमक विडम्बना खोलैत अछि। सुनरी आ परमा जकाँ पात्रक प्रसंगमे घर-परिवारक संरक्षणक भाषा ओहि आर्थिक निर्भरता सँ टकरबैत अछि जाहिसँ स्त्रीक निर्णयक क्षेत्र सिमटैत अछि। खेत, मालिक, मजदूरी, बाढ़ि-जेकाँ कठिन परिस्थिति आ दैनन्दिन श्रम कथाकेँ सामाजिक

धरातल दैत अछि। 'पतिव्रता' शब्द केवल व्यक्तिक चरित्रक प्रशंसा नहि; ओहि शब्दक सामाजिक प्रयोगक जाँच कथा करैत अछि।

स्त्री-सम्मानक दम्भ जखन स्त्रीक वास्तविक सुरक्षा, आहार, विश्राम आ अभिव्यक्तिक अधिकार नहि दैत, तखन आदर्शक आडम्बर उघड़ि पड़ैत अछि। एहिठाम पति-पत्नी अथवा परिवारक सम्बन्धकेँ समाजक आर्थिक पदानुक्रमसँ अलग कऽ पढ़ब त्रुटिपूर्ण होएत। कखनहुँ स्त्रीक इच्छा सीधा संवादमे निखरैत अछि, कखनहुँ ओकर मौन वा प्रतिरोध परिस्थितिक कठोरता व्यक्त करैत अछि। प्रभासक महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप ई अछि जे 'पतिव्रता'क रूढ़ अर्थकेँ प्रश्नांकित करैत ओ स्त्रीजीवनक सामाजिक व्यय देखबैत छथि।

तथापि नारी-अनुभवक प्रस्तुति आलोचनासँ मुक्त नहि। स्त्रीक पीड़ाकेँ पुरुष-पात्रक अनुभूतिक माध्यमसँ देखएबाक प्रवृत्ति कतेको ठाम ओकर प्रत्यक्ष आत्मकथनकेँ सीमित करि सकैत अछि। एहि सीमाक उल्लेख स्त्री-पात्रक गरिमा कम करबाक लेल नहि, बल्कि कथाक दृष्टिबिन्दु आ कथ्यक अन्तर पर आवश्यक ध्यान देबाक लेल अछि।

१४. 'अष्टावक्रक शेष कथा' : तीर्थ, पदानुक्रम आ सामूहिक भ्रम

संग्रहक अन्तिम दीर्घ कथा 'अष्टावक्रक शेष कथा' धार्मिक यात्राक समूह-दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। नामक संग 'बम' सम्बोधन, श्रद्धालुक उत्साह, यात्रा-व्यवस्था, रस्ता, टोलीक परस्पर व्यवहार आ स्थानीय सम्बन्धक चर्चा क्रमशः एकटा बहुचरित्रीय संसार रचैत अछि। धार्मिक सामूहिकता सभकेँ बराबर करि देत, एहन सहज धारणा कथा लगातार उलटैत अछि; श्रद्धालुक समूहक भीतर सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक हैसियत, परस्पर निर्भरता आ अपमानक भिन्न-भिन्न स्तर जकाँक तकराँ उपस्थित अछि।

सरदार, त्रिभुवन, महादेव आ आन संगाती पात्रक परस्पर प्रसंगसँ तीर्थ-यात्रा एकटा चलैत सामाजिक प्रयोगशाला बनैत अछि। जतए देवता धरि पहुँचबाक यात्रा मानवीय आत्म-शुद्धिक घोषणासँ जुड़ल अछि, ओतए जमीनी व्यवहारमे पद, पूर्वाग्रह आ आपसी अहंकार अपन पुरान रूप राखैत अछि। लेखक एतए धर्मक विरुद्ध सरल नारा नहि लिखैत छथि; हुनकर लक्ष्य ओ विरोध अछि जाहिमे आराधनाक सार्वजनिक भाषा आ दैनन्दिन आचरण विपरीत दिशामे चलैत अछि।

एहि दीर्घ रचनाक काल-प्रवाहमे रस्ता, विराम, समूहक बहस आ घरक समाचारक आवागमन अछि। बहुवचन संवादक कारण पाठक एकमात्र नायकक चित्तसँ बान्हल नहि रहैत छथि। ई शिल्प कथाकेँ सामूहिक नाटकीयता दैत अछि। शीर्षकमे ‘अष्टावक्र’क स्मरण विमर्शक सम्भावना खोलैत अछि—बाहरी विकृतिक अपेक्षा भीतरक टेढ़, आचरणक विसंगति आ आत्मज्ञानक प्रश्न। मुदा एहि स्मरणकेँ शास्त्रीय अष्टावक्र-आख्यानक शब्दशः पुनर्लेखन मानब आवश्यक नहि; एहि कथामे उपलब्ध प्रमुख साक्ष्य सामाजिक आ नैतिक विडम्बनाक स्वायत्त कथात्मक रूप अछि।

कथाक व्यापकता ओकर उपलब्धि आ सीमा दुनू अछि। अनेक पात्रक संग यात्रा करैत कथा समाजक बहुस्तरीय बिम्ब गढ़ैत अछि; संगहि प्रसंगान्तरक विस्तार कखनो मुख्य नाटकीय तनावकेँ ढील दैत अछि। जँ पाठक केवल एकर अन्तिम ‘सन्देश’ खोजताह, तँ ई विखराव बाधा देखाएत; मुदा जँ यात्रा-समुदायक व्यवहारक पूर्ण वितान पढ़ताह, तँ एही विस्तारमे कृतिक सामाजिक व्याप्ति भेटत।

१५. कथन-विधि : संवाद, दृष्टिबिन्दु आ समयक रूपान्तरण

प्रभासक संवादमे मैथिली समाजक पदानुक्रम स्वयं बोलैत अछि। पात्र ‘हम’, ‘तोँ’, ‘अहाँ’क चयन, सम्बोधनक रूप, तात्कालिक प्रत्युत्तर आ चुप्पीसँ अपन सामाजिक दूरी व्यक्त करैत छथि। एके वाक्य अधिकारीक मुँहसँ निकलि आदेश बनैत अछि, घरक वृद्धक मुँहसँ ओकर अर्थ परामर्श वा धमकी होइत अछि, आ निरुपाय पात्रक मुँहसँ ओ प्रार्थना बनि जाइत अछि। एहि भाषिक अन्तरकेँ समतल करि देला पर कथा सभक सामाजिक स्पन्दन नष्ट भऽ जाएत।

संग्रहमे व्यापक रूपसँ तृतीय पुरुषक कथन भेटैत अछि, मुदा अनेक प्रसंगमे कथावाचक एकटा पात्रक संवेदनाक बहुत निकट पहुँचि जाइत अछि। बाह्य दृश्य सँ आन्तरिक प्रतिक्रिया दिस आवागमन कथामे गति उत्पन्न करैत अछि। ‘दिदवल’ आ ‘मन्दाकिनी’मे स्मृति-समयक विस्तार, ‘विशेषाधिकार’मे क्षणिक घटना, ‘इजोतमे हेरायल लोकसभ’मे सामूहिक दृश्य आ ‘अष्टावक्रक शेष कथा’मे बहुपात्रीय यात्रा—ई विविधता कथाकारक प्रयोगशीलता प्रमाणित करैत अछि।

प्रभास बहुत ठाम कथान्तकेँ पूर्ण समाधान नहि बनबैत छथि। किछु निर्णायक क्षण पाठकक मनमे बेर-बेर घुरि अबैत अछि, कारण सामाजिक व्यवस्था तखनो यथावत रहैत अछि। एहि खुलेपनक संग कतहु लेखकक न्यायोन्मुख कथन अधिक स्पष्ट होइत अछि आ पाठकक अर्थनिर्माणक स्वतन्त्रता घटि सकैत अछि। संग्रहकेँ बिनु भेदक एकरूप कथाशिल्पक उदाहरण

मानब उचित नहि। एकर असल रूप विभिन्न लम्बाई, लय आ हस्तक्षेपवाली कथाविधिक संगम अछि।

१६. प्रतीक आ संरचना : घर, बाट, देह, अन्हार आ इजोत

'दिदवल'क कथासंसारमे वस्तुसभ केवल पृष्ठभूमि नहि। घरक खसैत देबाल, बन्द कोठली, बिरसैत भोजन, जाड़-कपड़ा, आवेदनक कागज, कन्हापर उठल भार, रस्ता आ भीड़—सभ एकटा सामाजिक सम्बन्धक मूर्त रूप बनैत अछि। 'मन्दाकिनी'मे घरक संरचना स्मृतिमे बदलैत अछि; 'पुनरावृत्ति'मे बन्द कोठली मानसिक अवरोधक आकार पबैत अछि; 'यात्रा : हेरायल बाटपर'मे बाट सम्भावना आ अटकाव दुनूक चिह्न बनैत अछि; 'विशेषाधिकार'मे कागज देहक आवश्यकता पर प्रशासनिक वर्चस्वक संकेत बनैत अछि।

इजोत आ अन्हारक रूपक एहि कथासभक बीच विशेष रूपसँ संवाद करैत अछि। 'धरती कुहरि उठल'क सामाजिक दृश्य, 'इजोतमे हेरायल लोकसभ'क सार्वजनिक तेज आ 'दिदवल'क रातिक मौन—तीनू क्षेत्रमे देखबाक प्रश्न अछि: के देखैत अछि, के नहि देखल जाइत अछि, आ देखल चीजकेँ बदलबाक सामर्थ्य केकरा अछि? एहि प्रश्नक कारण संग्रहक शीर्षकसभ अलग-अलग कथा होइतहुँ परस्पर व्याख्याकार बनि जाइत अछि।

१७. वर्ग, जाति, लिंग आ नैतिक प्रतिरोधक समुच्चय

गरीबी एहि संग्रहमे स्थिर दृश्यावली नहि, सम्बन्धक शक्ति-संरचना अछि। जे व्यक्तिक लग धन, जमीन, पद अथवा परिचय अछि, ओकर बाजल बात अधिक वजन पाबैत अछि; जे श्रमिक, रोगी, आश्रित अथवा एकाकी अछि, ओकर अनुभवकेँ व्यवस्था 'अपवाद' कहि टारि देबाक प्रवृत्ति राखैत अछि। ग्रामीण समाजक पदानुक्रमक संकेत अनेक कथामे उपस्थित अछि। मुदा प्रत्येक उत्पीड़नकेँ जातिक निश्चित सम्बोधनमे समेटि देब सन्दर्भहीन होएत, कारण सामाजिक वर्चस्वक प्रत्येक प्रसंगमे जाति, वर्ग, पद आ लिंगक अनुपात अलग-अलग अछि। विवेचनक विश्वसनीयता एहि भेदकेँ सुरक्षित रखबामे अछि।

स्त्री-पात्रक अनुभव एहि शक्ति-संरचनाक मूल भाग अछि। प्रतीक्षा, गृहस्थीक अधूरापन, श्रमक अदृश्य भार, सामाजिक मर्यादाक दबाव आ देहक असुरक्षा—एहि विषयसभकेँ केवल 'पारिवारिक' कहि अलग कएल नहि जा सकैत। 'पतिव्रता' आ 'मन्दाकिनी' विशेष रूपसँ स्पष्ट

करैत अछि जे घरक आन्तरिक संकट सार्वजनिक अर्थव्यवस्था सँ जुड़ल अछि। स्त्रीक मौनक आलोचनात्मक पाठ करैत काल ओकरा स्वतः स्वीकृति मानब अनुचित; तहिना प्रत्येक मौनकेँ स्वतः प्रतिरोध घोषित करब सेहो सरलीकरण होएत। स्थितिक पाठसँ अर्थ निकालब आवश्यक अछि।

लेखकक नैतिक दृष्टि पीड़ितक पक्षमे झुकल अछि, मुदा सफलता एतबे नहि। सफलता तखन अछि जखन कथा पाठककेँ निर्णय लएबाक आगाँ अपन जिज्ञासा पर जाँच करबैत अछि। संग्रहक श्रेष्ठ रचना सभमे पात्रक दुर्बलता देखाएब सहानुभूतिकेँ कम नहि करैत; ओकरा मानवीय जटिलता प्रदान करैत अछि।

१८. सौन्दर्यात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमासभ

एहि संग्रहक पहिल उपलब्धि सामाजिक विस्तार अछि। गाम, छोट शहर, कार्यालय, घर, शिक्षा-संस्था, अस्पताल, जनसमूह आ धार्मिक यात्रा—जीवनक विभिन्न क्षेत्र एकटा आख्यान-संसार बनबैत अछि। दोसर उपलब्धि विषयानुकूल रूप-विन्यास अछि: ‘विशेषाधिकार’क संक्षिप्त प्रहार ‘मन्दाकिनी’क स्मृतिसंपन्न विस्तारसँ भिन्न अछि, आ ‘अष्टावक्रक शेष कथा’क बहुपात्रीय रूप दुनूसँ अलग। तेसर उपलब्धि संवादक स्थानीय विश्वसनीयता आ पात्रक सामाजिक स्थिति अनुसार बदलैत आवाज अछि।

आलोचनात्मक सीमामे कतहु सामाजिक निष्कर्षक पूर्वानुमेयता, कतहु अनावश्यक व्याख्यात्मक विस्तार आ कतहु गौण पात्रक सीमित आन्तरिकता चिन्हल जा सकैत अछि। कथाकारक पक्षधरता जब अत्यन्त स्पष्ट भऽ जाइत अछि, तखन प्रसंग पाठकपर खोलल रहबाक बदला सिद्धान्तक उदाहरण बनि जेबाक जोखिम उठबैत अछि। दूसरी दिस, पात्रक मनमे बेसी काल ठहरबाक कारण कतेको रचनाक बाह्य नाटकीय लय धीमा पड़ैत अछि। ई सीमासभ कृतिक अवमूल्यन नहि, ओकर शिल्पक वास्तविक द्वन्द्वक सूचक अछि।

एहि कथा सभक एकटा विशिष्ट साहित्यिक मूल्य ई सेहो अछि जे आधुनिकता हुनकामे एकरेखीय ‘प्रगति’ नहि। शिक्षा, आवागमन, दूरदर्शन, दफ्तर आ सार्वजनिक संगठन उपस्थित भऽ गेल अछि; मुदा मनुष्यक असुरक्षा आ सम्बन्धक टूटन कम नहि भेल। लेखक नव व्यवस्था देखबैत छथि, संगहि पूछैत छथि जे ओकर लाभ केकर जीवनमे उतरि रहल अछि। एहि प्रश्नसँ संग्रह अपन ऐतिहासिक समयसँ आगाँ वर्तमान पाठकसँ सेहो संवाद स्थापित करैत अछि।

१९. उपसंहार

'दिदवल'कें एकटा मृत्युपरान्त प्रकाशित कथा-संग्रह मानि मात्र ऐतिहासिक स्मारक बना देब ओकर जीवित साहित्यिक शक्तिक अवमूल्यन होएत। एहि बीस कथामे मनुष्यक जीवन पर पड़ैत अनवरत दबाव अलग-अलग रूप धारण करैत अछि—कखनो प्रतियोगिताक मंचपर कथालेखनक नैतिक प्रश्न, कखनो कार्यालयक आवेदन, कखनो नदिया-पार करबाक यात्रा, कखनो घरक चुप्पी, कखनो भूखल भीड़, कखनो खेतक मालिकाना सम्बन्ध, कखनो तीर्थयात्रीक सामूहिक आचरण। विषयक ई विविधता वस्तुतः एकटा मौलिक जिज्ञासाक अनेक रूप अछि : मनुष्य अपन सम्मान आ विवेककें असमान परिस्थितिमे कोना बचबैत अछि?

प्रभास कुमार चौधरीक कथा-दृष्टि करुणा आ व्यंग्य, सहानुभूति आ संशय, दृश्य-यथार्थ आ भीतरी पीड़ाक बीच आवागमन करैत अछि। हुनकर कतेको कथा सामाजिक न्यायक तीक्ष्ण आग्रह करैत अछि, मुदा अपन श्रेष्ठ क्षणमे ओ नारा सँ आगाँ बढ़ि मानवीय परिस्थिति रचैत अछि। एहि कारण 'दिदवल' आधुनिक मैथिली कथाक अध्ययनमे सामाजिक इतिहासक दस्तावेज मात्र नहि; भाषा, स्मृति, सत्ता, सम्बन्ध आ कथाशिल्पक अन्तःक्रियाकें समझबाक एकटा महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पाठ अछि।

सन्दर्भग्रन्थ-सूची

चौधरी, प्रभास कुमार। दिदवल। ज्योत्सना प्रकाशन, पिण्डारुछ, दरभंगा, २००४।

चौधरी, प्रभास कुमार। कथा-प्रभास : तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा। मैथिली अकादमी, पटना, १९८८।

चौधरी, प्रभास कुमार। प्रभासक कथा। १९८९। (लेखकक प्रकाशित कृतिक सूचीमे उल्लिखित।)

साहित्य अकादेमी। 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार : मैथिली', सम्मान-सूची, १९९० क प्रविष्टि—'प्रभासक कथा' आ प्रभास कुमार चौधरी। https://sahitya-akademi.gov.in/awards/akademi%20samman_suchi_h.jsp

विदेह—प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका। 'प्रभास कुमार चौधरी' : लेखक-परिचय आ प्रकाशित कृतिक सूची। https://videha-ejournal.github.io/videha/ratna.htm

मैथिल मंच, बाबूजीक पुस्तकालय। 'मैथिली : कथा' पुस्तक-सूची; 'दिदवल'क प्रकाशन-विवरण। https://www.maithilmanch.in/babujeekpustakalaya/maithili-katha/

टोकियो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय, संस्थागत ग्रन्थ-सूची। ‘कथा-प्रभास : तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा’, ग्रन्थसूचक प्रविष्टि। https://tufs.repo.nii.ac.jp/records/27003

७. प्रभास कुमार चौधरीक ‘कथा-प्रभास’ : तीन दशकक मैथिली कथामे समाज, व्यक्ति आ कथाशिल्पक रूपान्तरण

शोधपरक साहित्यिक समीक्षा

सारांश

प्रभास कुमार चौधरीक ‘कथा-प्रभास’ मैथिली कथाक तीन दशकगत चरणकेँ एकहि कृतिमे आमने-सामने रखैत अछि। मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित एहि संकलनक रचना-संरचना सातम, आठम आ नवम दशकक तीन खण्डमे विभाजित अछि; एहि खण्डसभमे क्रमशः चौदह, सात आ सात कथा संगृहीत अछि। एहि आलेखक केन्द्र संग्रहक कथावस्तु मात्र नहि, बल्कि कथावाचकक स्थिति, गाम-नगरक परस्पर सम्बन्ध, परिवार आ पीढ़ीक तनाव, सत्ता-संस्थाक दैनिक प्रभाव, पत्र आ संवादक रूप, विनोद-व्यंग्यक स्वर, स्त्री-पात्रक उपस्थिति तथा प्रतीकात्मक शीर्षकक अर्थ-विस्तार अछि। ‘लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल’, ‘गिरगिट’, ‘दिनचर्या’, ‘पिता’, ‘मलाहक टोल’, ‘पुरान चरित्रक नव कथा’, ‘स्थानान्तरण’, ‘विकलांग’, ‘बाढ़ि’ आ ‘रक्षक’ आदि कथाक सहायतासँ देखाओल गेल अछि जे प्रभासक कथा-जगत सामाजिक सम्बन्धक प्रत्यक्ष विवरणसँ चलि आत्मपरीक्षण, संस्था-समीक्षा आ नैतिक असहजताक अधिक जटिल विन्यास धरि पहुँचैत अछि। एहि परिवर्तने एकरेखीय प्रगति नहि, अपितु पुरान अनुभवक नव सन्दर्भमे पुनरागमन अछि। कथाकारक सामर्थ्य बोलचालक स्वाभाविक मैथिली, आत्मालोचनापरक कथन आ आम जीवनक सूक्ष्म विडम्बना पकड़बामे अछि; सीमा कतहु-कतहु व्याख्यात्मक कथन, विस्तार आ पुरुष-केन्द्रित दृष्टिसँ उत्पन्न होइत अछि। समग्रतः ‘कथा-प्रभास’ केँ बीसम शताब्दीक उत्तरार्धक मैथिली सामाजिक मानस आ कथाकला दुनूक आलोचनात्मक पाठ मानल जा सकैत अछि।

बीजशब्द : प्रभास कुमार चौधरी; मैथिली कथा; कथा-प्रभास; तीन दशक; कथन-विधि; गाम-समाज; परिवार; संस्थागत सत्ता; व्यंग्य; आधुनिकता

१. प्रस्तावना : कथासंग्रहक मूल प्रश्न

प्रभास कुमार चौधरीक कथा-संसारकेँ मात्र गामक संस्मरण वा नगरक बदलैत जीवनक प्रतिच्छवि कहि सीमित कएल नहि जा सकैत। हुनकर कथा ओहि जगह सँ उठैत अछि जतय व्यक्ति अपन विषयमे जे कहैत अछि, आ ओकर व्यवहार जाहि सत्यक उद्घाटन करैत अछि, ओ दुनू एक-दोसरासँ टकराइत अछि। व्यक्ति स्वयंकेँ उदार, न्यायप्रिय, विवेकी अथवा आधुनिक मानैत अछि; मुदा पारिवारिक सम्बन्ध, जातीय अनुशासन, दैनन्दिन भय आ अवसरक आकस्मिक उपस्थितिमे ओकर आत्मचित्र डगमगा जाइत अछि। एहि अन्तरालमे कथाकारक विशेष रुचि अछि। ‘कथा-प्रभास’क महत्त्व एही कारणेँ केवल विविध कथाक एकत्रीकरणमे नहि, बल्कि एकटा बदलैत समाजक आत्मविरोध पकड़बाक कथा-दृष्टिमे अछि।

पोथीक उपशीर्षक ‘तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा’ पाठककेँ कालगत पाठक अपेक्षा दैत अछि। मुदा ‘प्रतिनिधि’ शब्दकेँ कड़ाइ सँ लएब आवश्यक अछि। एकर अर्थ ई नहि जे प्रत्येक वर्षक साहित्यिक प्रवृत्तिक निष्पक्ष सर्वेक्षण उपलब्ध कराओल गेल अछि। ई एकहि कथाकारक चुनल रचनासभक माध्यमेँ तीन कालखण्डक जीवनानुभव आ शिल्प-प्रयोगक रेखाचित्र अछि। तेँ अहीठाम रचनाक क्रम, शीर्षकक गठन, कथा-स्थितिक परिवर्तन आ कथनक अन्तरपर ध्यान देब अपेक्षित अछि। कथाकारक साहित्यिक विकासक चर्चा करैत कालक समाजशास्त्रीय परिवर्तन आ व्यक्तिगत शिल्प-चयनकेँ फराक राखब सेहो जरूरी अछि।

संग्रह मैथिली अकादमी, पटनाक प्रकाशन अछि। ‘प्रकाशकीय’मे देवकान्त झा कथाकारक ग्रामीण आ नगरीय अनुभव, बदलैत समाजक यथार्थ तथा व्यापक मानवीय दृष्टिक चर्चा करैत छथि। ‘प्रस्ताविकी’मे फणीन्द्र नाथ ओझा रचनाक विविध अनुभव-क्षेत्र आ सामाजिक चेतनापर ध्यान आकर्षित करैत छथि। ई समकालीन स्वागत-वक्तव्य पाठकीय दिशासूचक अछि, अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय नहि। प्रस्तुत समीक्षामे ओहि प्रशंसात्मक अपेक्षाकेँ कथाक अपन प्रक्रिया, विडम्बना आ भाषिक संयमक कसौटीपर परखल गेल अछि।

२. तीन दशकक रचना-संरचना : साहित्यिक समयक निर्माण

सातम दशकक खण्डमे ‘लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल’, ‘टूटल कलम : लभरल आखर’, ‘सुभद्रा-हरण’, ‘गय बिढ़नी : तोहर डंक’, ‘उपरफाँटू’, ‘गिरगिट’, ‘क्लान्त’, ‘दिनचर्या’, ‘असाध्य’, ‘अरगनी’, ‘सूर्यास्त’, ‘अनचिहार अप्पन’, ‘धमकी’ आ ‘दुख’ संगृहीत अछि। आठम

दशकक खण्डमे 'युद्ध-विराम', 'पिता', 'उत्तरकाण्ड', 'ढेप', 'मलाहक टोल', 'पुरान चरित्रक नव कथा' आ 'भयाक्रान्त' अछि। नवम दशकक खण्ड 'एकालाप', 'इन्द्रधनुष', 'स्थानान्तरण', 'बजरंगक पोता', 'विकलांग', 'बाढ़ि' आ 'रक्षक' सँ बनल अछि। ई व्यवस्थित काल-विभाजन स्वयं आलोचनाक पहिल आधार अछि।

पहिल खण्डक अनेक शीर्षक भाव, वस्तु आ व्यक्ति-व्यवहारक गहन सम्बन्ध खोलैत अछि: लिफाफ, कलम, डंक, गिरगिट, अरगनी, सूर्यास्त। दोसर खण्डमे युद्ध, पिता, उत्तरकाण्ड, टोल, पुरान चरित्र आ भय—अर्थात् सम्बन्ध आ समष्टिक बीच दबावक घनत्व बढ़ैत अछि। तेसर खण्डमे एकालाप, स्थानान्तरण, विकलांगता, बाढ़ि आ रक्षक—व्यक्ति, संस्थान, संकट आ संरक्षणक प्रश्न अधिक प्रत्यक्ष होइत अछि। शीर्षकसँ मात्र कथाक पूर्ण अर्थ निर्धारित नहि होइत; तथापि शीर्षक-समूहक ई अनुक्रम रचना-जगतक केन्द्र सरकबाक संकेत अवश्य दैत अछि।

एहि त्रिस्तरीय गठनक एकटा आलोचनात्मक लाभ अछि: एकहि सामाजिक शब्दक अर्थ समयक संग बदलैत देखल जा सकैत अछि। गाम पहिल खण्डमे प्रथमतः जीवनक निकट परिवेश आ पारस्परिक निगरानीक स्थल बनैत अछि; मध्य खण्डमे वंश, स्मृति आ सामूहिक अधिकारसँ जकड़ल सामाजिक संरचना; आ उत्तरवर्ती खण्डमे ओकर सम्बन्ध कार्यालय, नियुक्ति, प्रशासनिक हस्तक्षेप तथा व्यापक सार्वजनिक संकटसँ बनैत अछि। तथापि गाम-नगरकेँ दू अलग संसार बनाकऽ नहि पढ़बाक चाही; प्रभासक कथामे एक क्षेत्रक व्यवहार दोसर क्षेत्रमे लगातार प्रवेश करैत अछि।

काल-खण्डक भीतर समान प्रकारक कथा नहि अछि। कतहु प्रथमपुरुषक तीव्र आत्मवक्तव्य, कतहु पात्र-संवाद, कतहु व्यंग्यात्मक स्थिति आ कतहु अपेक्षाकृत विस्तारित सामाजिक प्रसंग। एही विविधताकेँ एकटा निश्चित 'प्रारम्भिक यथार्थवाद' सँ 'अन्तिम आधुनिकतावाद' धरि सरल आरोहण मानब भ्रामक हएत। अधिक उपयुक्त निष्कर्ष ई अछि जे काल बदललासँ रचनाक प्रश्न घनिष्ठ आ बहुस्तरीय भेल, आ कथाकार कई पुरान विषयकेँ नव रूपमे फेर सँ देखलनि।

३. लिफाफ, कलम आ कथाकारक आत्मपरीक्षण

'लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल'क आरम्भमे टेबुलपर रखल लिफाफ आ ओकरा खोलबाक क्रम कथानकक प्रमुख उपकरण बनैत अछि। लिफाफमे कोनो सूचना मात्र नहि, बल्कि सम्बोधन,

स्मृति, अपेक्षा आ आत्ममूल्यांकनक अवसर आबि पहुँचैत अछि। सामान्य पत्राचारक क्षण विस्तृत सामाजिक मनोविज्ञानक द्वार बनि जाइत अछि। कथाकार एकटा साधारण वस्तुकेँ मनक बहुतेक तह खोलबाक साधन बनबैत छथि। लिफाफक 'बन्द' अवस्था आ चिट्ठीक 'खूजल' अवस्था बीच पाठकक उत्सुकता आ कथावाचकक आत्मरक्षा एकहि बेर सक्रिय होइत अछि।

एहने प्रकारेँ 'टूटल कलम : लभरल आखर'मे लेखनक उपकरण आ भाषाक अस्थिरता एक दोसराक पूरक रूपक बनैत अछि। कलम टूटैत अछि तँ मात्र लेखन बाधित नहि होइत; अपना कहबाक अधिकार, भावक विश्वसनीयता आ अभिव्यक्तिक मर्यादा प्रश्नांकित होइत अछि। शीर्षकमे वस्तुगत टूटनक संग 'आखर'क अव्यवस्था जोड़ल अछि। एहि द्वैतक कारण पाठक व्यक्तिगत अनुभवकेँ भाषा-विषयक चिन्तनक रूपमे सेहो पढ़ि सकैत छथि। प्रभासक आरम्भिक कथामे कथावस्तुक भीतर कथा लिखबाक समस्या उपस्थित करबाक ई प्रवृत्ति खास ध्यान देबाक अछि।

ई दुनू रचना पढ़ैत एकटा सावधानी अपेक्षित अछि: प्रथमपुरुषमे कहलगेल कथनकेँ लेखकक अनिवार्य आत्मस्वीकार नहि मानबाक चाही। कथावाचक जे देखैत अछि, ओ स्वयं चयन करैत अछि; जे नहि कहैत अछि, सेहो अर्थ उत्पन्न करैत अछि। प्रभासक कथा-कौशल एहि छूटल अवकाशमे काम करैत अछि। विनोदक हलुक स्वर बहुत बेर आत्मसन्तोषक अन्तरविरोध खोलैत अछि। पाठककेँ लगैत अछि जे कथन सहज गप्पक तरहें बहि रहल अछि, मुदा एहि सहजताक भीतर आत्मविश्वासक असुरक्षा आ सामाजिक स्वीकृतिक चाह लगातार गुँजल रहैत अछि।

४. गामक सत्ता, सम्बन्ध आ रूप-परिवर्तन

'गय बिढ़नी : तोहर डंक'मे 'डंक'क प्रतिमा व्यक्तिगत खिन्नता आ सामाजिक अपमानक असरकेँ एकठाम करैत अछि। आघात केवल तत्कालीन विवाद नहि; ओकर असर स्मृतिमे रहि जाइत अछि। कथामे बोलचालक प्रसंग, प्रत्युत्तर आ लोकभाषाक चपलता मिलि एकटा एहन वातावरण रचैत अछि जतय तर्क सार्वजनिक होइत अछि, मुदा मनक चोट निजी रहैत अछि। शीर्षकक आक्रामक सम्बोधन सेहो ई बतबैत अछि जे कथा केवल बाहरी घटनाक वर्णन नहि, प्रतिक्रिया आ सम्बन्धक छिपल हिंसाक अन्वेषण अछि।

'उपरफाँटू'मे गामक स्थान-विभाजन आ लोकसम्बन्धक ताना-बाना कथाक व्यावहारिक आधार बनैत अछि। आवागमन, बाट, घरक पहचान, लोकक आपसी तजुर्बा—ई सभ कथा-

संसारकेँ मूर्त करैत अछि। स्थान अहीठाम रंगीन पृष्ठभूमि नहि, बल्कि आचार-व्यवहार नियन्त्रित करयवला सामाजिक शक्ति अछि। के ककरा लग जा सकैत अछि, के ककर गप मानैत अछि, आ के अपन स्थिति बचयबाक कोशिश करैत अछि—ई सभ प्रश्न स्थानिक निकटतासँ जोड़ल अछि। गामक भूगोलक भीतर प्रतिष्ठा आ हाशियाक अन्तर देखाइत अछि।

'गिरगिट'मे रूपान्तरक पारम्परिक रूपक मनुष्यक अवसरानुकूल व्यवहारकेँ पढ़बाक आधार बनैत अछि। कथा-जगतक संवादमे जे आत्मीयता देखाइत अछि, ओकर पाछाँ हित, स्वार्थ, भय आ परिस्थिति-अनुसार बदलैत रुखक परत अछि। एही कारण 'गिरगिट' केँ केवल कोनो एक पाखण्डी पात्रक व्यंग्यचित्र मानब अपर्याप्त हएत। बदलैत रंगक विचार व्यक्ति-सामाजिक सम्बन्धक सामूहिक समस्या बनि जाइत अछि: ककरो निष्ठा स्थिर नहि, आ वचनक मूल्य ओकर परिस्थिति द्वारा लगातार पुनर्निर्धारित होइत अछि।

'क्लान्त' आ 'दिनचर्या' जीवनक साधारण क्रममे मानसिक थकान आ एकरसताक गूढ़ रूप देखबैत छथि। 'क्लान्त'क आरम्भे ध्वनि, अखबार आ चिन्ताक आपसी उपस्थिति अनुभव-जगतकेँ टुकड़ा-टुकड़ा करैत अछि। 'दिनचर्या'मे दिनक पुनरावृत्ति आ सार्वजनिक बोलचालक स्वर पात्रक भीतर उठैत प्रश्नकेँ ढाँकि दैत अछि। दुनू कथामे समय घड़ीक हिसाब मात्र नहि, मनक भार अछि। आरम्भिक खण्डमे भितरक एहि थकानक उपस्थिति कथाकारक सामाजिक दृष्टिकेँ मनोवैज्ञानिक आयाम प्रदान करैत अछि।

'असाध्य'क ग्रामजीवनमे रोग, संकट अथवा कठिनाइबारे कथन समाजक प्रतिक्रिया आ व्यक्ति-अनुभव बीच दूरी देखबैत अछि। कथाक आरम्भमे 'एना कहियो नहि भेल रहैक' जेकाँ अभिव्यक्ति साधारण लोक-धारणाकेँ सोझाँ आनैत अछि। केकरो समस्या सामूहिक चर्चाक विषय बनि सकैत अछि, मुदा ताहि चर्चासँ पीड़ितक निज अनुभव अवश्य नहि सम्हरैत। एहि दूरीसँ कहानीक करुण स्वर उत्पन्न होइत अछि। पाठक देखैत छथि जे सामुदायिक निकटता संवेदनशीलताक गारंटी नहि अछि।

५. 'अरगनी', 'सूर्यास्त' आ 'अनचिहार अप्पन' : दैनिकताक भीतर संकट

'अरगनी'क वस्तु-संसार घरक छोटी-छोटी जरूरत, अभाव आ जीवनक अदेखल श्रमसँ बनल अछि। साधारण घरेलू वस्तुकेँ कथा-केन्द्र बनएब प्रभासक साहित्यिक लोकतन्त्रक द्योतक अछि: जीवनक ओ अनुभव, जाहि पर प्रायः नायकत्वक प्रकाश नहि पड़ैत, कथा-योग्य मानल जाइत

अछि। अभावक वर्णनमे हँसी आ लज्जाक सह-अस्तित्व पाठककेँ सहज भावुकतासँ बचबैत अछि। वस्तु आ मनुष्यक सम्बन्ध ई प्रश्न उठबैत अछि जे गरीबी केवल संसाधनक कमी अछि, कि अपन गरिमा बचयबाक निरन्तर संघर्ष सेहो।

'सूर्यास्त'मे अस्त होइत सूर्य समयक अन्तक सजावटी बिम्ब नहि रहि जाइत; वृद्धत्व, स्मृति, अनुपस्थिति आ सम्बन्धक थकानक संकेत बनैत अछि। एहि कथाक आरम्भेँ परेश बाबूक उपस्थिति आ घर-परिवारक बोध पाठककेँ जीवनक एक एहन बिन्दुपर लऽ जाइत अछि जतय अतीत सब दिन वर्तमानकेँ देखबाक तरीका प्रभावित करैत अछि। कथाकार घटनाकेँ आकस्मिक नाटकीय मोड़ देबाक बदला समयक धीमा दबावकेँ महत्त्व दैत छथि। एही सँ कथा निजी अनुभव होइतहुँ व्यापक पीढ़ीगत अनुभूतिकेँ स्पर्श करैत अछि।

'अनचिहार अप्पन' शीर्षकमे परस्पर-विरोधी संवेदना अछि: जे अपन अछि, ओ चिन्हार नहि रहल। 'अपन'क भावात्मक निकटता आ 'अनचिहार'क दूरी एकहि वाक्यांशमे टकराइत अछि। कथा-पाठमे ई विरोध मनुष्यक पहचानक सामाजिक निर्मिति बुझबाक रास्ता खोलैत अछि। गाम, सम्बन्ध आ स्मृतिमे अपना मानयवला लोक अपरिचयक अनुभव किएक करैत अछि? कथा एहने प्रश्नकेँ रोजमर्राक व्यवहारक भीतर राखैत अछि। सम्बन्धक बाहरी निरन्तरता ओकर आन्तरिक स्थिरता सिद्ध नहि करैत—ई संग्रहक बारम्बार उठैत केन्द्रीय बोध अछि।

'धमकी' आ 'दुख'मे भय, पारिवारिक असुरक्षा आ भावनात्मक चोटक स्वर अधिक तीव्र होइत अछि। 'धमकी' संवादक प्रवाहसँ ई देखबैत अछि जे सम्बन्धमे कहल गेल शब्द क्रियाक पहिनेही दबावक साधन बनि जाइत अछि। 'दुख'क विस्तारित प्रसंगमे निजी पीड़ा, गाम-घरक लोकमत आ सामाजिक परामर्शक एकटा गुंथल स्थिति सोझाँ अबैत अछि। ई पीड़ा कोनो एकटा नाटकीय घटना धरि सीमित नहि रहि सकैत। कथाकार दुःखक सामूहिक व्याख्या आ व्यक्तिक अनकहल पीड़ा बीच तनावकेँ सजीव बनबैत छथि।

६. आठम दशकक कथाखण्ड : परिवार, स्मृति आ पीढ़ीक प्रश्न

आठम दशकक पहिल कथा 'युद्ध-विराम'क शीर्षक बाहरी संघर्ष आ अस्थायी शान्तिक बोध जगबैत अछि। एहि रचनामे पारिवारिक सम्बन्ध, विवाहसँ जुड़ल सोच आ पीढ़ीक मतान्तर कथाक महत्त्वपूर्ण धरातल बनैत अछि। 'विराम' शब्द 'अन्त' नहि अछि; ओकर भीतर दोबारा संघर्ष उभरबाक सम्भावना रहैत अछि। प्रभास पारिवारिक टकराहटकेँ नितान्त निजी कहलासँ

परहेज करैत छथि, कारण परिवार अपन निर्णय गामक प्रतिष्ठा आ समाजक व्यवहारसँ अलग कऽ नहि लऽ सकैत।

‘पिता’ एहि खण्डक भावात्मक केन्द्रक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। कथाक आरम्भमे गाम, पातर-पातर सम्बन्ध, चिट्ठी आ अपन सामाजिक परिचयक प्रश्न एकहि बुनावटमे आबैत अछि। पिताक अस्तित्व मात्र अधिकारक शीर्षक नहि; ओकर भीतर असुरक्षा, अपेक्षा, असमर्थता आ सन्तानक प्रति अनिर्वचनीय जुड़ाव घुलल अछि। प्रभास पिता-पुत्रक सम्बन्धकेँ आदर्शीकरणक एकटा सपाट सूत्रसँ नहि पढ़ैत छथि। परिवारक स्मृतिकेँ ओ मानवीय निकटता आ मर्यादाक द्वन्द्वक रूपमे राखैत छथि।

‘उत्तरकाण्ड’ शीर्षक अपन सांस्कृतिक स्मृतिक कारण विशेष उल्लेखनीय अछि। रामकथाक उत्तरकाण्ड शब्द सुनिते पाठकक मोनमे विजयक बादक अस्थिरता, न्याय आ त्यागक प्रश्न उठैत अछि। प्रभास एहि नामक सहायतासँ समकालीन व्यवहारक एकटा नव व्याख्यात्मक सन्दर्भ सम्भव बनबैत छथि। एहि रचनाकेँ प्रत्यक्ष पौराणिक पुनर्कथन कहि देब सरलीकरण हएत; अधिक महत्त्वपूर्ण ई अछि जे परिचित सांस्कृतिक नाम पाठकक नैतिक अपेक्षाकेँ जगबैत अछि आ समकालीन घटनासँ ओकर मुठभेड़ करबैत अछि।

‘ढेप’मे कथाकार गामक रचनात्मक बोली आ चरित्रक आपसी सम्बन्धसँ सामाजिक पदानुक्रमक जटिल छवि रचैत छथि। ढेपक वस्तुगत अर्थे यथेष्ट नहि; एकर साधारणपन मनुष्यक मूल्यांकन आ सामाजिक तुच्छीकरणक प्रतीकात्मक सम्भावना खोलैत अछि। कथा एहि प्रश्नक दिस लऽ जाइत अछि जे समाज व्यक्ति केँ कोन आधारपर पैघ-छोट ठहरबैत अछि, आ श्रम, जाति, प्रतिष्ठा अथवा निर्बलताक परस्पर सम्बन्ध सँ ओकर जीवन कोना गठित होइत अछि।

‘मलाहक टोल’क विशेषता शीर्षकहिसँ एकटा सामाजिक भूगोल उद्घाटित करब अछि। टोल केवळ निवासक सीमा नहि, पारम्परिक पेशा, सामाजिक दूरी, श्रम आ सामुदायिक पहिचानक संकेत अछि। मुख्यधाराक गाम-वर्णनमे जे लोक प्रायः परिधिमे धकेलल जाइत छथि, हुनक स्थानकेँ शीर्षकमे अग्रभाग देब अर्थपूर्ण चयन अछि। एतय प्रश्न ई नहि जे टोलक लोकक जीवनकेँ रोमान्तिक सम्मानक चित्रमे बदैल देल जाए; आलोचनाक कसौटी ई अछि जे कथाकार हुनकर सामाजिक परिस्थिति, अनुभवक स्वर आ न्याय-अन्यायक रूपकेँ कतबा जटिलतासँ देखबैत छथि।

‘पुरान चरित्रक नव कथा’ आत्मसचेत शीर्षक अछि। ‘पुरान’ आ ‘नव’क प्रतिपक्षसँ कथा स्मृति, सामाजिक भूमिकाक दोहराव तथा आजुक भाषामे पुरान आख्यानक पुनर्पाठक सम्भावना खोलैत अछि। पात्र केवल नामधारी व्यक्ति नहि; ओ समाजक किछु विरासतमे भेटल भूमिका निभबैत अछि। ‘नव कथा’ ओहि भूमिका कैँ पुनः प्रश्नांकित करैत अछि। एहि बिन्दुपर प्रभासक रचना इतिहासकेँ पुनरावृत्ति मात्र नहि, वर्तमानमे अर्थक पुनर्निर्माणक प्रक्रिया मानैत देखाइत अछि।

‘भयाक्रान्त’ आठम दशकक खण्डकेँ आशंकाक गंभीर स्वर दैत अछि। भय केवल प्राणरक्षाक सहज प्रवृत्ति नहि; सामाजिक मूल्यांकन, प्रतिष्ठाक क्षति, परिवारक भविष्य आ अनिश्चित निर्णयसभ सेहो भय उत्पन्न करैत अछि। कथामे बाहरी व्यवहारक संग भीतरी आशंका चलैत अछि। एहि प्रकार मध्य खण्ड व्यक्तिगत अनुभवक सामाजिक व्याख्या करबाक दृष्टिसँ अधिक घनिष्ठ होइत अछि: पात्रक ‘हम’ परिवारक ‘हम’ आ समुदाय द्वारा आरोपित ‘हम’ सँ निरन्तर टकराइत अछि।

७. नवम दशक : एकालापसँ संस्थागत सत्ता धरि

नवम दशकक आरम्भ ‘एकालाप’सँ होइत अछि। एहि शब्दसँ कथा-स्वरक केन्द्रभूतता स्पष्ट होइत अछि: संवादक संसारमे सेहो कोनो व्यक्ति अपन भीतर सँ एकल स्वरमे बजैत रहि सकैत अछि। कथाक आरम्भे साधारण दृश्य आ अनुभवकेँ प्रथमपुरुषक अवलोकनक माध्यमेँ ग्रहण कएल गेल अछि। अपन मनक कथन पाठकक सोझाँ खोलब आत्मपारदर्शिता नहि; ओ स्मृति, असहजता आ तर्कक चयनित क्रम सेहो अछि। एकालापक संरचना एहि कारण पाठकसँ सहमतिक बदला जाँचक माँग करैत अछि।

‘इन्द्रधनुष’मे रंगक सम्भावना आ बदलैत प्रकाशक प्रतिमा समूचा कथासंसारक तनावसँ पढ़बाक योग्य अछि। इन्द्रधनुष क्षणिक सौन्दर्यक चिह्न होइतहुँ स्थायी समाधान नहि। कथाक पात्र आ सम्बन्ध जतय दैनन्दिन विषमता सँ घेरल अछि, ओतय रंगक अनुभव भविष्यक कल्पनाक संक्षिप्त अवकाश दैत अछि। प्रभासक शिल्प एहन बिम्बकेँ अवश्य सांकेतिक बनबैत अछि, मुदा ओकर अर्थ जीवनक ठोस परिस्थिति सँ काटि कऽ नहि बुझल जा सकैत। एहि कथा-पाठमे आशा आ अस्थिरता एकहि बेर उपस्थित अछि।

‘स्थानान्तरण’ उत्तरवर्ती खण्डक सबसँ महत्त्वपूर्ण संस्थागत कथा-शीर्षकसभमे अछि। स्थान बदलनाइ अहीठाम कार्यालयी आदेशक प्रशासकीय घटना मात्र नहि; व्यक्ति अपन सामाजिक सम्बन्ध, घरक जिम्मेदारी, प्रतिष्ठा आ मानसिक सुरक्षितताक प्रश्नसँ ओकरा जोड़ैत अछि। रोजमर्राक कार्य-संस्कृति, निवेदन, निर्णय आ सम्बन्ध-तंत्रक प्रति कथावाचकक प्रतिक्रिया अधिकारक जटिल स्वरूप देखबैत अछि। संस्था कागजपर एकरूप नियमसँ चलयवाली संरचना अछि, मुदा व्यक्ति ओकर भीतर पहुँच, परिचय आ भयक अनौपचारिक तरिका खोजैत रहैत अछि। एहि प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अन्तरालमे कथा आलोचनात्मक बनैत अछि।

‘बजरंगक पोता’ नाममे वंश, पारिवारिक स्मृति आ पीढ़ीक वारिस होयबाक विशेष सामाजिक अर्थ अछि। पोता कोनो परिवारक सदस्य मात्र नहि; ओ पुरान प्रतिष्ठा वा अधूरा कामक भविष्योन्मुख वाहक मानल जा सकैत अछि। मुदा एहन वारिस-निर्माणमे व्यक्तिक निजी इच्छा कोना स्थान पबैत अछि? एही प्रश्नसँ कथा पढ़बाक एक उपयोगी दृष्टि भेटैत अछि। शीर्षक मानव-मूल्यकेँ स्वतन्त्र व्यक्तित्वक बदला वंशानुक्रममे परिभाषित करबाक प्रवृत्तिक आलोचनात्मक परीक्षणक अवसर दैत अछि।

‘विकलांग’क कथा-परिवेशमे परीक्षा, कामक खोज, कार्यालयक व्यवहार आ योग्यता-विषयक प्रश्न उपस्थित होइत अछि। एतय ‘विकलांग’क अर्थकेँ असावधानीसँ केवल शारीरिक अक्षमताक रूपकमे बदलि देब अनुचित हएत। पाठककेँ पात्रक वास्तविक परिस्थिति आ समाज ओकर प्रति की प्रकारक अनुमान आरोपित करैत अछि—दुनूक अन्तर देखबाक चाही। कथा-व्यवहारमे संस्थागत उपेक्षा, आत्मसम्मानक चिंता आ अवसरक असमानता आओर विश्लेषण योग्य बनैत अछि। व्यंग्यक उपयोग तखन सार्थक अछि जखन ओ व्यक्ति पर नहि, अन्यायपूर्ण अपेक्षा आ सामाजिक क्रूरतापर लक्षित हो।

‘बाढ़ि’क प्रसंग मिथिलाक भौगोलिक जीवनसँ अभिन्न मानवीय संकटकेँ सोझाँ आनैत अछि। पानि एकाएक संकट नहि बनैत; बाढ़िक अनुभव राहत, आवागमन, गृहस्थी, आजीविका आ सामुदायिक सहायता-संरचनाक प्रश्न लऽ कऽ अबैत अछि। प्राकृतिक संकटमे असमानता नग्न भऽ उठैत अछि: सभ लोकक घर, साधन आ बचबाक सामर्थ्य एक समान नहि होइत। प्रभासक कथाक व्यापक सामाजिक दृष्टिसँ ई रचना जोड़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे पर्यावरणक घटना आ प्रशासनक प्रतिक्रिया एक दोसरासँ अलग नहि पढ़ल जा सकैत।

संग्रहक अन्तिम कथा ‘रक्षक’ शीर्षकमे संरक्षण आ नियन्त्रणक द्वैत संग्रहीत करैत अछि। कथा-आरम्भमे कार्यालयी वातावरण, प्रतीक्षा आ व्यक्तिगत असहजताक स्थिति बनैत अछि। ‘रक्षक’ शब्द स्वयंसिद्ध सद्गुण नहि; के ककर रक्षा करैत अछि, आ रक्षा ककर अधिकारक बल पर सम्भव होइत अछि—ई प्रश्न आलोचनाक केन्द्रमे आबैत अछि। संग्रहक आरम्भमे पत्र आ व्यक्तिक भीतरक उहापोह, तथा अन्तिम दिशामे संस्थागत व्यवहार आ अधिकारक प्रश्न, एकटा अर्थपूर्ण संरचनात्मक वक्र बनबैत अछि।

८. पत्र, आवाज आ मौन : कथनक तत्त्व

प्रभासक अनेक कथामे पत्र, चिट्ठी, कागज, लिखित सूचना, टेबुल आ कार्यालय एहन वस्तु नहि जिनका हटेला पर कथानक जसक तस रहत। ई सभ मनुष्य आ सत्ता बीचक माध्यम अछि। चिट्ठी आत्मीय सम्बन्ध बचबैत सेहो अछि आ अनुपस्थिति उजागर करैत सेहो; कागज अधिकार देबयक साधन सेहो अछि आ असमर्थताक प्रमाण सेहो बनि सकैत अछि। ‘लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल’ सँ ‘स्थानान्तरण’ धरि वस्तुसभक ई श्रेणी कथासंग्रहमे समयक संग संप्रेषणक सामाजिक अर्थ बदललाक संकेत दैत अछि।

कथावाचकक आवाज बहुत बेर आडम्बरहीन लगैत अछि। ओ अपन अनुभव ओहि तरहेँ कहैत अछि जेना श्रोता सोझाँ बैसल हो। मुदा प्रत्यक्ष सम्बोधनक एहि निकटताक भीतर चयनित सूचना, स्मृतिक छलाँग आ अपूर्ण निर्णयक जटिलता अछि। कहियो कथन आत्मरक्षाक साधन बनैत अछि, कहियो आत्मस्वीकारक; कहियो पाठककेँ कथावाचकक सहानुभूति भेटैत अछि, कहियो ओहि कथावाचकक दृष्टिक संकीर्णतापर प्रश्न उठैत अछि। एहि दुहरी सम्भावनाक कारण संग्रहक प्रथमपुरुषक कथा-स्वर गतिशील अछि।

संवादक स्तरपर कथाकारक उपलब्धि विशिष्ट अछि। पात्रसभ सँभाषणमे सामाजिक स्थान, सम्मानसूचक दूरी, आत्मीयता, लोकबुद्धि आ अहंकार प्रकट करैत छथि। वार्तालाप मात्र कथानक आगाँ बढ़यबाक यन्त्र नहि; ओ स्वयं सामाजिक क्रिया अछि। कोनो पात्रक छोटी टिप्पणी दोसर पात्रक प्रतिष्ठा बदलि सकैत अछि; मजाक अपमानक रूप धऽ सकैत अछि; आ मौन कतेको बेर खुलल प्रतिवादसँ बेसी अर्थवान बनैत अछि। मैथिलीक बोलचालक भीतरक एहि सूक्ष्म भिन्नताक उपयोग प्रभासक कथा-कौशलकेँ औपचारिक साहित्यिक वाक्यसँ पृथक पहचान दैत अछि।

९. कथा-समय, स्मृति आ दृश्य-रचना

कथा-समयक प्रयोग केवल घटना कखन घटल, एहि प्रश्नक उत्तर नहि अछि। किछु कथामे बरखा, साँझ, दिनचर्या वा कार्यालयी दिनक क्रम पात्रक मनोदशा नियन्त्रित करैत अछि। 'सूर्यास्त'क साँझ, 'दिनचर्या'क पुनरावृत्ति आ 'एकालाप'क भीतरी समयमे एकटा सामान्य सूत्र अछि—बाहरी समय एक रफ्तारसँ बहैत अछि, मुदा व्यक्ति ओकरा अलग-अलग गतिक अनुभव करैत अछि। एहि कारण कथानकक धीमापन कतहु समुचित कलात्मक विकल्प अछि, कतहु प्रसंगक विस्तारक आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि।

स्मृति प्रभासक कथामे विश्वसनीय अभिलेख मात्र नहि। अपन अतीत याद करैत व्यक्ति बहुत बेर वर्तमानक तर्क गढ़ैत अछि। पिता-पुत्रक सम्बन्ध, गामक प्रतिष्ठा, पुरान परिचय आ सामाजिक अपेक्षा स्मृतिमे पुनर्गठित होइत अछि। 'पिता', 'पुरान चरित्रक नव कथा' आ 'अनचिहार अप्पन'क संग पढ़लासँ देखाइत अछि जे स्मृति अपन आपमे संघर्षक स्थल बनि सकैत अछि। जे लोकक लेल स्वर्णिम अतीत अछि, दोसरक लेल ओही अतीत दमन वा वंचनाक अनुभव सेहो भऽ सकैत अछि।

गाम आ नगरक दृश्य-संयोजनमे कथाकार अनेक बेर तेज रेखा नहि खींचैत छथि। गाममे शहरक शिक्षा, नौकरी आ कार्यालयक प्रतिष्ठा प्रवेश करैत अछि; शहरमे गामक लोकसंबन्ध, परिचय आ परम्परागत मान-अपमान सक्रिय रहैत अछि। ई आन्तरप्रवेश आधुनिक मिथिलाक परिवर्तनक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि। कथाकारक सामाजिक भूगोल स्थिर नक्शा नहि, बल्कि निरन्तर चलैत लोक, सूचना, अवसर आ परस्पर-निर्भरता सँ बनल अछि।

१०. स्त्री-पात्र, परिवार आ दृष्टिक सीमा

'सुभद्रा-हरण', 'युद्ध-विराम', 'पिता', 'दुख' आदि रचनामे परिवारक संरचना आ विवाह-सम्बन्धक प्रसंग स्त्रीक सामाजिक स्थितिपर प्रश्न उठयबाक अवसर दैत अछि। एहिठाम दू स्तर फराक देखबाक चाही: पात्रक संसारमे स्त्रीक स्थिति कोन अछि, आ कथावाचक स्वयं ओहि स्थितिकेँ कोन निगाहसँ वर्णित करैत अछि। पुरुष-पात्रक व्याकुलता सदिखन सम्पूर्ण सामाजिक सत्यक पर्याय नहि होइत। स्त्रीक मौनकेँ सहमति मानि लेब अथवा केवल पुरुष-अनुभवक पूरक बना देब आलोचनाक दृष्टिसँ अस्वीकार्य हएत।

प्रभासक कथा-संसार बहुत बेर स्त्रीकेँ परिवारक मर्यादा, पीढ़ीक सम्मान आ सामाजिक निर्णयक बीच रखैत अछि। ई व्यवस्था कथा-वस्तुक यथार्थ सेहो अछि, आ कतहु कथनक दृष्टिक सीमा सेहो बनि सकैत अछि। स्त्रीक अपन इच्छा, असहमति, श्रम आ निर्बन्ध अनुभवकेँ कतबा विस्तार भेटैत अछि—एहि प्रश्नसँ संग्रहक पुनर्पाठ अधिक समृद्ध होइत अछि। कथाकारक उपलब्धिकेँ मान्यता देबाक अर्थ ई नहि जे प्रत्येक कथा समकालीन लैंगिक न्यायबोधक सम्पूर्ण कसौटी पहिनेहिसँ पूरा करैत अछि।

एतय मूल्यांकनक सन्तुलन आवश्यक अछि। कोनो पात्रकेँ सामाजिक बाधामे राखब स्वयं लेखकक समर्थन नहि, मुदा कथन-व्यवस्थामे ओकर विकल्प आ भाषणक अवसर कतेक अछि, ई जाँच उचित अछि। एहि दृष्टिसँ ‘कथा-प्रभास’ ऐतिहासिक दस्तावेज बनि रहबाक बदला समकालीन पाठकक आलोचनात्मक प्रश्नसँ पुनः सक्रिय होइत अछि।

११. वर्ग, जाति, पेशा आ स्थानीय सार्वजनिकता

कथा-संग्रहक सामाजिक संसारकेँ एकटा अविभाजित ‘मैथिल समाज’ कहि देब समीक्षात्मक गलती हएत। गामक भीतर संसाधन, पेशा, प्रतिष्ठा आ बोलबाक अधिकारक अन्तर अछि। ‘मलाहक टोल’क शीर्षक अपन रूपेँ पेशागत समुदाय आ स्थानिक विभाजन दिस ध्यान दैत अछि; ‘अरगनी’क घरेलू अभाव आ ‘ढेप’क सामाजिक मूल्यांकन अलग-अलग स्तरपर आर्थिक-सामाजिक दूरी उजागर करैत अछि। एहि कथासभकेँ संग पढ़लासँ लोकजीवनक रोमानी छवि टूटैत अछि।

जाति वा वर्गक प्रश्नपर पाठकेँ तथ्य, कथन-स्वर आ संकेतमे भेद करबाक चाही। कोनो टोल अथवा पेशाक नाम आएब मात्रसँ कथाकारक दृष्टिक सम्पूर्ण राजनीतिक परिणाम सिद्ध नहि होइत। तथापि एहि नामक उपस्थितिसँ इहो स्पष्ट अछि जे कथाकारक गाम केवल भद्रलोकक बैठक नहि। श्रमजीवी समुदाय, कम साधनसँ जूझैत घर आ सार्वजनिक व्यवहारमे हाशियापर ठाढ़ व्यक्ति कथाक दृष्टि-क्षेत्रमे आबि रहल छथि। एहि विस्तारक मूल्य कथाक कला आ सामाजिक न्याय—दुनू कसौटीपर परखल जा सकैत अछि।

लोकमतक भूमिकापर सेहो ध्यान जरूरी अछि। कथामे गप-सप, पंचायत-सदृश विचार, घर-दुआरक चर्चा, नौकरीक समाचार अथवा विवाहक प्रस्ताव लोकक आचरण नियन्त्रित करैत अछि। ई स्थानीय सार्वजनिकता कतेको बेर लिखित नियमसँ बेसी प्रभावशाली अछि। व्यक्तिक

निजी निर्णयकेँ सामाजिक निर्णयमे बदलि देबाक क्षमता एकरे लग अछि। प्रभासक व्यंग्य एहि विसंगतिकेँ रेखांकित करैत अछि जे लोक सामूहिक रूपसँ नैतिकता घोषित करैत छथि, मुदा व्यवहारमे हित, सम्बन्ध आ अवसरक हिसाब राखैत छथि।

१२. हास्य-व्यंग्यक नैतिक कार्य

प्रभासक व्यंग्य प्रायः करुणासँ अलग नहि अछि। पात्रक विचित्र आचरण पर हँसी आबैत अछि, मुदा थोड़ेक बाद ओहि आचरणक पाछाँ सामाजिक भय वा असुरक्षाक बोध होइत अछि। 'गिरगिट', 'धमकी', 'क्लान्त' आ कतेको संवादप्रधान कथामे व्यंग्य एहि दुहरी गति सँ काम करैत अछि। कोनो पात्रक कथन ओकर घोषित आदर्शक विरुद्ध खड़ा भऽ जाइत अछि। कथाकार प्रत्यक्ष उपदेशसँ अधिक परिस्थिति आ भाषिक विडम्बनाक सहारा लैत छथि।

व्यंग्यक सीमा सेहो अछि। पाठक जखन पात्रक उपहासक दर्शक मात्र बनि जाइत छथि, तखन सामाजिक कारण ओझर भऽ सकैत अछि। मुदा प्रभासक सफल प्रसंगमे हँसी उलटि पाठकक अपना पर आबि पड़ैत अछि: जिनका हम चतुर, व्यवहारकुशल अथवा 'सामान्य' मानैत छी, हुनकर व्यवहारमे हमरो समाजक दोहरापन चिन्हाइत अछि। एहन आत्मप्रतिबिम्बी व्यंग्य कथा केँ तात्कालिक चुटकुलासँ उठाकऽ साहित्यिक मूल्य दैत अछि।

१३. भाषा : मैथिलीक सामाजिक स्वर आ कलात्मक भंगिमा

'कथा-प्रभास'क सबसँ ठोस उपलब्धि कथात्मक मैथिली-भाषाक बहुरंगी प्रयोग अछि। वाक्यमे लोकबोलीक सहजता, संवादमे प्रतिष्ठा-सूचक अन्तर, कथनमे आत्मीय संबोधन आ कथानकमे बीच-बीचमे उमड़ैत टिप्पणीक शैली मिलैत अछि। एहि भाषा केँ केवल 'सरल' कहलासँ ओकर संरचनात्मक क्षमता अनदेखी रहि जाएत। कथाकार एकहि भाषामे आत्मालोचना, अनौपचारिक तर्क, कटाक्ष, दया आ अविश्वासक अलग-अलग स्वर सम्भव करैत छथि।

कथाभाषाक एक विशेष गुण मौखिकतालक्षी प्रवाह अछि। पढ़िते अनुभव होइत अछि जे कथावाचक अपन श्रोता केँ बीच-बीचमे सम्बोधित करैत, फेर मूल प्रसंगपर लौटैत अछि। ई कथन-प्रकार मैथिलीक गप्प-परम्परा सँ संवाद करैत अछि; तथापि ई केवल बोलल गपक लिपिबद्ध रूप नहि। कथाकार परिचित अभिव्यक्तिकेँ चयन, क्रम आ पुनरुक्तिक माध्यमेँ

कलात्मक बनबैत छथि। पाठकक निकटता एहि रीति बढ़ैत अछि, यद्यपि कतहु प्रसंग-विस्तार कथाक संकेंद्रण कम करैत अछि।

संग्रहमे देहाती आ शहरी भाषिक रजिस्टरक बीचक आवागमन सेहो अर्थवान अछि। नौकरी, कार्यालय, कागज, निर्णय आ व्यवस्था-सम्बन्धी शब्द जखन पारिवारिक संबोधनक बीच प्रवेश करैत अछि, तखन भाषा समाजक बदलैत ढाँचाक साक्ष्य बनैत अछि। लोकबोलीक आलंकारिक छटा आ कार्यालयी औपचारिकताक टकराव बिनु प्रत्यक्ष राजनीतिक घोषणाक, आधुनिक जीवनक विडम्बना प्रस्तुत करैत अछि। एही बिन्दुपर कथाकारक भाषिक संवेदना समाज-समीक्षामे बदलि जाइत अछि।

१४. प्रतीक, नामकरण आ सांस्कृतिक स्मृति

प्रभासक शीर्षक-निर्माण अपनमे आलोचनात्मक अध्ययनक विषय अछि। ‘गिरगिट’ रूप-परिवर्तन, ‘अरगनी’ घरेलू अवकाश, ‘सूर्यास्त’ क्षय, ‘इन्द्रधनुष’ क्षणभंगुर उजास, ‘बाढ़ि’ असुरक्षित भूगोल आ ‘रक्षक’ संरक्षण-सत्ताक द्वैतक बोध दैत अछि। मुदा प्रतीकक अर्थ एकटा शब्दकोशीय परिभाषामे कैद नहि होइत। कथा जखन ओकर वस्तुगत परिस्थिति, लोकक आचरण आ कथावाचकक प्रतिक्रिया रचैत अछि, तखन प्रतीक जीबैत अर्थ पबैत अछि।

‘सुभद्रा-हरण’, ‘उत्तरकाण्ड’ आ ‘पुरान चरित्रक नव कथा’क नामकरण विशेष रूपसँ सांस्कृतिक स्मृतिक उपयोगक प्रश्न उठबैत अछि। सांस्कृतिक परम्पराक परिचित नाम समकालीन आचरणपर अपेक्षाक दबाव बनबैत अछि। कथाकार एहि अपेक्षाकेँ कहियो सहेजैत, कहियो उलटैत छथि। कथाक अन्तिम आशयकेँ केवल नामक मिथकीय स्रोतसँ निर्धारित करब उचित नहि; कथाक वर्तमान सामाजिक स्थिति आ कथन-स्वर ओहि नामकेँ फेर सँ अर्थ दैत अछि। एहि प्रकार आधुनिक मैथिली कथा परम्पराक भीतर रहिते परम्पराक आलोचना करबाक स्थान बनबैत अछि।

१५. आलोचनात्मक सीमासभ : उपलब्धिक संग असहज प्रश्न

पहिल सीमा कथा-आवाजक विस्तारसँ जुड़ल अछि। मौखिक गप्पक स्वाभाविकता कतेको बेर कथाक ऊर्जा अछि; मुदा किछु प्रसंगमे लगातार टिप्पणी, आत्मस्पष्टीकरण आ पुनरुक्ति कथानकक तीव्रता कम करैत अछि। पात्र अपन क्रियासँ जे अर्थ खोलि सकैत छलाह, ओहि

अर्थपर कथावाचकक अतिरिक्त प्रकाश पड़ला सँ पाठकक स्वतन्त्र निष्कर्ष-निर्माणक अवकाश संकुचित होइत अछि। ई प्रश्न विशेषकर संवादप्रधान कथाक लम्बा प्रसंगसभ पढ़ैत उठैत अछि।

दोसर सीमा सामाजिक दृष्टिक असमान विस्तार अछि। पुरुषक आत्मसंघर्ष, सार्वजनिक व्यवहार आ पारिवारिक प्रतिष्ठा पर कथा गहनता पबैत अछि; मुदा स्त्रीक स्वतन्त्र आत्मकथा, श्रमजीवी पात्रक अन्तःस्वर अथवा संस्थाक अधीन लोकक समग्र अनुभव सभठाम समान गहराइमे नहि उद्घाटित होइत। ई आलोचना संग्रहक ऐतिहासिक उपलब्धिकेँ निष्प्रभावी नहि करैत; वरन् ओकर दृष्टिक सांस्कृतिक स्थान आ तात्कालिक मर्यादा अधिक स्पष्ट करैत अछि।

तेसर प्रश्न यथार्थक प्रतिनिधित्व सँ जुड़ल अछि। तीन दशकक नामकरण रचनाक विकासक सूत्र दैत अछि, मुदा एहिसँ समकालीन मैथिली समाजक पूर्ण प्रतिनिधित्व स्वतः सिद्ध नहि होइत। एकहि कथाकारक चयनित रचनासभमे कोनो अनुभूतिक पुनरावृत्ति आ किछु अनुभवक अनुपस्थिति स्वाभाविक अछि। तेँ ‘कथा-प्रभास’केँ समूचा युगक अनिवार्य प्रतिमान मानबाक बदला विशिष्ट दृष्टिक बहुआयामी साहित्यिक साक्ष्यक रूपमे पढ़ब अधिक युक्तिसंगत हएत।

चौठ सीमा प्रतीकात्मक शीर्षकक बनल अपेक्षासँ उत्पन्न होइत अछि। कोनो शीर्षक विशाल अर्थक आश्वासन दैत अछि, मुदा कथा जखन ओहि सम्भावनाक बराबर शिल्पगत घनत्व नहि दऽ सकैत अछि, तखन पाठकमे अन्तर रहि जाइत अछि। एहि आलोचनाकेँ सर्वत्र लागू करब अनुचित; मुदा कथा-विशेषक मूल्यांकनमे शीर्षक आ संरचनाक परस्पर अनुपात देखब जरूरी अछि।

१६. साहित्येतिहासमे स्थान आ समग्र निर्णय

‘कथा-प्रभास’क साहित्येतिहासिक स्थान ओकर स्वयं घोषित दशकगत व्यापकता तथा मैथिली सामाजिक कथाक भाषिक सम्पन्नतासँ बनैत अछि। ई पोथी कोनो एकटा रीतिक अखण्ड प्रदर्शन नहि; एतय आन्तरिक एकालाप, लोकबोलीक संवाद, पारिवारिक तनाव, मिथकीय नामक पुनर्सन्दर्भीकरण, सामाजिक व्यंग्य आ संस्थागत व्यवहारक कथा सभ एकठाम अछि। ई विविधता प्रभासकेँ एकल विषयक कथाकारक बदला अनुभवक बदलैत केन्द्र पढ़यवला रचनाकार सिद्ध करैत अछि।

प्रभासक कथामे आधुनिकताक रूप बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। आधुनिकता एतय मात्र शहर, विद्यालय वा नौकरीक प्रवेश नहि; ओ मनुष्यक स्वतन्त्र इच्छाक संघर्ष, पुरान सम्बन्धक अस्थिरता, संस्था द्वारा निर्णयक मध्यस्थता आ सामाजिक विश्वासक कमजोर पड़बाक अनुभूति अछि। ‘पिता’ सँ ‘स्थानान्तरण’ धरि अथवा ‘अरगनी’ सँ ‘बाढ़ि’ धरि एकटा रेखा खींचलासँ पारिवारिक आ भौतिक असुरक्षा सार्वजनिक संरचनासँ जुड़ैत देखाइत अछि। एही जोड़कैँ प्रकाशमे अनबाक कारणेँ संग्रहक सामाजिक अर्थ व्यापक बनैत अछि।

कथाकारक परवर्ती कृति ‘प्रभासक कथा’ कैँ साहित्य अकादेमीक मैथिली सम्मान भेटल, ई तथ्य साहित्यिक स्वीकृतिक व्यापक सन्दर्भ दैत अछि; मुदा ओहि सम्मानकैँ ‘कथा-प्रभास’क प्रत्यक्ष पुरस्कार मानब गलत हएत। एहि संकलनक मूल्य ओकर अपन रचना-संरचना, कथाभाषा आ पाठकीय अनुभूतिक आधारपर निश्चित होयबाक चाही। संस्थागत मान्यता ओकर ऐतिहासिक पहचान समझबाक सन्दर्भ अछि, कलात्मक निर्णयक विकल्प नहि।

अन्ततः प्रभासक कथा-लेखनक नैतिक आग्रह समग्र समाजक भलाईबारे घोषणामे नहि, व्यक्ति आ सम्बन्धक छोटे-छोटे क्षणमे नैतिक दुविधा पकड़बामे अछि। लोक जे कहल चाहैत अछि, जे कहि सकैत अछि आ जे कहबाक साहस नहि करैत अछि, एहि तीनुक बीचक दूरी हुनकर कथाक प्रमुख आवेग अछि। सामाजिक परिवर्तनक पटभूमिपर ई दूरी कखनो विनोद, कखनो मौन, कखनो करुणा आ कखनो भयक रूपमे व्यक्त होइत अछि।

निष्कर्ष

‘कथा-प्रभास’कैँ एकहि तरहक ‘गामक कथा’ अथवा ‘मध्यवर्गीय व्यंग्य’ कहि वर्गीकृत करब ओकर साहित्यिक व्यक्तित्वकैँ छोट करब हएत। सातम दशकक वस्तु-केन्द्रित बिम्ब आ पारस्परिक व्यवहार, आठम दशकक परिवार-स्मृति-समुदाय सम्बन्धी कठिन प्रश्न, आ नवम दशकक आत्मकथन, संस्थागत दबाव आ सार्वजनिक संकट—ई तीन आयाम एक दोसरासँ अलग नहि; एकहि परिवर्तित समाजक अनुभवक स्तर अछि। संग्रहक प्रमुख उपलब्धि मैथिलीक जीवित बोलचालकैँ कथाक विचारशील माध्यम बनायब, परिचित जीवनमे अन्तर्विरोधक तीक्ष्ण पहचान करब आ समाजक नैतिक आत्मचित्रकैँ सजग प्रश्नक अधीन रखब अछि।

एकर सीमा—कतहु व्याख्यात्मक विस्तार, कतहु दृष्टिक लैंगिक अथवा सामाजिक असमानता—समीक्षाक अविभाज्य अंश अछि। ताहिसँ महत्त्व कम नहि होइत; बरु पाठककैँ ई बूझबाक

अवसर भेटैत अछि जे आधुनिक मैथिली कथा कोना अपन कालक दबाव ग्रहण करैत, कतहु ओकर प्रतिरोध करैत आ कतहु ओकरे मूल्य-धारणाकेँ अपने भीतर लऽ लैत अछि। एहि द्वन्द्वक कारणेँ ‘कथा-प्रभास’ एक बेर पढ़ि समाप्त कऽ देबाक संकलन नहि, पुनर्पाठक अपेक्षा रखनिहार महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृति अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

चौधरी, प्रभास कुमार। कथा-प्रभास : तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा। पटना : मैथिली अकादमी, १९८८।

झा, देवकान्त। ‘प्रकाशकीय’। कथा-प्रभास : तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा। पटना : मैथिली अकादमी, १९८८।

ओझा, फणीन्द्र नाथ। ‘प्रस्ताविकी’। कथा-प्रभास : तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा। पटना : मैथिली अकादमी, १९८८।

झा, वासुकीनाथ (सम्पा.)। मैथिली कथाक विकास। नई दिल्ली : साहित्य अकादेमी, पुनर्मुद्रण २००९।

साहित्य अकादेमी। अकादेमी सम्मान-सूची : मैथिली (प्रभास कुमार चौधरी, प्रभासक कथा, १९९०)। नई दिल्ली : साहित्य अकादेमी।

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान संस्थान, जापान। कथा-प्रभास : तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा—पुस्तकालयीय ग्रन्थसूची, सीआइएनआइ बुक्स, अभिलेख BA46385814।

भूख, स्मृति, सत्ता आ प्रतिरोधक कथा-परिदृश्य

नित नवल प्रभास कुमार चौधरी

पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

प्रभास कुमार चौधरीक कथा-संसारमे घरक भीतरक दाम्पत्य-सत्ता, बनारसक आरम्भ, सामन्ती हवेलीक विघटन, लोककथाक पोखरि आ भूखसँ जूझैत गाम-समाज एक संग देखाइत अछि। 'नित नवल प्रभास कुमार चौधरी'मे गजेन्द्र ठाकुर हुनकर पाँच उपन्यास आ दू कथासंग्रहक अध्यायवार निकट-पाठ प्रस्तुत करैत छथि।

प्रत्येक समीक्षा पात्र, कथाविन्यास, संवाद आ भाषाक संग पूर्ववर्ती आलोचनासँ संवाद करैत यथार्थवादक उपलब्धि आ कलात्मक सीमा दुनूकेँ परखैत अछि। एहि पाठसँ स्पष्ट होइत अछि जे अहंक आत्मपराजय, मिथ्या महिमामण्डन, सामन्ती गौरवक पतन आ नवचेतनाक आरम्भ मैथिली गद्यमे एकहि सामाजिक प्रश्नक भिन्न रूप थिक।

खण्ड एक · पाँच उपन्यास

१. 'अभिशप्त'
२. 'युगपुरुष'
३. 'हमरा लग रहब?'
४. 'नवारम्भ'
५. 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी?'

खण्ड दू · दू कथासंग्रह

६. 'दिदवल'
७. 'कथा-प्रभास'

विदेह वेबसाइट
www.videha.co.in

विदेह ई-जर्नल (GitHub)
videha-ejournal.github.io/videha

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

विदेह · ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७ · सर्वाधिकार सुरक्षित